आपके प्रश्न

शंकराचार्यांश ब्रह्मानंद अक्षयरुद्र

गं गणपतये नमः

हे विद्या की देवी भारती! हे विश्व के प्रत्येक मनुष्यों द्वारा परम

पूजित पराम्बा! हे महाशारदे आपको नमस्कार

बार बार नमस्कार

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः।

गुरु साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः।।

आपके प्रश्न एक अमृत रसायन

पराशक्ति, गुरुवर श्री नीलकंठ प्रभु, श्रीगजानन, श्रीकृष्ण, इनके सभी स्वरूप, अंश, कलाएं, सभी अपरोक्ष ब्रह्मनिष्ठों, परोक्षज्ञानियों, भक्तों,विद्वानों, जितेन्द्रिय तपोनिष्ठों, संध्यापूत व शम दम युक्त ब्राह्मणों व वेदपाठी व अग्निहोत्रयुक्त विप्रों आप सभी को नमस्कार बार बार नमस्कार;जिनके आशीष, दुआओं, स्नेह और प्रेम से आज यह 19 वीं पुस्तक (आपके प्रश्न) आपके कर कमलों में है इस पुस्तक में ऐसे ऐसे प्रश्न हैं जो अक्सर आपके मस्तिष्क में भी परिभ्रमण करते रहते है और ये प्रश्न आप सभी के द्वारा पूछे गए हैं जिनके जवाब के लिए अनेक ग्रंथों को खोजा और उनको सरलीकृत रूप देकर आपके समक्ष प्रस्तुत किया। तथा कुछ प्रश्नों के उत्तर समय के अभाव के कारण अति संक्षिप्त रूप से दिया गया पर आशा है कि आप उन सभी से संतुष्ट होकर विश्रान्ति को प्राप्त कर इस अक्षयरुद्र को भी अपने निर्मल हृदय से आशीर्वाद देकर धन्य करोगे। इस कृति में मात्र घर परिवार के ही प्रश्न नहीं अपितु सभी आश्रमों व सभी वर्णों से संबंधित भक्तों के अद्‌भुत और अद्वितीय प्रश्न भी शामिल किये गए हैं। इस कृति की महत्वपूर्ण बात एक और है वह यह कि इसमें अधिकांशतः प्रश्न कर्ताओं के नाम भी प्रकाशित किये गए हैं। आगे क्या कहें बस आपका प्रेम यूँ ही मिलता रहे। और इसी के साथ परब्रह्म विश्वनाथशिव स्तोत्रम्, सांझ ढलेगी तेरी भी, हे वीर ब्रह्मचारी आदि भी लगभग एक–दो पक्षों में आपके सम्मुख होंगी अतः समयानुसार उनको भी अपना भरपूर आशीष दें। इन सभी नवीन छः पुस्तकों के प्रकाशन के लिए जिन जिन गुप्त भक्तों ने अपनी धन संपदा का भी सहयोग किया उन सभी का हृदय से आभार ; इतने कम समय में इतना बड़ा कार्य मात्र आपके ही सपोर्ट का प्रताप है अत यह अंशभूतशिव पुनः आपके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता है। अधिकांश भक्तों ने आपके प्रश्न नामक इस पुस्तक को एक अमृत रसायन, विश्रांत औषधि तथा धन्वंतरी कुंभ कलश की संज्ञा दी है जिसके लिए उन सभी का पुनः आभार।

आपका शुभ चिन्तक
शंकराचार्यांश ब्रह्मानंद अक्षयरुद्र
अमृत सिद्धि योग
(23 अगस्त 2024)

-- परोपकाराय सतां विभूतय: ---
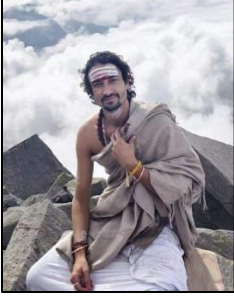
सज्जन लोगों की सारी विद्याएं , ज्ञान-विज्ञान सकल चेष्टाएं आत्म-परमात्मबोध एवं परोपकार के लिए होती हैं। जैसा कि सुभाषित है:-

दुर्जन: सज्जनो भूयात् सज्जन: शांतिमाप्नुयात्।
शान्तो मुच्येत् बन्धेभ्यो मुक्त: चान्यान्विमोच्येत्॥

दुर्जन सज्जन बनें, सज्जन शांतजन बनें। शांतजन बंधनों से मुक्त हों और मुक्त अन्य जनों को मुक्त करें।

परहितभाव महापुरुषों संतजनो भगवज्जनों के कृत्यों से चरितार्थ होता है।

यही परोपकार की भावना भक्तराज "श्रीशंकराचार्यशिब्रह्मानंद अक्षयरुद्र जी" द्वारा विरचित एवम् संकलित ग्रंथ में दिखाई देती है। सांसारिक सुख हो या पारलौकिक जिज्ञासा, सर्वविध उत्कर्ष की चर्चा प्रामाणिक पौराणिक शास्त्रीय सूत्रों के प्रतिपादन के साथ इस दुर्लभ दिव्य ग्रंथ में प्रश्न उत्तर माध्यम से की गई है। जिसमें साधारण भोगलिप्सु मनुष्यों से लेकर भगवत्प्राप्ति के लिए प्रयासरत साधकों के लिए भी बहुत आवश्यक सूत्र, स्तोत्र, ज्ञान - विज्ञान 126 प्रश्नों और उनके उत्तरों के माध्यम से उपलब्ध कराया गया है। इस ग्रंथ के निर्माण की एक ही भावना प्रतीत होती है जो स्वयं भक्तराज प्रह्लाद जी की प्रार्थना से मिलती जुलती है:-

स्वस्त्यस्तु विश्वस्य खलः प्रसीदतां ध्यायन्तु भूतानि शिवं मिथो धिया।
मनश्च भद्रं भजतादधोक्षजे आवेश्यतां नो मतिरप्यहैतुकी॥ ५.१८.९

"पूरे ब्रह्मांड में सौभाग्य हो और सभी ईर्ष्यालु व्यक्ति शांत हो जाएं। भक्ति-योग का अभ्यास करके सभी जीव शांत हो जाएं, क्योंकि भक्ति सेवा स्वीकार करने से वे एक-दूसरे के कल्याण के बारे में सोचेंगे। इसलिए आइए हम सभी परम दिव्य भगवान की सेवा में लगें और हमेशा उनके विचारों में लीन रहें।"

लेखक की परहितभावना, भक्ति, ज्ञान -विज्ञान, मेधा और प्रज्ञा शक्ति से युक्त इस प्रामाणिक-शास्त्रीयसंकलनाधारित ग्रंथ को पढ़कर निश्चय ही असंख्य साधक अपना लोक

परलोक प्रशस्त करेंगे। इस दिव्य रचना के लिए हमारी ओर से बहुत बहुत साधुवाद एवम् मंगल कामनाएं।

अक्षयरुद्र-अंशभूतशिवस्य एकोनविंशतितमाकृत्तिरेषा । एवमेव धर्माध्यात्मयो: रक्षकसंवर्धकरूपेण महान् - पथप्रदर्शको सदैव भूयात् इति ईश्वरचरणारविंदयो: प्रार्थना कामना चास्ति।।

।। जय श्री कृष्ण ।। महादेव हर ।।

- जगदीश कृष्ण शास्त्री
- हिमाचल प्रदेश

अनुक्रमणिका

प्रश्न 1

कर्म कैसा करें?

उत्तर– कर्म ऐसा करो कि यमदेव हर दिन सोचें कि – काश मैं इस पर नित्य पुष्प वर्षा करता रहूँ। और त्रिदेव सोचें कि काश अगले कल्प में यह अक्षयरुद्र मेरा ही पुत्र बनें और इन्द्र,वरुण,अग्नि व कुबेर आदि सोचे कि–यार ये कौन है कहीं ये सदाशिव परब्रह्म का अवतार तो नहीं अथवा श्रीहरि ही तो इस रूप में लीला तो नहीं कर रहे जिसने ऐसा संकल्प ले डाला कि स्वर्ग के वे ही देवता मेरे सम्मुख आवें जो अखंड ब्रह्मचर्य का पालन कर रहे हैं अथवा मेरे सामने न आऐ अथवा कुछ देना हो तो दूर से ही दे दें।

प्रश्न 2

ईश्वर के दर्शन किसको शीघ्र होते हैं ?
और किनको कम से कम दो तीन पुरश्चरण पर ही हो सकते हैं ?

उत्तर– जिसका अंतःकरण शुद्ध है उसे ईश्वर के अनुष्ठान से ही दर्शन हो जाते हैं पुरश्चरण तक पहुंचने से पहले ही वह प्रभु का साक्षात्कार कर लेता है। पर जिसने इस जन्म में चोरी, लूट, शोषण,बलात्कार (क्वांरी बालिका या नारी का बलात् उपभोग), विवाहित होकर भी मित्र या किसी गरीब नारी अथवा धन या कीर्ति का लोभ देकर किसी की पत्नी से रतिभोग (परस्त्रीगमन) या परायी नारी से प्रेम करके उसके शरीर का शोषण किया हो, मदिरापान, झूठी गवाही, स्वार्थ के लिए भेदनीति, नापतौल में गड़बड़ी, शासन से नौकरी द्वारा धन मिलने पर भी जनकल्याणकारी योजनाओं का धन हड़पा हो अथवा संत ब्राह्मण का अपमान किया हो या किसी के विवाह में अवरोध उत्पन्न किया हो अथवा किसी निर्दोष की निन्दा की हो अथवा पशुओं को मारकर जिह्वा के स्वाद के लिए उसे खाया हो, शिव या हरि के प्रसाद को न खाया हो या यह कह दिया हो कि मैं अभी व्यस्त हूँ बाद में खाऊँगा या फेंक दिया हो; जिसने मंदिर में पड़े शिव निर्माल्य को उलांघा हो या जिसने शैव होकर हरि की निन्दा की हो या वैष्णव होकर जो शिव, महेश या रुद्र का अपमान किया हो या भेद किया हो, गुरु या शिक्षक की पत्नी का उपभोग करने वाले महापातकी हैं एक देवता ने भी ऐसा पाप किया था तब उसे अनेक वर्ष तक जप तप व्रत–उपवास करना पड़ा तब शुद्धि हुई, जिसने सामान में मिलावट की हो, चप्पल, वस्त्र या अन्न अथवा पुष्प भी चुराएं हो, शास्त्र की चोरी की हो, द्विज होकर भी संध्यापूत न हो न ही शिखा धारण की हो, जो परायी स्त्रियों के स्तन, वक्षःस्थल, कटि, नाभि व जंघा या नितम्ब आदि देखकर सुख मानता है या निर्वस्त्र नारियों के चलचित्र देखता हो, जो पति अपनी पत्नी की कामेच्छा होने पर भी उसे तृप्त नहीं करता वह पति भी पापी ही है पर ऋतुकाल, पर्व और व्रत–उपवास पर, तीर्थ स्थल पर यात्रा के दिनों में उसकी कामना सिद्ध न करें।

...... या गरुडपुराण में व उमा संहिता में भी अनेक घोर पाप बताये हैं अथवा हमारी पुस्तक दुष्कर्म और नरक की यातनाएं में भी पाप कृत्य की सूची देख सकते हो। ऐसे पाप करने वाले महापापी को शीघ्र दर्शन नहीं होते । वे यदि जप तप व्रत–उपवास करें तो भी पहले तो पाप नष्ट होते हैं तदोपरान्त मंत्र सिद्ध होता है फिर तीसरे पुरश्चरण से ही ऐसे लोगों को दर्शन होते हैं। परायी नारी में अपनी बहन या माँ को निहारे जो परायी नारी को उपभोग का खिलौना समझता है या पत्नि को पैर की जूती या नौकरानी वह पति भी इस भाव से पाप ही बढ़ाता है। और जो नारी पति की निन्दा करती है या पति को छोड़कर पराये पुरुष से मुँह काला कर चुकी वह भी नरक के बीज बो चुकी। अतः वह भी साधना (स्तोत्र या पंचाक्षरी) से शुद्ध हो सकती है। पर जिस नर नारी ने गुरुदीक्षा के बाद पाप किया हो उसका गुरु भी उन पापी नर नारी के पापों का दशांश दण्ड भोगने के लिए बार बार पुनर्जन्म लेता है इसी कारण संन्यासी को दीक्षा देने का विधान नही।

प्रश्न–3

हरे नाम महामंत्र के बारे मैं कुछ बताने की कृपा करें।
–अमित जांगिद

उत्तर–

हर (प्रत्येक) नाम अति शक्तिशाली है।
16 बार उच्चारण से 16 गुना फल बड़ जाता है।
नाम कोई भी हो अतुलनीय प्रभाव डालता है।
पर सद्गुरु के द्वारा प्रदान अ कार भी मोक्ष और भोग दाता है।
अतः दीक्षा में मिले हर अक्षर को अतुलनीय फलदाता समझा जाये।

प्रश्न–4

क्या हर कार्य ईश्वर की मर्जी से होता है ?

उत्तर – बिल्कुल नहीं।

इस लोक में जो जैसा पाप पुण्य करता है उसका दण्ड या फल वही भोगता है ईश्वर न तो जबरदस्ती पाप कराता है न ही जबरदस्ती पुण्य। ईश्वर ने अच्छा बुरा शास्त्र में ऋषियों द्वारा लिखवा दिया । जो अच्छा करेगा वह कालान्तर में अच्छा फल भी पाता है जो शास्त्र विरुद्ध

कोई काम करता है उसे दण्ड मात्र का विधान है। पाप कर्म (बलात्कार, चोरी , स्वगौत्री से संसर्ग आदि) को हरि इच्छा मानना भी अविद्या है।

हर कार्य को ईश्वर की मर्जी मानना महामूर्खता है ।

शास्त्र की आज्ञा का उल्लंघन करके जो कर्म किया जाये उसे ईश्वर की मर्जी मानना भी अज्ञान है।

1. संध्याहीन ब्राह्मण को कर्मकांड के लिए बुलाना शास्त्र की आज्ञा नहीं पर आप या हम बुलाते हैं तो इसमें ईश्वर की मर्जी मानना मूर्खता है।

2. स्वगोत्री या मामा के गोत्र की स्त्री से विवाह करके उससे संसर्ग करना शास्त्र विरुद्ध है पर मूर्ख लोग उसे ईश्वर की मर्जी माने तो यह अनुचित और पाप है। ऐसी कन्या बहन होती है पर मूर्ख लोग उसे भाग्य का लेख समझकर पाप ही करते है।

3. ऐसे ही हर ऐसी क्रिया को ईश्वर की मर्जी मानना स्वच्छंदता है मात्र है जिसमें शास्त्र का आदेश न हो।

4. पत्नि के चक्कर में या स्वयं की अज्ञानता के कारण बूढ़े माता पिता को वृद्धाश्रम में भेजना या सेवा न करके स्वच्छंद कार्य करके ईश्वर की मरजी मानना पाप है।

5. परायी नार से संबंध स्थापित करके उसे ईश्वर की मर्जी मानना भी पाप है न कि ईश्वर की मर्जी।

6. 30–35 की आयु में गृहस्थ आश्रम का मनुष्य यदि पत्नि और संतान का भरण पोषण न करके उनकी केयरिंग न करके संन्यास ले ले तो भी शास्त्र विरुद्ध है इसे ईश्वर का मर्जी न मानी जाये।

7. संन्यास का संकल्प लेकर किसी स्त्री से संतान पैदा करके हरि इच्छा मानना भी गलत है शास्त्र ने संन्यासी के जो कर्तव्य बताये हैं वही ईश्वर की मर्जी है मनगढ़ंत काम करके उन अनुचित कामों को ईश्वर की इच्छा मानना अनुचित हो।

8. 50 –55 वर्ष के होकर भी भजन पूजन के लिए प्रयास न कर पुनः नौकरी धंधा में लग जाना आसक्ति है न कि ईश्वर की इच्छा।

9. मित्र या गुरु की पत्नि से संतान उत्पन्न करना हरि इच्छा नहीं जो मूर्ख ऐसा करके हरि इच्छा मानता है वह पापी ही है।

10. शास्त्र विधान है कि शिष्य गुरु के चरण स्पर्श करे और पत्नि पति के। पर आधुनिक मूर्ख नारियाँ समभाव कहकर पति से ही चरण स्पर्श करवाने पर तुली हैं वे कहती हैं कि पति और पत्नी दोनो समान है ।

11. विवाहित स्त्री घर को संभाले और विवाहित पुरुष धनार्जन करे यही शास्त्र आज्ञा है। केवल अति मजबूरी में (पति न हो या पति बेरोजगार हो) तो ही स्त्री मजबूरी में धन कमाये।

पर पति कमाता हो तो उसे घर ही संभालना चाहिए न कि घर छोड़कर इधर उधर की सेवा करे। पहला कर्तव्य ससुराल ही है दूसरा समयानुसार ही।

जब श्रीराजेन्द्र दास महाराज जैसे भी विवाहित स्त्रियों को साप्ताहिक कथा का वाचन करने से मना करते हैं तो ये स्त्रियाँ क्यों संत अवहेलना करती हैं नैष्ठिकब्रह्मचर्य धारी या एकाकी (मुमुक्षु /जितेन्द्रिय एकाकीजन) नर नारी को तो कोई भी कर्तव्य और अकर्तव्य नहीं। ऐसा शास्त्र आदेश है।

अतः मनगढ़ंत कार्य को ईश्वर की इच्छा न मानें।

प्रश्न 5

हे अक्षयरुद्र! ऐसी इच्छा हो रही है कि मेरे बैंक खाते में 1 करोड़ रुपये हो तथा एक ऐसा अनुष्ठान बतायें जिससे परम सौन्दर्य से युक्त नारी मुझे पत्नी रूप में प्राप्त हो ?

उत्तर – आप कामचलाऊ धन तो दैनिक पुरुषार्थ से पा ही लोगे हमारे अनुसार आपको एक करोड़ पाना ही है तो एक करोड़ पंचाक्षरी मंत्र का जप करो वह भी अखंड ब्रह्मचर्य पूर्वक ताकि इस संख्या से आपको ब्रह्मदेव के समान पद मिल जाए। धन के अति कलेक्शन से होगा क्या ? मरने पर सब कुछ छोड़कर स्वाहा हो जाओगे और अगले जन्म में फिर से अ आ इ ई ....पढ़ोगे अतः समझ जाओ अक्षयरुद्र की बात। फालतू बातों में कुछ नहीं रखा।

हर माह 30 हजार बचाकर 15 वर्ष में यह भवन और गाड़ी खरीदकर मर जाना मूर्खता है। अतः हरि को भजो।

और आप अनुष्ठान स्त्री के लिए न करके हरि या शिव दर्शन के लिए करो। दर्शन के बाद आप देवी स्वधा का स्तोत्र 10,000 बार जपना इससे आपको सीता या गौरी के समान पतिव्रता मिल जायेगी व मनमोहनी रूप से युक्त भी। वैसे अनुष्ठान से वैराग्य हो गया तो बात अलग है।

प्रश्न 6

किस पर अमृत की वर्षा होती है?

उत्तर– जिसकी दृष्टि व चिंतन में सदा भगवान के चरण रहते हैं जिसके अंतःकरण में सदा भक्ति, भक्त और भगवान रहते हैं। जो सदा शुद्धता में ही रमण करता है। उन पर ही अमृत की वर्षा होती है पर जिनकी दृष्टि में गंदी फिल्में नृत्य करती हैं जो परनार के अंगो पर फोकस करता है उन पर तो दुखों की ही वर्षा होती है।

न कि अमृत की वर्षा।

प्रश्न 7

एक साधक व भगवति के दर्शन के लिए परम इच्छुक व परम भक्त का प्रश्न–

हे अक्षयरुद्र अंशभूतशिव जी ! आपको सलकनपुर में श्रीशिव अनुग्रह प्राप्त हुआ और वह कथा पढ़कर उस दृश्य की कल्पना से ही मैं भाव विभोर हो रहा हूँ अब मैने भी मन बना लिया है कि इस जगत में एकमात्र परमात्मा ही सब कुछ है मेरी इष्ट पराम्बा हैं मैं उनके दर्शन न करने तक चैन से नहीं बैठूंगा फिर भले ही कुछ भी क्यों न करना पड़े। मुझे उपदेश करें कि मैं क्या करूं जिससे मुझे भगवती का साक्षात्कार हो सके।

(नोट – आपके प्रश्न नामक इस पुस्तक में इन गुप्त भक्त का नाम शो नहीं किया क्योंकि वह शो करना मर्यादा के बाहर था और नाम शो से साधना पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़कर ही रहता है हमारी सलकनपुर की घटना के प्रसार से हम भी जानते हैं कि संभव है पुण्य फल क्षीण हो रहे हो पर हम भक्तों के उत्साह के लिए यह भी कर सकते हैं। इस कारण वह घटना कभी कभार प्रेरणा के लिए बताना पडता है खैर ....अब उत्तर श्रवण करें)

उत्तर – भगवती की पूजा कब और कैसे की जाती है यह हमने देवी रहस्य महाग्रंथ में लिखा है। सुरथ और वैश्य ने देवी सूक्त के जप द्वारा ही देवी के दर्शन तीन वर्ष में कर लिये थे। कोई कोई ह्रीं बीज के जप से भी उनके दर्शन कर लेता है ।

पर साधना की सिद्धि के लिए पहाड़ के एकांतिक मंदिर में जप या सिद्धपीठ अथवा शक्तिपीठ का आश्रय लेना होगा वह भी अखंड ब्रह्मचर्य पूर्वक। श्रृद्धा, स्थान, निश्चित संख्यक जप और ब्रह्मचर्य ये चारों ही देवी के दर्शन कराने में सक्षम हैं। पर आप किसी महान जितेन्द्रिय शाक्त साधक (न कि वैष्णव या अन्य) जिसने अपना जीवन देवी पराम्बा को ही अर्पित कर दिया हो और वह छल कपट से मुक्त हो उनकी आज्ञा ले उनसे ही स्तोत्र या भुवनेश्वर बनिता बीज (माया बीज अर्थात शक्तिबीज ह्रीं) की दीक्षा लें। देवी षोडशी या ललिता पराम्बा के स्तोत्र से भी आप देवी ललिता के साक्षात्कार कर सकते हो। पर हमारे अनुसार पूर्णतः समर्पण और

पूर्णतः एकाग्रचित्त होकर ही साधना करना होगा। यदि आप (या अन्य पाठक) गृहस्थ है तो वह सरेंडर न करें मध्यकाल में धनार्जन व परिवार की केयरिंग भी करे लेकिन नैष्ठिक ब्रह्मचर्य से संपन्न या सुरथ वैश्य सा भयंकर पीड़ित भी सरेंडर करके सिद्धपीठ पर चला जाये।

प्रश्न 8

हे अक्षयरुद्र! किसका भाग्य अच्छा है और किसका भविष्य अच्छा है ?

उत्तर– जिसके प्रारब्ध में अनन्य भक्ति ,संतोष, शम व दम (जितेन्द्रियता), ईश्वर के दर्शन अथवा स्वयं का परमबोध (अपरोक्ष ज्ञान) हो उसका भाग्य अच्छा है। अथवा जिसे महान पुरुषार्थ से यह सब मिलेगा उसका भविष्य अच्छा है। जो घोर जप तप से गंगा जैसा पद पाले या रुद्र विष्णु जैसे पद को प्राप्त कर ले वह भी परम भविष्य से युक्त माना जाये।

पर जो लोग मात्र अभी 25–26 के हैं और एक सुंदर सी चमड़ी वाली स्त्री तथा मासिक 60,000 से मासिक 2 लाख के सपने देख रहे हैं और यदि प्रारब्ध या मेहनत से मिल भी जायें तो उनके पारिवारिक जीवन में सुख की संभावना अवश्य है पर गारंटी नहीं कि सुख मिले क्योंकि वे धन से भौतिक ऐश्वर्य अवश्य पा लेंगे पर पत्नी का प्रेम या मानसिक शान्ति मिलेगी ही यह नही कह सकते। पुराणों व उपनिषदों के अनुसार अतुलनीय धनाढ्य होने पर मनुष्य का अंतःकरण 24 घंटा ही उस धन का चिन्तन करता है कहाँ खर्च करूँ कैसे करूँ कौन पात्र है या भूमि का क्रय करूँ या 10 करोड़ का बंगला बनाऊँ आदि आदि से तनाव में पड़ा ही रहता है। और कहीं चोरी न हो जाये लूट न हो जाये या मैं अगले एक माह में मर न जाऊँ आदि आदि चिन्ताएं उस अति धनाढ्य को घेरे रहती हैं पर हाँ लाभ इतना अवश्य है कि

वह मनचाहा आहार विहार कर सकता है और मनचाहे उतने पदार्थों का संग्रह कर सकता है अर्थात सुख और सुविधा की अधिकांश चीजें अपने बंगले में भर भरकर अर्थात स्पेशल कलेक्शन करके ठूस सकता है और लोगों को दिखा सकता है कि – देखो मेरे पास हर चीज है जो सुखी जीवन के लिए अनिवार्य है। बांकी वह उन सबसे आत्मिक सुख नहीं पा सकता और सकाम भाव से दान करता रहे तो भी मात्र पुण्य पाता है जिसका फल कुछ मन्वन्तर तक भोग होता है फिर भोग के बाद

पुनः वैसा ही होता है जैसा पहले था। और उस धन से लोभ दिखाकर यदि वह परायी नार को भोगता है तब तो उसको स्वर्ग भी नहीं मिलता और पाप से कुत्ता बिल्ली तोता मैना बंदर लोमड़ी आदि बनकर त्रिविध ताप सहता रहता है।

पर जो मनुष्य (पर्याप्त धन या अधिक धन पाकर भी)गुरु या संत आदि के सत्संग से अनासक्त व वीतरागी हो गया या तद्भावित ब्रह्मनिष्ठ वह निश्चित ही राजा जनक की तरह मानने योग्य है। पर परम पद (गंगा, मनसा , छायासीता, ध्रुव लोक सी सत्ता, देवपद, त्रिदेव पद आदि या स्वर्ग से ऊपर के लोक महर्लोक तपोलोक जनलोक आदि) के लिए उसे धन व महल आदि के महा संग्रह को छोड़कर सनत्कुमार सा एकाकी या चौथा आश्रम संन्यास भी

अपनाना ही पड़ता है और अखंड ब्रह्मचर्य पूर्वक भी रहना पड़ता है अन्यथा परम पद नहीं मिलता मात्र इहलोक में सुख अवश्य मिलता है। अथवा थोड़ा–बहुत पुण्य संचय से दस स्वर्ग मंडलों के सुख भी पा सकता है।

अच्छा पैकेज या सुन्दर रूप वाली स्त्री (या नारि को बलिष्ठ पति व धनाढ्य वर) ये मिलना आंशिक काल तक ठीक है (यह आंशिक कालखण्ड 30 से 55 तक ही ठीक है पर धर्म शास्त्रों में 50–55 के बाद वानप्रस्थ सा जीवन जीने की आज्ञा है न कि स्प्लेंडर लाईफ।)

अतः कुछ 25 साल की अवधि के लिए यह सकाम आचरण अक्षयरुद्र के अनुसार राजसिक प्रवृत्ति है और कल्याण कारी नहीं। यदि यह सब अच्छा ही होता तो हम स्वयं सामर्थ्यवान होकर भी इनका ही वरण करते और यह सब ठीक होता तो महादेव हमें 12 वर्ष तक अखंड ब्रह्मचर्य की आज्ञा नहीं देते इसी से समझ लो कि – दर्शन के बाद भी अखंड ब्रह्मचर्य कितना अनिवार्य है। पर मूर्ख जन धन व स्त्रीभोग को ही सुख का आधार समझते हैं न कि ध्रुव से तप को। और एक बात जो युवतियाँ या नारियाँ कमर मटका मटका कर और अपने स्तनों को दिखा दिखाकर रील बनाकर अपने थोपड़े को प्रसिद्ध करना चाहती हैं वे तो निरा मूर्ख हैं। उन किशोरियों या युवतियों के माँ बाप की इज्जत ही उनके समाज में नहीं होती क्योंकि वे बेटियाँ वेश्या या कुलटा जैसी अपने अंग उपांगों का दुरुपयोग ही करती हैं यह अनमोल तन जिसे रत्न कहा जाता है उसको छिपाकर रखने की अपेक्षा प्रदर्शन अधर्म और अनुचित ही है और यदि वे औरतें आधे वस्त्र पहनने को उचित व धर्म समझें तो यह भी उनकी गंदी सोच है क्योंकि नारियों से भरी सभा में यदि एक पुरुष पेन्ट और शर्ट निकाल दे तो वे नारियाँ उसे अश्लील हरकत या अभद्रता समझने लगती है पर वे खुद कपड़े निकालकर प्रदर्शन को भद्रता समझती हैं ये कितनी मूर्खता है।

प्रश्न 9

सबसे अधिक दुर्लभ क्या है ? परमोत्तम उपलब्धि क्या है?

उत्तर– परमहंस या ज्ञान की उच्चस्तरीय भूमिकाओं पर पहुँचे ब्रह्मविद् साक्षात् अवधूत रूपी परम संतो का सत्संग सबसे अधिक दुर्लभ है। और श्रीहरि या शिव जी अथवा अन्य इष्ट रूप के दर्शन भी दुर्लभ संयोग से ही संभव है। साक्षात् इष्ट या संत कृपा से तद्भाविता/अपरोक्षानुभूति सबसे अधिक दुर्लभ और परम से भी परम उपलब्धि है।

प्रश्न 10

गुरुजी मेरा एक प्रश्न था मत्स्य पुराण, कूर्म पुराण, वराह पुराण इन तीनों पुराने पर भी भगवान विष्णु के अवतार का ही वर्णन है और श्रीमद् भागवत महापुराण में भी भगवान के इन्हीं सब अवतारों का भी वर्णन है तो आखिरकार अलग से इन तीनों पुरानो की रचना का क्या कारण है? – अखिलेश तिवारी जी

उत्तर – मत्स्य पुराण भगवान मत्स्य के अवतार और उनके संवाद पर आधारित है जिसकी कथाएं विष्णु पुराण से भिन्न है ऐसा ही विष्णु पुराण को समझें पर ये विष्णु पुराण वेदव्यास जी के पिता पराशर जी ने लिखी है न कि वेदव्यास जी ने। और वराह पुराण भूमि (पृथ्वी) के स्वामी भगवान वराह और देवी पृथ्वी का अद्‌भुत संवाद है। अनुक्रमणिका नारद पुराण में भी देख सकते हैं अलग अलग अध्याय हैं बस सृष्टिकाल लगभग समान है।

पर श्रीकृष्ण अवतार मात्र कर्त्तव्य पर ही आधारित नहीं उसमें पूर्णतः प्रेम , समर्पण, आनंद आदि का विस्तार है। बिना प्रेम के मात्र यम नियम समाधि आदि में भक्तों को सुख नहीं मिलता और इसी कारण वही रासलीला आज भी रात्रि का आभूषण निधिवन में बन गई। श्रीकृष्ण अवतार की लीलाएं भक्तों को बहुत भाती है इस कारण इस रूप का वर्णन अनिवार्य था और गर्ग संहिता के अनुसार श्रीकृष्ण अवतार परिपूर्णतम कहा गया है।

प्रश्न 11 क्या गुरु का त्याग करने से दोष तो नहीं लगता?

उत्तर–

दो पुराणों में वर्णित कथन देखो–

ज्ञानहीनो गुरुत्याज्यो मिथ्यावादी विडंबकः।
स्वविश्रान्ति न जानाति परशान्तिं करोति किम्।।

ज्ञानरहित, मिथ्या बोलनेवाले और दिखावट करनेवाले गुरु का त्याग कर देना चाहिए, क्योंकि जो अपनी ही शांति पाना नहीं जानता वह दूसरों को क्या शांति दे सकेगा – गुरुगीता और भी श्रवण करें –
हे देवी!

शिलायाः किं परं ज्ञानं शिलासंघप्रतारणे।
स्वयं तर्तुं न जानाति परं निस्तारयेत्कथम्।।

पत्थरों के समूह को तैराने का ज्ञान पत्थर में कहाँ से हो सकता है ? जो खुद तैरना नहीं जानता वह दूसरों को क्या तैरायेगा।

न वन्दनीयास्ते कष्टं दर्शनाद् भ्रान्तिकारकः।
वर्जयेतान् गुरुन् दूरे धीरानेव समाश्रयेत्।।

जो गुरु अपने दर्शन से (दिखावे से) शिष्य को भ्रान्ति में ड़ालता है ऐसे गुरु को प्रणाम नहीं करना चाहिए इतना ही नहीं दूर से ही बिना भय के उसका त्याग करना चाहिए। ऐसी

स्थिति में धैर्यवान् गुरु जो यथार्थ में ब्रह्मभाव को प्राप्त हो उसका ही आश्रय लेना चाहिए
पाखण्डिनः पापरता नास्तिका भेदबुद्धयः।

स्त्रीलम्पटा दुराचाराः कृतघ्ना बकवृतयः।।
कर्मभ्रष्टाः क्षमानष्टाः निन्द्यतर्कैश्च वादिनः।
कामिनः क्रोधिनश्चैव हिंस्राश्चंड़ाः शठस्तथा।।
ज्ञानलुप्ता न कर्तव्या महापापास्तथा प्रिये।
एभ्यो भिन्नो गुरुः सेव्य एकभक्त्या विचार्य च।।

भेदबुद्धि उत्पन्न करनेवाले, स्त्रीलम्पट, दुराचारी, नमकहराम, बगुले की तरह ठगनेवाले, क्षमा रहित निन्दनीय तर्कों से वितंडावाद करनेवाले, कामी क्रोधी, हिंसक, उग्र, शठ तथा अज्ञानी और महापापी पुरुष को गुरु नहीं करना चाहिए, ऐसा विचार करके ऊपर दिये लक्षणों से भिन्न लक्षणोंवाले गुरु की एकनिष्ठ भक्ति से सेवा करनी चाहिए।

श्रृणु तत्वमिदं देवि यदा स्याद्विरतो नरः।
तदाऽसावधिकारीति प्रोच्यते श्रुतमस्तकैः।।

हे देवी ! इस तत्व को ध्यान से सुनो–मनुष्य जब विरक्त होता है तभी वह अधिकारी कहलाता है, ऐसा उपनिषद कहते हैं अर्थात् दैव योग से गुरु प्राप्त होने की बात अलग है और विचार से गुरु चुनने की बात अलग है।

अखण्डैकरसं ब्रह्म नित्यमुक्तं निरामयम्।
स्वस्मिन संदर्शितं येन स भवेदस्य देशिकः।।

अखण्ड, एकरस, नित्यमुक्त और निरामय ब्रह्म जो अपने अंदर ही दिखाते हैं वे ही गुरु होने चाहिए।

प्रश्न 12

मूर्ति पूजा श्रेष्ठ या चरित्र पूजा?

उत्तर– जो लोग गुरु या भगवन के रूप की पूजा मात्र करते हैं न कि उनके चरित्र को अपनाते हैं

उन लोगों को शान्ति व ज्ञान नहीं मिलता। योगवाशिष्ठ के अनुसार यथार्थ व सम्यक् पूजा साधन चतुष्ट्य से संपन्न होना है जो उनके चरित्र को अपनाने पर ही होगा न कि मिठाई या फूल पत्ते चढ़ाना।

ये पत्रम् पुष्प आदि औपचारिक व बालकवत् सेवा है इस पूजा से जीवन्मुक्त नहीं होता कोई। अतः शम दम युक्त हो जाओ जितेन्द्रिय बनो अन्यथा पुनर्जन्म पक्का।

प्रश्न 13

इन्द्रियों के दमन का महत्व क्या है?

उत्तर– जो इन्द्रियोंका दमन करना नहीं जानते, वे व्यर्थ ही शास्त्रोंका अध्ययन करते हैं; क्योंकि मन और इन्द्रियोंका संयम ही शास्त्रका मूल है, वही सनातन धर्म है। पद्मपुराण में दम का अतुलनीय प्रभाव व फल बताया है। इसके सृष्टिखण्ड के अध्याय 19 के अनुसार सम्पूर्ण व्रतोंका आधार दम ही है। छहों अंगोंसहित पढ़े हुए वेद भी दम से हीन पुरुषको पवित्र नहीं कर सकते। जिसने इन्द्रियोंका दमन नहीं किया, उसके सांख्य, योग, उत्तम कुल, जन्म और तीर्थस्नान–सभी व्यर्थ हैं। जिसमें दम नहीं वह तीर्थ सेवन का संपूर्ण फल भी नहीं पाता। वह जप तप व्रत–उपवास का सम्यक् फल भी नहीं पाता

जो अपनी इन्द्रियों पर नियंत्रण नहीं रखता वह जलहीन घड़े के समान रिक्त ही है। जो अपनी इन्द्रियों का दास होकर परस्त्रीगमन के प्रयास में रत है अथवा अति भोगी है उसने अपना जीवन ही नष्ट कर दिया यह माना जाए। दमहीन पुरुष की दम शक्ति उसका चित्त शुद्ध होने पर ही संभव है। इस चित्त की शुद्धि होने के लिए वह नित्य जितेन्द्रिय महात्माओं का सेवन करें नित्य गंगा जल का पान करें और ऐसे ब्राह्मण जो जितेन्द्रिय हैं या ब्रह्मनिष्ठ उनके चरणों का सेवन करें। शालग्राम जल, शिवलिंग के अभिषेक अथवा तुलसी का जल नित्य पान करके शीघ्र ही शुद्ध होने का यथासंभव प्रयास करे। नाम का संकीर्तन या नाम जप भी सरल और सुगम उपाय है । शास्त्रों के स्वाध्याय को शिवगीता में पूजा का उत्तम प्रकार कहा गया है जो अतिशीघ्र चित्त शुद्ध करता है पर किसी बंधन के कारण यदि स्वाध्याय अथवा संतों के सान्निध्य से दूर रहना पड़े तो नाम जप में आलस्य और प्रमाद न करें। नाम जप के साथ भूख मिटाने के लिए पवित्र अन्न का भक्षण करें अपवित्र भोजन भी चित्त को मलिन करता है। दूषित अन्न से ही मन में विकार उत्पन्न होते हैं चोर या चोरी अथवा लूट से प्राप्त अन्न या वैश्या कुलटा अथवा अपवित्र नारी या पापी पुरुष का अन्न भी दोषयुक्त माना है वह बुद्धि में भी विकार उत्पन्न करता है। शुद्ध अन्न , नाम जप , गुरुमंत्र का पुरश्चरण व सत्संग स्वाध्याय से संचित पाप नष्ट होने पर ही चित्त शुद्ध होकर दम का सामर्थ्य व शक्ति का संचार होता है। संसार की नश्वरता देखकर मनुष्य को वैराग्य तो हो सकता है पर दम के लिए अथाह पुण्य अनिवार्य है यह दम ही मनुष्य को देवता बनाता है। दम से ही मनुष्य श्रीहरि के दर्शन के लिए पात्र होता है । दमहीन नर मात्र मंत्र या व्रत–उपवास से भी प्रभु के दर्शन नहीं कर सकता। अजितेन्द्रिय की कोरी श्रृद्धा से उसे गुरुमंत्र अवश्य मिल सकता है और किसी व्रत का माहात्म्य भी प्राप्त किया जा सकता है पर जब तक वह उस मंत्र का जप व्रत–उपवास पूर्वक नहीं करता

तब तक उसकी श्रृद्धा भी फल नहीं देती। बिना जप और बिना व्रत–उपवास के, बिना धर्मपरायणता के श्रृद्धा नाममात्र की श्रृद्धा ही है। जो फल नहीं देती। जो आध्यात्मिक पथ प्रशस्त करना चाहे उसको दम युक्त होना ही होगा।

मात्र उपदेश देने से ब्रह्मभाव की सिद्धि या दमसिद्धि नहीं होती। बिना भोजन किए भूख भूख कहने से भूख शान्त नहीं होती।

प्रश्न 14. कृपया माता पिता की महिमा पर प्रकाश डालें ?

उत्तर– बिना प्रमाण के आजकल मानव विश्वास नही करते अतः पद्म पुराण भूमि खण्ड अध्याय 63 के अनुसार सुनें–

सुकर्मा – मैं शुद्धभावसे मन लगाकर इन दोनों अर्थात् माता पिता की पूजा करता हूँ। पिप्पल!

1. मुझे दूसरी तपस्यासे क्या लेना है।
2. तीर्थयात्रा तथा अन्य पुण्यकर्मोंसे क्या प्रयोजन है।
3. विद्वान् पुरुष सम्पूर्ण यज्ञोंका अनुष्ठान करके जिस फलको प्राप्त करते हैं, वही मैंने पिता–माताकी सेवासे पा लिया है।
4. जहाँ माता–पिता रहते हों, वही पुत्रके लिये गंगा, गया और पुष्करतीर्थ है– इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है। और यह सत्य है सत्य है बार बार सत्य है।
5. माता–पिताकी सेवासे पुत्रके पास अन्यान्य पवित्र तीर्थ भी स्वयं ही पहुँच जाते हैं। उसे अन्य तीर्थ स्थल पर जाने की आवश्यकता ही नहीं होती पर पिता माता की इच्छा हो तो वह पुत्र उनको तीर्थ स्थल पर अवश्य ले जाये।
6. जो पुत्र माता–पिताके जीते–जी उनकी सेवा करता है, उसके ऊपर त्रिदेव सहित सभी देवता तथा पुण्यात्मा महर्षि प्रसन्न होते हैं।
7. पिताकी सेवासे तीनों लोक संतुष्ट हो जाते हैं।
8. जो पुत्र प्रतिदिन माता–पिताके चरण पखारता है, उसे नित्यप्रप्ति गंगा स्नानका फल मिलता है।
9. जिस पुत्रने ताम्बूल, वस्त्र, खान–पानकी विविध सामग्री तथा पवित्र अन्नके द्वारा भक्तिपूर्वक माता–पिताका पूजन किया है, वह सर्वज्ञ होता है।
10. द्विजश्रेष्ठ ! माता–पिताको स्नान कराते समय जब उनके शरीरसे जलके छींटे उछटकर पुत्रके सम्पूर्ण अंगोंपर पड़ते हैं, उस समय उसे सम्पूर्ण तीर्थोंमें स्नान करनेका फल होता है।

11. यदि पिता पतित, भूखसे व्याकुल, वृद्ध, सब कार्योंमें असमर्थ, रोगी और कोढ़ी हो गये हों तथा माताकी भी वही अवस्था हो, उस समयमें भी जो पुत्र उनकी सेवा करता है, उसपर निस्सन्देह भगवान् श्रीविष्णु प्रसन्न होते हैं।
12. भगवान शिव या विष्णु केवल अपनी पत्थर या काष्ठ की मूर्तियों को 56 भोग अर्पित करके ही प्रसन्न होते हैं यह बालबुद्धि है । भगवान शिव और विष्णु का निवास माता पिता में भी सतत् रहता है। जो बुद्धिमान और विवेकी पुरुष ही जानते हैं। ऐसा भक्त मूर्ति की पूजा से भी श्रेष्ठ फल पाकर कृतकृत्य हो जाता है भगवान श्रीगणेश ने माता पिता को ही पूजने पर सबसे अधिक बल दिया है।
13. माता पिता का भक्त योगियोंके लिये भी दुर्लभ भगवान् श्रीविष्णुके धामको प्राप्त होता है।
14. जो किसी अंगसे हीन, दीन, वृद्ध, दुःखी तथा महान् रोगसे पीड़ित माता–पिताको त्याग देता है, वह पापात्मा पुत्र कीड़ोंसे भरे हुए दारुण नरकमें पड़ता है।
15. जो पुत्र बूढ़े माँ–बापके बुलानेपर भी उनके पास नहीं जाता, वह मूर्ख विष्ठा खानेवाला कीड़ा होता है तथा हजार जन्मोंतक उसे कुत्तेकी योनिमें जन्म लेना पड़ता है। फिर भले ही वह नारायण का भक्त हो या महादेव का; पर जो अपने माता पिता के अंदर निवास करने वाले भगवान शिव और हरि की अवहेलना करता है वह पुत्र न तो भक्त है न ही सेवक न ही दास।
16. वृद्ध माता–पिता जब घर में मौजूद हों, उस समय जो पुत्र पहले उन्हें भोजन कराये बिना स्वयं अन्न ग्रहण करता है, वह घृणित कीड़ा होता है और हजार जन्मोंतक मल–मूत्र भोजन करता है। इसके सिवा वह गृहस्थ पापी पुत्र तीन सौ जन्मोंतक काला नाग होता है।
17. जो पुत्र कटु–वचनोंद्वारा माता–पिताकी निन्दा करता है, वह पापी बाघकी योनिमें जन्म लेता है तथा और भी बहुत दुःख उठाता है।
18. जो पापात्मा पुत्र माता–पिताको प्रणाम नहीं करता, वह हजार युगोंतक कुम्भीपाक नरकमें निवास करता है।
19. पुत्रके लिये माता–पितासे बढ़कर दूसरा कोई तीर्थ नहीं है। माता–पिता इस लोक और परलोकमें भी नारायणके समान हैं। इसलिये महाप्राज्ञ ! मैं प्रतिदिन माता–पिताकी पूजा करता और उनके योग–क्षेमकी चिन्तामें लगा रहता हूँ। इसीसे तीनों लोक मेरे वशमें हैं।

नोट – माता पिता के अतिरिक्त ब्रह्मनिष्ठ गुरु की सेवा भी अनिवार्य है। ऐसा शिव जी का आदेश है। बिना ज्ञान के परम पद संभव नहीं न ही चित्त की विश्रांति।

अतः ब्रह्मनिष्ठ गुरु की सेवा और संध्या के समय का पालन भी अनिवार्य करें।

प्रश्न–15

कौन से स्थान तीर्थ माने गये हैं।

उत्तर–

●कुएँको छोड़कर जितने भी खोदे हुए जलाशय हैं, उनमें तीर्थकी प्रतिष्ठा है।

●भूतलपर जो मेरु आदि पर्वत हैं, वे भी तीर्थरूप हैं।

●यज्ञभूमि,

●यज्ञ और

●अग्निहोत्रमें भी तीर्थकी प्रतिष्ठा है।

●शुद्ध श्राद्धभूमि,

●देवमन्दिर,

●होमशाला,

●वैदिक या पुराणों के स्वाध्याय का कक्ष रूपी मन्दिर,

●घरका पवित्र स्थान ईशान कोण

और

●गोशाला

ये सभी उत्तम तीर्थ हैं।

●जहाँ सोमयाजी ब्राह्मण निवास करता हो, वहाँ भी तीर्थकी प्रतिष्ठा है।

●जहाँ पवित्र बगीचे हों, जहाँ

●पीपल,

●ब्रह्मवृक्ष (पाकर, पलाश) और

●बरगदका वृक्ष हो तथा

●जहाँ अन्य जंगली वृक्षोंका समुदाय हो, उन सब स्थानोंपर तीर्थका निवास है।

इस प्रकार इन तीर्थोंका वर्णन किया गया।

●जहाँ पिता और माता रहते हैं उस घर के किसी पवित्र कक्ष या स्थान पर पूजन या पाठ अथवा साधना भी तीर्थ स्थल का फल देने वाला सिद्ध होता है।

●जहाँ पुराणोंका पाठ होता है,

●जहाँ गुरुका निवास है ।

●तथा जहाँ सती स्त्री रहती है वह स्थान निस्संदेह तीर्थ है। यहाँ से भी दान पुण्य करने पर उत्तम फल प्राप्त होता है।

●जहाँ श्रेष्ठ सात्त्विक सुयोग्य, भक्त, ब्रह्मनिष्ठ व आज्ञाकारी पुत्र निवास करते हैं, वहाँ का स्थान उत्तम तीर्थ है।
ये सभी स्थान तीर्थ माने गये हैं।

प्रश्न 16– हे महाप्राज्ञ! दानके उत्तम पात्रका लक्षण बताओ।

उत्तर– दान श्रद्धापूर्वक देना चाहिए पर किनको देना चाहिए वह श्रवण करो –

●ज्ञाननिष्ठ, पर ज्ञानदाता कोटी गुना श्रेष्ठ है। ज्ञाननिष्ठ संतो की श्रेणी में है पर अपरोक्ष ज्ञाननिष्ठ होकर भी जो ज्ञान दाता है वह गुरु के समान व गुरु की श्रेणी में ही समझा जाए।
● महा तपोनिष्ठ अर्थात् नैष्ठिक रूपी बृहत् ब्रह्मचारी या संपूर्ण वेदों के अध्ययन पर्यन्त संयम से रहने वाला ब्राह्म ब्रह्मचारी।
● वैराग्य की शिक्षा देने वाला जिसकी संज्ञा बोधक गुरु है।
●स्तोत्रदाता गुरु
● मंत्रदाता गुरु
●शुद्ध,
●दयालु ,
●उत्तम कुल में उत्पन्न ,
●वेदाध्ययनमें तत्पर,
●शान्त,
●जितेन्द्रिय,
●बुद्धिमान् धर्मपरायण
●देवपूजापरायण पर स्वपत्नीगामी
● पंचाग्नि सेवी तपस्वी,
●देवी का भक्त जो शम दम युक्त हो
●विष्णुभक्त जो शम दम युक्त हो
●शिवभक्त जो दम युक्त हो व शम युक्त भी
●धर्मज्ञ,
●सुशील
●पाखण्डियोंके संगसे रहित ब्राह्मण
● संध्यापूत ब्राह्मण पर धर्मपरायण

● जितेन्द्रिय ब्राह्मण

● वेदपाठी ब्राह्मण पर व्याभिचारहीन

ये सब ही दान के श्रेष्ठ पात्र है।

ऐसे पात्र को पाकर अवश्य दान देना चाहिये।

●●●●●●●●●●●●●●●●●●

अब मैं दूसरे दान पात्रोंको बताता हूँ।

■उपर्युक्त गुणोंसे युक्त बहिनके पुत्र (भानजे) को तथा

■पुत्रीके पुत्र (दौहित्र / नाती) – को भी दानका उत्तम पात्र समझो।

■ दामाद,

■यज्ञकीदीक्षा लेनेवाला पुरुष भी उत्तम पात्र है। ये दान देनेयोग्य श्रेष्ठ पात्र बताये गये हैं।

प्रश्न–17

दान के लिए अपात्र कौन है?

उत्तर–

1. जो वेदोक्त आचारसे युक्त हो, वह भी दान पात्र है।
2. धूर्त ब्राह्मणको दान न दे।
3. जिस किसी की भी स्त्री अन्याययुक्त दुष्कर्ममें प्रवृत्त हो, जो नर किसी स्त्रीके वशीभूत रहता हो, उसे दान देना निषिद्ध है।
4. चोर को भी दान नहीं देना चाहिये ।
5. चोर को दान देनेवाला मनुष्य तत्काल चोरके समान हो जाता है।
6. अत्यन्त जड और विशेषतः शठ ब्राह्मणको भी दान देना उचित नहीं है।
7. वेद–शास्त्रका ज्ञाता होनेपर भी जो सदाचारसे रहितहो, वह श्राद्ध और दानमें सम्मिलित करनेयोग्य कदापि नहीं है।
8. श्रद्धापूर्वक उत्तम कालमें, उत्तम तीर्थमें और उत्तम पात्रको दान देनेसे उत्तम फल मिलता है। संसारमें प्राणियोंके लिये श्रद्धाके समान पुण्य, श्रद्धाके समान सुख और श्रद्धाके समान तीर्थ नहीं है।' नृपश्रेष्ठ! श्रद्धा–भावसे युक्त होकर मनुष्य पहले मेरा स्मरण करे, उसके बाद सुपात्रके हाथमें द्रव्यका दान दे। इस प्रकार विधिवत् दान करनेका जो अनन्त फल है, उसे मनुष्य पा जाता है और मेरी कृपासे सुखी होता है।

प्रश्न 18–दान का समय बताएं?

उत्तर–

नित्य, नैमित्तिक और काम्य ये दानकालके तीन भेद हैं।
चौथा भेद प्रायिक (मृत्यु) सम्बन्धी कहलाता है।

1. मेरे अंश सूर्यको उदय होते देख जो जलमात्र भी अर्पण करता है, उसके पुण्यवर्द्धक नित्यकर्मकी कहाँतक प्रशंसा की जाय।
2. उस उत्तम बेलाके प्राप्त होनेपर जो श्रद्धा औरभक्तिके साथ स्नान करता तथा पितरों और देवताओंका पूजन करके दान देता है।
3. जो अपनी शक्ति और प्रभावके अनुसार दयार्द्र–चित्तसे अन्न–जल, फल फूल, वस्त्र, पान, आभूषण, सुवर्ण आदि वस्तुएँ दान करता है, उसका पुण्य अनन्त होता है।
4. राजन! मध्याहन और तीसरे पहरमें भी जो मेरे उद्देश्य से खान–पान आदि वस्तुएँ दान करता है, उसके पुण्यका भी अन्त नहीं है।
5. अतः जो गार्हस्थ्य अपना परम कल्याण चाहता है, उस पुरुषको तीनों समय निश्चय ही दान करना चाहिये। अपना कोई भी दिन दानसे खाली नहीं जाने देना चाहिये।
6. राजन्। दानके प्रभावसे मनुष्य भविष्य में बहुत बड़ा बुद्धिमान्, अधिक सामर्थ्यशाली, धनाढ्य , गुणवान् और मेरी कृपा का महापात्र होता है।
7. यदि एक पक्ष या एक मास तक मनुष्य अन्नका दान नहीं करता तो मैं उसे भी उतने ही समय तक भूखा रखता हूँ।
8. उत्तम दान न देनेवाला मनुष्य अपने मलका भक्षण करता है।
9. मैं उसके (पात्र को दान न करने वाले के) शरीरमें ऐसा रोग उत्पन्न कर देता हूँ, जिससे उसके सब भोगोंका निवारण हो जाता है।
10. जो तीनों कालोंमें संध्यापूत ब्राह्मणों, संतों, देवताओं गाय, माता और पिता या अन्य को दान नहीं देता तथा स्वयं ही मिष्टान्न खाता है, उसने महान् पाप किया है। महाराज ! शरीरको सुखा देनेवाले उपवास आदि भयंकर प्रायश्चित्तोंके द्वारा उसको अपने देहका शोषण करना चाहिये।

प्रश्न–19

काम्य काल, आभ्युदयिक काल तथा नैमित्तिक पुण्यकालक्या है?

उत्तर–

काम्य काल –
समस्त व्रतों और देवता आदिके निमित्त जब सकामभावसे दान दिया जाता है, उसे श्रेष्ठ ब्राह्मणोंने दानका काम्यकाल बताया है।

अब मैं तुमसे आभ्युदयिक कालका भी वर्णन करता हूँ।

सम्पूर्ण शुभकर्मोका अवसर,
उत्तम वैवाहिक उत्सव,

नवजात पुत्रके जातकर्म आदि संस्कार तथा चूड़ाकर्म और उपनयन आदिका समय, मन्दिर, ध्वजा, देवता, बावली, कुआँ, सरोवर और बगीचे आदिकी प्रतिष्ठाका शुभ अवसर.......................... ..इन सबको आभ्युदयिक काल कहा गया है।

उस समय जो दान दिया जाता है, वह सम्पूर्ण सिद्धियोंको देनेवाला होता है। अमावास्या, पूर्णिमा,एकादशी,संक्रान्ति,व्यतीपात और वैधृति नामक योग तथा माघ, आषाढ़, वैशाख और कार्तिककी पूर्णिमा, सोमवती अमावास्या, मन्वादि एवं युगादि तिथियाँ, गजच्छाया (आश्विन कृष्ण त्रयोदशी) तथा पिताकी क्षयाह तिथि दानके नैमित्तिक काल बताये गये हैं। नृपश्रेष्ठ! जो मेरे उद्देश्यसे भक्तिपूर्वक ब्राह्मणको दान देता है, उसे मैं निश्चयपूर्वक महान् सुख और स्वर्ग, मोक्ष आदि बहुत कुछ प्रदान करता हूँ।

प्रश्न 20

हे अक्षयरुद्र जी! महादेव के युगल नाम और पंचाक्षरी मंत्र का कितना जप करने पर एक पुरश्चरण संपन्न होता है?क्या बिना दीक्षा के पंचाक्षरी का जप उचित है?

(चक्रवर्ती अंकित मेहता जी का प्रश्न)

उत्तर–

बिना दीक्षा के भी पंचाक्षरी का जप किया जा सकता है यह शिव पुराण में स्पष्टीकरण है। पर शीघ्र सिद्धि व अनेक गुना कृपा के लिए शैव गुरु (जिसने पंचाक्षरी का अखंड ब्रह्मचर्य पूर्वक 22 लाख जप किया हो या शिव स्तोत्र आदि से शिवजी के दर्शन किये हो) से दीक्षा अनिवार्य है। श्रवण कुमार के पिता ने भी बिना दीक्षा के पंचाक्षरी का पुरश्चरण किया था।

ये हमने किसी पुस्तक में पढ़ा था पर स्मरण नहीं कहाँ पढ़ा था। पर श्रवण की माता ने अपने पिता से ही इस मंत्र को दीक्षा में लिया था। इस कारण शान्ता नाम की सुपुत्री जो ब्रह्मवादिनी थी उस पुरश्चरण से जन्मी। और पति के पुरश्चरण से श्रवण का जन्म। दोनो को साक्षात्कार भी हुआ था। पर पुरश्चरण में अखंड ब्रह्मचर्य अनिवार्य है और स्थान पहाड़ी के शिव मंदिर या बिल्ववृक्ष अथवा ज्योतिर्लिंग या पवित्र देवालय जो एकांत में हो। और समय, संख्या व दिशा का विशेष ध्यान रखे। मंत्र कोई भी हो जितने अक्षर हों उसमें चार लाख का गुणा करने पर एक महा पुरश्चरण माना जाए यह लिंग पुराण कहता है तथा मंत्र में जितने अक्षर हैं

उतने लाख का जप भी कुछ संत जन पुरश्चरण मानते हैं। पर उस पुरश्चरण का दशांश हवन या दशांश अधिक जप से हवन का फल भी मिलता है। तदोपरान्त तर्पण मार्जन ब्राह्मण भोज आदि के लिए भी दशांश अतिरिक्त जप करें।

ऐसा ही युगल नाम का समझें । पर नाम खाली न जपें पद्मपुराण के अनुसार नाम से पहले श्री या जय सहित जपें । और संख्या वही।

प्रश्न–21

आदरणीय परम पूज्य ब्रह्मानंद अक्षयरुद्र जी के चरणों में सादर प्रणाम, हे भगवन आपने जो बात कहीं भले ही वो शत प्रतिशत शत हो पर कहीँ लोगों के अनुभव मैने अपनी इन आंखो से देखा है की कई माता पिता आज के समय में अपने संतानो से गलत करते हैं यहाँ तक कि उसकी जिंदगी भी तबाह कर देने में संकोच तक नहीं करते, कहीं मासूम और भले भाले लोगों के साथ एसा होता ही है , बहुत कुछ आपको बताना चाहता हूँ पर शब्द नहीं मिल रहे हैं मुजे, पुनः आपको सादर प्रणाम, जय महादेव, जय माता भवानी, जय मा अंबे, जय गुरुदेव, हर हर महादेव नमन। ●.अजय पटेल भावनगर●

उत्तर–

अजय जी !

अविवाहित या ब्रह्मचारी पुत्र उस दुष्ट पिता के अवगुणों को सहन करें। समझाने का प्रयास अवश्य करे पर पिता हिरण्याकशिपु जैसा जिद्दी हो तो भी उस पिता पर आघात न करें न ही पीठ पीछे निन्दा।

और उनकी सेवा में वहीं रहें यदि पिता अति अहंकार से उस स्थितप्रज्ञ पुत्र को घर छोड़कर जाने का कह दे तो अवश्य ही चला जाए।

पर रही आम मनुष्य और गृहस्थ जीवन धारी पुत्र की; तो यदि वास्तव में माता पिता किसी भी प्रकार से बहु या पुत्र का अहित या शोषण कर रहे हैं या अति सेवा पर बाध्य करके अति परेशान कर रहे हैं तो ऐसे पुत्र और पुत्रवधु को बिना कुछ सोचे घर छोड़कर चले जाना चाहिए तभी उन दुष्ट स्वभाव के माता पिता को होश आयेगा।

पुत्रवधु की सुरक्षा के लिए पति विवाह के समय संकल्प लेता है अतः अपने ही अहंकारी या जिद्दी माता पिता के कारण वह सुरक्षित न हो तो उस घर को छोड़कर चले जाना चाहिए क्योंकि पुत्रवधु पर नित्य अत्याचार होगा तो आपके माता पिता के पापों की वृद्धि अधिक होगी जिससे उनका नरकों व नीच योनियों में जाना सुनिश्चित है अतः उस दुष्ट अहंकारी या शोषक पिता को छोड़ने में ही भलाई है पर यदि पुत्र बेरोजगार हो किराये का घर भी लेने में समर्थ न हो न ही पत्नी बच्चो का भरण पोषण कर सकता हो तो ऐसी मजबूरी में (बाहर न जा

सके तो) अत्याचार सहना ही होगा। और चुपचाप पशुओं की तरह पड़े रहो और पशुओं की तरह जो भी मिले खाते पीते रहो। जिसका छत और जिसका अन्न आप खाते हो उस पर आघात करना शास्त्र विरुद्ध है भले ही वह डैली अहंकार वश चोट पहुंचाता हो ।

पर अपना स्वाभिमान प्यारा है तो चुपचाप घर छोड़कर चले जाओ भले ही भूखे मर जाओ अथवा चाहे कुछ भी समस्या क्रियेट हो।

पर किसी भी हालत में पिता और माता की निन्दा नहीं करना चाहिए यही पद्म पुराण कहता है।

गुरु यदि शुक्राचार्य जैसा होकर शिष्य (बलि) को दान देने से रोके या पिता दिति पुत्र हिरण्याकशिपु जैसा होकर भक्ति से रोके तो ऐसे पिता की अनुचित आज्ञा न मानी जाए यही धर्म है। फिर भले ही बाप या गुरु बद्दुआ दे या शाप । और नैष्ठिकब्रह्मचर्य का पालन करके धर्म और अध्यात्म की सतत् सेवा करना हो तो भी पिता की आज्ञा मानना (कि गृहस्थ हो जाओ) अनिवार्य नहीं । नारद व सनत्कुमार इस कथा के उदाहरण है आजकल 99.999 प्रतिशत पिता अपने पुत्र को संत या ब्रह्मचारी बनाने में अवरोध डालते ही हैं।

प्रश्न 22

पाप और पीड़ाका निवारण करनेवाला एक महादान को बताओ।

उत्तर–मृत्युकाल प्राप्त होनेपर अपने शरीरके नाशको समझकर दान देना चाहिये। वह दान यमलोकके मार्गमें सुख पहुँचानेवाला होता है।

प्रश्न 23

जगत्को पवित्र करनेवाली श्रेष्ठ नदियाँ कौन कौन सी हैं?

उत्तर–

उत्तम तीर्थोंमें ये गंगाजी बड़ी पावन जान पड़ती हैं। इनके सिवा सरस्वती, नर्मदा, यमुना, तापी (ताप्ती), चर्मण्वती, सरयू, घाघरा और वेणा नदी भी पुण्यमयी तथा पापोंका नाश करनेवाली हैं। कावेरी, कपिला, विशाला, गोदावरी और तुंगभद्रा ये भी जगत्को पवित्र करनेवाली मानी गयी हैं। भीमरथी नदी सदा पापोंको भय देनेवाली बतायी गयी है। वेदिका, कृष्णगंगा तथा अन्यान्य श्रेष्ठ नदियाँ भी उत्तम हैं। पुण्यपर्वके अवसरपर स्नान करनेके लिये इनसे सम्बद्ध अनेक तीर्थ हैं।

गाँव अथवा जंगलमें जहाँ भी नदियाँ हों, सर्वत्र ही वे पावन मानी गयी हैं। अतः वहाँ जाकर स्नान, दान आदि कर्म करने चाहिये।

यदि नदियोंके तीर्थका नाम ज्ञात न हो तो उसका 'विष्णुतीर्थ' नाम रख लेना चाहिये। प्रभु ने कहा है कि– ''सभी तीर्थोंमें मैं ही देवता हूँ। तीर्थ भी मुझसे भिन्न नहीं हैं–यह निश्चित बात है। जो साधक तीर्थ–देवताओंके पास जाकर मेरे ही नामका उच्चारण करता है, उसे मेरे नामके अनुसार ही पुण्य फल प्राप्त होता है।''

प्रश्न–24

गुरु जी क्या अन्नदान में भी पात्रता का नियम लागू होता है ?

(–प्रशांत ताम्रकार)

उत्तर–

पका हुआ भोजन किसी भी भिक्षुक या भिखारी को दे सकते हो न कि गेंहू या कच्चे चावल।

आजकल बहुत से भिखारी लोग गेंहू या आटा बेचकर शराब पी रहे हैं। या उन पैसो से तम्बाकू या मांस भी खरीदकर खाते हैं। अतः पका भोजन ही दान में दें। पर उपर्युक्त गुणधर्म वाले सज्जन या जितेन्द्रिय व धर्मनिष्ठ को सब कुछ दे सकते हैं।

प्रश्न 25 माधव सोमानन्दनाथ जी का महाप्रश्न–

नमः शिवाय आदरणीय अक्षयरुद्र जी ! जैसा कि आपने आज दिनांक 23 अगस्त 2024 की पोस्ट में संकेत दिया है उन सात प्रकार के गुरुओं के बारे में जानने की इच्छा है। आपकी पोस्ट अग्रवर्णित है– स्कंदपुराण के अनुसार गुरु सात प्रकार के होते हैं जिसको जैसा भी मिले उसका अपना भाग्य है पर जो निषिद्ध प्रकार का है उसे निश्चित ही त्याग दें यह शिव वाणी है परंतु कौन निषिद्ध (त्यागने योग्य) है इसका वर्णन भी गुरुगीता व लिंग पुराण तथा कूर्म पुराण में है अतः शास्त्रों को पढ़कर ही वरण या त्याग करें।

हर कथा वाचक अज्ञानी और लोभी नहीं होता अतः जो लोग अपनी मूढ़ बुद्धि द्वारा हर कथा वाचक को अज्ञानी समझता है वह स्वयं महापाप कर रहा है।

जीवन की सांझ कब ढल जाये कोई नहीं जानता अतः मरने से पहले यह परोक्ष निन्दा अनुचित और पाप ही है।

सबको एक दृष्टिकोण से देखना अधर्म है।

योग वसिष्ठ के अनुसार भी सात प्रकार की ज्ञान भूमिकाएं होती हैं कुछ गुरु प्रथम भूमिका पर हैं कुछ दूसरी पर और कुछ महा वीतरागी तीसरी भूमिका पर चौथा दुर्लभ है , पांचवा भी इतनी आसानी से उपलब्ध नहीं होता। छठवीं से सातवीं भूमिका वाला परम पुण्यों

से ही उपलब्ध होते हैं । 100 कथा वाचकों में से 100 के सौ ही अज्ञानी हों यह कहने वाले स्वयं ही अज्ञान में जी रहे हैं।

उत्तर–

गुरुगीता व योगवाशिष्ठ में सात सात प्रकार के गुरुओं का वर्णन है पर दोनों के भेद अलग अलग प्रकार से व्यक्त किए गए हैं योगवाशिष्ठ में भूमिका के आधार पर और यहाँ गुरुगीता में निम्नलिखित रूप से बताया है तथा श्रीमद्भागवत महापुराण में तीन प्रकार के गुरु हैं। भागवत जी के अनुसार पिता, मंत्रदाता गुरु जो धर्म की शिक्षा देने वाला हो तथा जो स्वयं भी धर्म को अपने आचरण में उतार चुका अन्यथा वह मंत्र देने का ही अधिकार नहीं रखता तथा श्रीमद्भागवत महापुराण के अनुसार तीसरा सर्वोत्तम अपरोक्ष ज्ञानदाता गुरु है ये तीन गुरु हैं। किसी पुराण में माता को भी शामिल करने से गुरु के चार प्रकार हो जाते हैं। और किसी किसी ग्रंथ में तो उस मनुष्य को भी गुरु कहा गया है जिससे कुछ न कुछ सीखने या समझने को मिलता है अतः ऐसे मनुष्य को भी गुरु रूप समझा जाए ।

अब गुरुगीता जी के आधार पर गुरु के प्रकार सुनों –

श्री महादेव उवाच

सूचकादि प्रभेदेन गुरवो बहुधा स्मृताः।
स्वयं समयक् परीक्ष्याथ तत्वनिष्ठं भजेत्सुधीः।।

सूचक आदि भेद से अनेक गुरु कहे गये हैं ,बुद्धिमान मनुष्य को (बुद्धिमान मनुष्य को, बुद्धिमान मनुष्य को) को स्वयं योग्य विचार करके तत्वनिष्ठ गुरु की शरण लेनी चाहिए।

वर्णजालमिदं तद्वद्बाह्यशास्त्रं तु लौकिकम्।
यस्मिन् देवि समभ्यस्तं स गुरुः सूचकः स्मृतः।।

हे देवी ! वर्ण और अक्षरों से सिद्ध करनेवाले बाह्य लौकिक शास्त्रों का जिसको अभ्यास हो वह गुरु ●सूचक गुरु● कहलाता है।

वर्णाश्रमोचितां विद्यां धर्माधर्मविधायिनीम् ।
प्रवक्तारं गुरुं विद्धि वाचकस्त्वति पार्वति।।

हे पार्वती ! धर्माधर्म का विधान करनेवाली, वर्ण और आश्रम के अनुसार विद्या का प्रवचन करनेवाले गुरु को तुम .●वाचक गुरु●जानो।

पंचाक्षर्यादिमंत्राणामुपदेष्टा त पार्वति ।
स गुरुर्बोधको भूयादुभयोरमुत्तमः ।।

पंचाक्षरी आदि मंत्रों का उपदेश देनेवाले गुरु ●बोधक गुरु● कहलाते हैं

हे पार्वती ! प्रथम दो प्रकार के गुरुओं से यह गुरु उत्तम हैं पर सर्वोत्तम नहीं।

मोहमारणवश्यादितुच्छमंत्रोपदर्शिनम् ।
निषिद्धगुरुरित्याहुः पण्डितस्तत्वदर्शिनः ।।

निष्काम भाव से अनन्य भक्तिभाव की आज्ञा न देकर अथवा महावाक्य न बताकर जो दुश्मन के नाश के लिए या स्त्री को वश मे करने की शिक्षा देता है या इसी सिद्धि के लिए मोहन, मारण, वशीकरण आदि मंत्रों को बताता है वह बतानेवाले गुरु को भगवान शिव ने व तत्वदर्शी पंडितों ने ●निषिद्ध गुरु● कहा है।

अनित्यमिति निर्दिश्य संसारे संकटालयम् ।
वैराग्यपथदर्शी यः स गुरुर्विहितः प्रिये।।

महादेव–

हे प्रिये ! संसार अनित्य और दुःखों का घर है (अतः भवरोग से मुक्ति के लिए आप सतत् जप तप व्रत–उपवास भक्ति संत गुरु सेवा व स्वाध्याय आदि करते रहो और इस दुखालय से मुक्त हो जाओ।)

ऐसा समझाकर जो गुरु वैराग्य का मार्ग बताते हैं वे ●विहित गुरु● कहलाते हैं। ये गुरु मंत्र न भी दें तो मंत्रदाता के समान ही पूज्यनीय हैं।

तत्वमस्यादिवाक्यानामुपदेष्टा तु पार्वति ।
कारणाख्यो गुरुः प्रोक्तो भवरोगनिवारकः।।

हे पार्वती ! तत्त्वमसि आदि महावाक्यों का उपदेश देनेवाले तथा संसाररूपी रोगों का निवारण करनेवाले गुरु●कारणाख्य गुरु● कहलाते हैं।

पर जो तत्त्वमसि आदि महावाक्यों का उपदेश देकर अपरोक्ष ज्ञान देने के लिए सदा तत्पर हों, सभी जिज्ञासाएं

शान्त करने के लिए तत्पर हों जिनके दर्शन से ही आनंद प्राप्त होने लगे जो संसार सागर का नाश करने के लिए निवृत्ति मार्ग को प्रशस्त करें वही परम गुरु हैं। ऐसे गुरु गृहस्थ आश्रम के मनुष्यों को गृहस्थ की अवधि तक संपूर्ण त्याग की आज्ञा न देकर घर में कर्तव्य की आज्ञा तथा घर में ही रहकर महावाक्यों के अभ्यास की आज्ञा देते हैं । और यदि वे गृहस्थ घर

में ही तद्भावित ब्रह्मनिष्ठ हो जायें तो उनको वनवास वानप्रस्थ या घोर तप पंचाग्नि सेवा आदि की आवश्यकता नहीं।

प्रश्न 26 कौन तीनों महानुभाव, स्मरण किये जानेपर शनैश्चरजनित पीड़ाको नष्ट करते हैं?.

1. **श्री गाधि,**
2. **श्रीकौशिक एवं**
3. **श्रीमहामुनि पिप्पलाद –**

ये तीनों महानुभाव, स्मरण किये जानेपर शनैश्चरजनित पीड़ाको नष्ट करते हैं॥

गाधिश्च कौशिकश्चैव पिप्पलादो महामुनिः ।

शनैश्चरकृतां पीडां नाशयन्ति स्मृतास्त्रयः ॥

प्रश्न 27–

श्रीगुरु चरणकमलेभ्यो नमः सनकादि ऋषि देवताओं को नमन गुरुजी नमन! किस तरह अपनी जिज्ञासा गुरु चरणों में रखना चाहिए उसका ज्ञान हमें नहीं है पर एक जिज्ञासा है? रुद्रपद पाने के लिए आप श्री साधना रत– प्रयास रत है, गुरु जी आप श्री से प्रेरित होकर हमें भी **शिव सा पुत्र प्राप्ति की कामना उत्पन्न हुई है** तो वो कामना कैसे पूर्ण हो सकती हैं वो बताने की कृपा करें,हमारा मार्गदर्शन करें।

उत्तर –

अभिलाषा अष्टकम् का अनुष्ठान करें।

प्रश्न 28

हे अक्षयरुद्र जी नमस्कार! **चारों वर्णों में ब्राह्मण श्रेष्ठ है और ब्राह्मण से श्रेष्ठ संन्यासी है** पर मरने के बाद वैकुण्ठ या ब्रह्म लोक में वैश्य और क्षत्रिय भी पहुंच जाते हैं कभी कभी ब्राह्मण या संन्यासी भी मरकर उच्च स्तरीय लोक न जाकर वैतरणी में गिरते हैं या कुम्भीपाक जैसे खतरनाक नरक में (जैसा कि आपने खतरनाक 28 तथा 21 प्रकार के नरक अपनी पुस्तक दुष्कर्म और नरक.... में बताये हैं) ऐसा क्यों ?

प्रश्न कर्ता – सोनम भार्गव

उत्तर– आप ब्राह्मण स्त्री है यह ब्राह्मण वर्ण , क्षत्रिय आदि वर्ण निश्चित ही पुण्य का फल है और कोई वैश्य अतुलनीय धनाढ्य है तो उसका भी अथाह पुण्य मानो। वर्ण का पुण्य अलग होता है धन का अलग । इसमें संदेह नहीं। पर जो ब्राह्मण नौकरी करके या राजा का नौकर होकर कार्य करता है या राजा या मंत्री की जी हुजूरी करके धनवान बनने का सपना देख रहा है वह ब्राह्मण परम गति को नहीं पाता । ब्राह्मण की अपनी एक गरिमा है वह भले ही भूखा मर जाये (मजबूरी में नौकरी तो कर सकता है पर शेष तीनों वर्णों के आसक्त और भोगी पुरुषों की सेवा न करें यह शास्त्र आज्ञा है पर राम कृष्ण या वराह, मत्स्य , हनुमान आदि अवतारों या वेदव्यास जैसे अवतार की सेवा कर सकते हैं क्योंकि ये अवतार चारों वर्णों के स्वामी व जनक हैं भले ही लौकिक रूप से ये हीन योनी या अन्य योनी में हो अथवा अवधूत दत्तात्रेय जी के ज्ञान विज्ञान से जो पुरुष ब्रह्म से एकरूप तद्‌भावित ब्रह्मनिष्ठ होकर चारों वर्णों से परे हो गया वह अपरोक्ष ज्ञाननिष्ठ भी सेवनीय है शिव पुराण की यह आज्ञा है।

76 वर्ष का वह क्षत्रिय उस ब्राह्मण से 100 गुना अधिक श्रेष्ठ है जो वीतरागी होकर लोभ व मोह से मुक्त होकर संन्यास आश्रम स्वीकार कर घर परिवार से भी दूर हो गया और पारीव्राजक उपनिषद से युक्त होकर उस संन्यास आश्रम के यम नियम से भी युक्त है। और यदि कोई वैश्य भी अनन्य भक्त है और आसपास का ब्राह्मण परायी नार की योनी का दर्शन व सेवन कर चुका या घर बनाते समय पीपल काट चुका या मित्र की पत्नी से रतिभोग कर चुका तो वह अधम व नीच ब्राह्मण नरकों में गिरता है ऐसा अधम ब्राह्मण यदि किसी अनन्य भक्त या ब्रह्मभावी के दर्शन भी कर ले तो वह पाप नष्ट कर सकता है ऐसा पद्‌मपुराण में लिखा है। हे सोनम पुत्री ! यह चारों वर्ण कुछ आंशिक पुण्यों का फल अवश्य है पर परम अवधूत संन्यासी, अनन्य भक्त या ज्ञाननिष्ठ अभिन्नभावी से बड़ा से जगत में कोई भी नहीं।

लेकिन हाँ एक बात भी इस अक्षयरुद्र ने ब्राह्मण गीता में लिखी है वह यह कि ब्राह्मण यदि वैराग्यवान होकर संन्यासी हो जाये और संन्यास के बाद अपरोक्ष ज्ञाननिष्ठ हो जाये तो उससे बढ़कर इस लोक में कोई भी नहीं ।

इन्द्र, वरुण , कुबेर आदि भी उसे नमन करते हैं।

यह हमारा मानना है पर हमारा यह भी मानना है कि यदि ब्राह्मण अपने दायित्व का पालन नहीं करके शिखा , यज्ञोपवीत व संध्या का लोप कर चुका अथवा परायी स्त्री की योनी या उस परायी नारी के स्तनों , ओष्ट , कटि , नाभि व जंघाओं को भोग भाव से निहारने में मस्त है या पौर्न चलचित्र से सुख का अनुभव कर रहा है अथवा हस्त मैथुन , लोभ , असत्य आदि महापाप से युक्त है तो उस ब्राह्मण को पद्‌म पुराण में शूद्र घोषित कर दिया गया है अथवा महाभारत में उसके विषय में ऐसा कहा है कि

वह अन्य जाति का बीज है जो ब्राह्मण नारी की योनी से उत्पन्न हो गया वह वर्ण संकर माना जाए और उसे शूद्र , वैश्य या क्षत्रिय भी नमन न करें न ही निमंत्रण दे न ही कर्मकांड करायें। पर यदि कोई वैश्य या अन्य अतुलनीय व विशुद्ध भक्त है या ब्रह्मविद् तो पद्म पुराण, शिव पुराण आदि में उस भक्त या ज्ञानी की महिमा के अनगिनत श्लोक भरे पड़े हैं। विश्वामित्र, अगस्त्य, वेदव्यास , ऋषि श्रृंग तथा इस जन्म के वसिष्ठ की माँ ब्राह्मण स्त्री नहीं पर देख लो 100प्रतिशत ब्राह्मण इन सभी के दास हैं।

दूसरी बात – भस्म धारण करने के लिए चारों वर्णों के नर नारियों के लिए चार अलग अलग मंत्र है तथा चारों आश्रम धारियों के लिए अलग अलग मंत्र

पर यदि इन आठों प्रकार से परे जो अभिन्न भावी अर्थात ब्रह्मनिष्ठ हो गया हो (वह चाहे चाण्डाल हो या वैश्य शूद्र या क्षत्रिय आदि चाहे नारी या अन्य) उसका मंत्र ही अलग है वह आठों प्रकार से अन्य परात्पर ब्रह्म ही है। उसे प्राकृत न जानकर मणिद्वीप का पार्षद या शिव गण माना जाए ऐसा भी घोषित है। और 51 शक्तिपीठ के स्थान पर निवास करने वाला शूद्र या वैश्य भी साधारण स्थान पर रहने वाले ब्राह्मण से श्रेष्ठ है ऐसा श्रीमद्देवीभागवत महापुराण कहता है। और अपरोक्ष ज्ञाननिष्ठ तो सदा स्वतंत्र ही है उसे शास्त्र विधान या विहित अविहित भी नहीं।

प्रश्न–29.

संतोष ही सुख का मूल है समझाएं।

उत्तर–

इन्द्रियोंके लोभग्रस्त होनेसे सभी मनुष्य संकटमें पड़ जाते हैं। जिसके चित्तमें सन्तोष है, उसके लिये सर्वत्र धन–सम्पत्ति भरी हुई है; जिसके पैर जूतेमें हैं, उसके लिये सारी पृथ्वी मानो चमड़ेसे मढ़ी है। सन्तोषरूपी अमृतसे तृप्त एवं शान्त चित्तवाले पुरुषोंको जो सुख प्राप्त है, वह धनके लोभसे इधर– उधर दौड़नेवाले लोगोंको कहाँसे प्राप्त हो सकता है। असन्तोष ही सबसे बढ़कर दुःख है और सन्तोष ही सबसे बड़ा सुख है; अतः सुख चाहनेवाले पुरुषको सदा सन्तुष्ट रहना चाहिये। पर जो गृहस्थ है वह धनार्जन का प्रयास अवश्य करे लेकिन परिणाम में जो भी धन प्राप्त हो उसी से संतोष करे । कम धन मिलने पर शोक न करें अपितु प्रयास मात्र करे। शोक या दुख से धन की प्राप्ति संभव नहीं। मनुष्य का अधिकार कर्म करने तक सीमित है न कि फल पर। अतः परिवार के निमित्त ही पुरुषार्थ करे इस पुरुषार्थ के बदले जो भी प्राप्त हो उस संपदा को ही पत्नी व बच्चों का भाग्य समझा जाए। और स्वयं के लिए कामना न करें। यही सुख का मूल है। अभी देवी अरून्धती ने कहा था कि तृष्णा ही दुख का मूल है। इसमें वित्त की ऐष्णा भी शामिल है अतः बात वही है कि भोग हेतु कामनाएं ही मानव को रुलाती हैं। हम शुद्ध परम तत्व सदा से थे आज हैं और चिरकाल तक अमर ही रहेंगे

हमारे सुख का मूल न तो अधिक धन है न ही पत्नी या पुत्र। ये भार्या व संतान अपने आप सुख दें या अपने आप मिलें तो

ठीक और दूर हो जायें या न मिलें तो दुख न मनाएं जबकि स्वतंत्र हो गए इस एचीवमेंट से नया सुख मनाएं।

विश्वामित्र जी ने कामना को दुख का कारण घोषित कर कहा है कि किसी कामनाकी पूर्ति चाहनेवाले मनुष्यकी यदि एक कामना पूर्ण होती है, तो दूसरी नयी उत्पन्न होकर उसे पुनः बाणके समान बींधने लगती है। भोगोंकी इच्छा उपभोगके द्वारा कभी शान्त नहीं होती, प्रत्युत घी डालनेसे प्रज्वलित होनेवाली अग्निकी भाँति वह अधिकाधिक बढ़ती ही जाती है। भोगोंकी अभिलाषा रखनेवाला पुरुष मोहवश कभी सुख नहीं पाता।

अतः विवेकी पुरुष कामना न कर अपने मूल रूप को जानकर ब्रह्म से एकाकार होकर ब्रह्मसुख पायें। श्री विश्वामित्र जी की यह वाणी विस्तार से पढ़ने के लिए पद्म पुराण देखें पर सार यही है कि कामना ही दुख का कारण है। कामना करना हो तो आध्यात्मिक उपलब्धि (साधन चतुष्ट्य) की कामना करो या हरि हर दर्शन की या सर्वोच्च सत्ता रूपी पराशक्ति की। अपने मित्रों या मोहल्ले वालों को जलाने के लिए घोड़ा गाड़ी बंगला चंगला आदि के लिए कमरतोड़ मेहनत ठीक नहीं।अथवा मंदिर निर्माण या धर्म रक्षा हेतु गौ कन्या संत ब्राह्मण की सेवा का उद्देश्य हो तो उस उद्देश्य से परिश्रम करने पर दुख नही होगा। अथवा 55 के लगभग आयु हो तो स्वयं ही संन्यासी या महात्मा बन जाओ । और सरेंडर हो जाओ।

प्रश्न 30.

अरण्य रोदन प्रार्थना का अर्थ क्या है ?

उत्तर–

वीर्य का रक्षण , संतोष (पर प्रयास अवश्य वह भी अनासक्त होकर), दया करुणा , निन्दा रहितता आदि गुणों के साथ ईश्वर का जप तप व्रत–उपवास शीघ्र फलदायक है। जो लोग भयंकर भोगी हैं ऋतुकाल का ध्यान न रखकर मनमाना अती भोग करते हैं उनकी प्रार्थना अरण्य रोदन के समान व्यर्थ है। ऐसे अरण्य में रोना जहाँ कोई न सुनें वही अरण्य रोदन है।

जो अपनी जवानी सुन्दरी और उसके रूप रस में नष्ट कर डालते हैं वे महामूर्ख हैं। जो जवानी तो भोग में और बची कुची जिन्दगी (सड़ा केला) भगवान को अर्पित करते हैं उनका फल भी बचा कुचा ही मिलता है।

उनका फल बालक ध्रुव के जप तप के फल की तुलना में 16 वी कला के एक अंश के समान भी नहीं।

अधिक का फल सदा अधिक ही होता है फिर चाहे आप निष्कामी हो या सकामी।

आम का सारा रस चूसकर पिचका आम (गुठली गुठली) भगवान को अर्पित करने वाले भगवान को मूर्ख समझते हैं कि वे भगवान उनको सायुज्य पद दे देंगे या कैवल्या।

अरे ! यदि फ्री फोफट ही दया होने लगती तो सालोक्य, सामीप्य, सारूप्य, सायुज्य और कैवल्या इन मुक्तियों के भेद न होते। और सबको श्रीहरि लक्ष्मी या बलभद्र ही बना डालते।

यदि 75 के बुड्ढापने में दया मांगने से ही सब कुछ मिलता तो बालयोगी, युवायोगी या युवा संन्यासी भी इन सब जप तप व्रत–उपवास को छोड़कर 75 के बाद ही जप तप आरंभ करते और दया मांगते। तथा

पिचकी हुई इन्द्रियों के साथ ही सारा अनुग्रह पा लेते। अभी भी क्या बिगड़ा है यदि भोग परिग्रह आदि से भी परमपद मिलने लगता तो अक्षयरुद्र अंशभूतशिव तथा सभी ब्रह्मचारी या गुरुकुल वाले जितेन्द्रिय बालक भी भोग के मार्ग को ही चुनते ।

प्रश्न 31–

महाराज जी प्रणाम हम ज्यादा समय अब एकांतिक होकर रहते है आप ने बताया था की महादेव जी ने आपको दर्शन और अपनी कृपा का अनुग्रह प्रदान किया था यह कब हुआ था थोड़ा हमें बताये इससे हमें उत्साह मिलेगा हमारी आपसे प्रार्थना है कृपया हमें बताये हम किस तरह परमात्मा के साकार स्वरूपों माँ भगवती भगवान शिव या नारायण भगवान के अवतारो श्री राम कृष्ण का साक्षात् दर्शन प्राप्त करके उनका मार्गदर्शन और कृपा प्राप्त कर सकते है इस विषय मे हमें हमारी जिज्ञासा का समुचित और सटीक उत्तर देने की महान कृपा करें यह हमारे लिए कैसे संभव होगा हमारी भावना किसी भी स्वार्थपूर्ण वरदान के लिए नहीं होंगी जिसमे सर्वप्राणियों और सृष्टि का कल्याण छिपा हुआ हो इस विषय मे हमारी जिज्ञासा का समुचित उत्तर देकर अपना अनुग्रह मुझ सामान्य भक्त पर करें आपका आभार.

माँ आप पर सदा कृपालु हो.जय माँ । –गौरव कुमार सिंह जी जिला बस्ती यू.पी.

आपका उत्तर–

हम बी.ई. तृतीय वर्ष में थे पर भक्ति में ही मन लग गया था घर वाले जबरदस्ती कर रहे थे कि पढ़ पढ़। दो ढाई लाख नष्ट कर चुका इंजीनियरिंग कॉलेज में और अब भक्ति का नाटक या पाखंड कर रहा है। या अनर्गल बाते करने लगे वे , कुछ बाते मोह से युक्त भी थी। और वैसे भी आज के जमाने में कौन माता पिता अपनी संतान को साधु बनता देखकर खुश होगा.. ....तथा मोहल्ले वाले या नाते रिस्तेदार भी कटाक्ष करते थे। पर हम इस आरोप तथा कटाक्ष को सहन न कर सके। सोचा अब आर या पार। डैली ताने सुन सुनकर परेशान हो गए और सतत् नाम जप व पूजा आदि के कारण व सरैण्डर करने से 9 पेपर बेक भी हो गए। और 5 रेगूलर के भी.............. इस कारण 2005 के मई माह की कृष्ण पक्ष की चौदस की रात महादेव

के दर्शन के लक्ष्य को लेकर सलकनपुर के घोर वन में भाग गए। वहाँ भयंकर जानवर थे तो सोचा कि या तो जानवर मार देंगे या जहर खा लेंगे। साथ में जहर ले गए थे अथवा हमारे इष्ट शिव जी दर्शन दे ही देंगे। और वे उस जंगल में नहीं आये तो हम मर जायेंगे वापस तभी आयेंगे जब कि कोई हल निकलेगा या शिव जी के दर्शन होंगे। यह सब विस्तृत रूप से हमने शायद संसार में कितना सुख, भैरव गीता या 1035 पृष्ठों से युक्त महाग्रंथ शिव चरित मानस में लिखा है।

फिर होना क्या था रात में जानवरों की आवाज से भयभीत हो गई उस वन में पर जानवर पास न आ सके फिर विष निकाला और रोते रोते 20 मिनट जहर देखते रहे और आखिर सब पी गये।

और फिर जो कुछ हुआ उससे हम कृतकृत्य हो गए। हमारे सामने भगवान शंकर थे । विस्तार से हमने कहीं लिखा भी था। फिर हमने भगवान शिव जी से अपनी सैकड़ो जिज्ञासाओं का समाधान पाया। भैरव गीता उनका ही उपदेश है जिसे हमने पुस्तक रूप में लिख दिया। और उसी भैरव गीता में पहली कविता में इसी कथा की झलक आपको मिल जायेगी। और भी बहुत कुछ है।

प्रश्न 32

हे अक्षयरुद्र अंशभूतशिव जी ! स्तोत्र के संदर्भ में कुछ महत्वपूर्ण बातें बताने का कष्ट करें ।

उत्तर–

1. यदि एक स्तोत्र में दो से लेकर 13या 18 अध्याय या अधिक हो तो अधिक अध्यायों को एक ही बैठक में करना हो तो बीच के अध्यायों के समापन पर इति शब्द व अध्याय शब्द का उच्चारण न करें इससे धन का नाश होता है।
2. स्तोत्र के आरंभ पर अथ शब्द अनिवार्य है।
3. स्तोत्र का पाठ मानसिक करना अनुचित है उसका उच्चारण ही फलदायक है।
4. यदि किसी स्तोत्र का नित्य 11या 21 पाठ अथवा संध्या के समय (तीन समय) 1–1–1 पाठ किया जाये तो वह स्तोत्र साधक का माता के समान ध्यान रखने लगता है।
5. 1000 पाठ से कोई भी स्तोत्र महा फल देता है।
6. 10,000 बार अखंड ब्रह्मचर्य पूर्वक जप से वह स्तोत्र परम से भी परम फलदायक होता है।
7. हरेक शिष्य को नित्य अपने गुरु या किसी संत के उपदेश से एक रक्षक स्तोत्र का पाठ नित्य करना ही चाहिए।

8. मंत्र जप के अनेकों नियम व पटल पद्यतियाँ हैं उनका पालन न करने पर मंत्र सिद्ध नहीं होने वाला पर स्तोत्र सदाबहार हैं उनका पाठ सदा फलदायक है अपने मन से भी स्तोत्र की रचना करके उस स्तोत्र के पाठ से भगवान के दर्शन हो जाते हैं बालक शुक्राचार्य ने भी यही किया था।

प्रश्न 33

आप कितने बड़े सिद्ध हो कि पुरश्चरण आवश्यक ही नहीं ? (लेखक अक्षयरुद्र अंशभूतशिव का ही प्रश्न और उसी का उत्तर)

उत्तर–

पुरश्चरण और सिद्ध अवस्था–

शिष्य थोड़ा–बहुत भी पात्र हो तो यह आज्ञा (कि पुरश्चरण करो) हर सद्गुरु देते हैं। भगवान वेदव्यास जी ने पुरश्चरण की महिमा हर पुराण में लिखी है तो सोचो कौन गुरु उस आज्ञा का उपदेश नहीं देगा ?

यदि गुरु ही कह दे कि पुरश्चरण अनिवार्य नही तुम सिद्ध हो चुके तो बात अलग है पर आप कितने बड़े सिद्ध या कितने बड़े योगी हो यह बात आपके व्यवहार या आपकी विक्षिप्त अवस्था से ही ज्ञात हो जाती है।

मंदिर में चप्पल चोरी हुई नहीं कि बद्दुआ या दुख आरंभ।

जेब से 50का नोट गिरा नही कि गिरते ही 24 घंटे तक मानसिक झटका।

रात आते ही पत्नी को देखते ही रतिभोग की लालसा।

प्रमोशन होते ही खिल खिलकर उचकना और पुत्र पत्नी को बीमारी होने पर या मरने पर सदमा...

घर पर दो चार अतिथि या दो दिन रुक जायें तो मुँह फुलोना....

बात बात पर गाली या चुगलखोरिता की आदत.......

लगातार तीन वर्ष तक अखंड ब्रह्मचर्य का कभी भी पालन न कर सके और बात करते हो अपने आपकी योगसिद्धि की .....वाह रे जमाना।

सुन्दर स्त्री दिखी नहीं कि उसके आगे पीछे डोलते रहते हो या उसकी छवि रात दिन आँखो में घूमती रहती है अथवा क्वांरे हो तो उसी से विवाह के सपने चालू हो जाते हैं। ....

तो सोच लो आप कितने बड़े सिद्ध हो।

गीता मे जिस ब्राह्मी अवस्था या स्थितप्रज्ञता की बात है वह प्राप्त होने पर ही आप अपने आपको धन्य व योगी कह सकते हो (हालांकि उस समय कहने या समझने या सोचने के लिए समय ही नहीं मिलता) अन्यथा सब कुछ ढोंग है। बस अपने आपको झूठमूठ समझाना है।

प्रश्न 34 वृक्ष लगाने की महिमा बतायें?

उत्तर– वृक्ष लगाने की अत्यधिक महिमा है सुनें–

●पीपलका पेड़ लगानेसे मनुष्य धनी होता है।
●अशोक शोकका नाश करनेवाला है।
●पाकड़ यज्ञका फल देनेवाला बताया गया है।
●नीमका वृक्ष आयु प्रदान करनेवाला माना गया है।
●जामुन कन्या देनेवाला कहा गया है।
●अनारका वृक्ष पत्नी प्रदान करता है।
●पीपल रोगका नाशक और
●पलाश ब्रह्मतेज प्रदान करनेवाला है।
●पर जो मनुष्य बहेड़ेका वृक्ष लगाता है, वह प्रेत होता है।
●अंकोल लगानेसे वंशकी वृद्धि होती है।
●खैरका वृक्ष लगानेसे आरोग्यकी प्राप्ति होती है।
●नीम लगानेवालोंपर भगवान् सूर्य प्रसन्न होते हैं।
●बेलके वृक्षमें भगवान् शंकरका और गुलाबके पेड़में देवी पार्वतीका निवास है।
●अशोक वृक्षमें अप्सराएँ और कुन्द (मोगरे)–के पेड़में श्रेष्ठ गन्धर्व निवास करते हैं।
●बेंतका वृक्ष लुटेरोंको भय प्रदान करनेवाला है।
●चन्दन और कटहलके वृक्ष क्रमशः पुण्य और लक्ष्मी देनेवाले हैं। ●चम्पाका वृक्ष सौभाग्य प्रदान करता है।
●ताड़का वृक्ष सन्तानका नाश करनेवाला है।
●मौलसिरीसे कुलकी वृद्धि होती है। ●नारियल लगानेवाला कालान्तर में अनेक स्त्रियोंका पति होता है।
●दाखका पेड़ सर्वांगसुन्दरी स्त्री प्रदान करनेवाला है।
● केवड़ा शत्रुका नाश करनेवाला है। इसी प्रकार अन्यान्य वृक्ष भी जिनका यहाँ नाम नहीं लिया गया है, यथायोग्य फल प्रदान करते हैं। जो लोग वृक्ष लगाते हैं, उन्हें (परलोकमें) प्रतिष्ठा प्राप्त होती है।

प्रश्न 35–माता पिता से बढ़कर कौन ?

उत्तर– ब्रह्म विद्या का उपदेश देने वाले ब्रह्मनिष्ठ माता पिता से बढ़कर है। (श्रीमद्देवीभागवत महापुराण 7/36/24)

कारण –

माता पिता हर जन्म में मिल जाते हैं पर यदि माता या पिता दोनों में से किसी को सम्यक् ज्ञान न हो तो वे स्वयं भी माया मोह से मोहित तथा अशान्त चित्त होकर आजीवन रोते रहते हैं पर ब्रह्मनिष्ठ गुरु तद्भावित करके साक्षात् अक्षय आनन्द का समुद्र बना देते हैं और सदा के लिए उन महावाक्यों से अपरोक्ष ज्ञान की सिद्धि देकर ब्रह्मज्ञान से एकरूप करके धन्य धन्य कर देते हैं।

उस धन्यता के कुछ वाक्य (जो एक उपनिषद में है)

●मैं धन्य हूँ मैं धन्य हूँ ,क्योंकि मैं अब इस नाशवान संसार का दुख बिल्कुल भी नहीं देखता,दुख नाम मात्र मिथ्या ही है जो अविद्या के कारण ही सुनाई दे रहा है परमात्मा के स्वरूप को दुख किस बात का और क्यों, शरीर को जो मिले वो प्रारब्धवश मिलता रहे मैं शरीर नहीं, न ही मन, बुद्धि या चित्त।

●मैं धन्य हूँ मैं धन्य हूँ
क्योंकि मेरा अज्ञान
कभी का विनष्ट हो गया है।

●मैं धन्य हूँ मैं धन्य हूँ क्योंकि मुझे अब कुछ भी करना शेष नहीं ,

●मैं आनंदघन हूँ, परम तत्व हूँ साक्षात् वही ब्रह्म हूँ जो गुणातीत और रूपातीत से गुरु भी कहा जाता है।

●मैं धन्य हूँ मैं धन्य हूँ क्योंकि मुझे जो भी कुछ प्राप्त करना था वह अब (अपने शिवत्व को जानकर ब्रह्म से एकाकार के कारण) सभी कुछ प्राप्त कर लिया ।

●संसार का प्रत्येक शरीर पैदा होता है और कभी न कभी जीवत्वधारी जीव के पूर्व कर्मों के कारण 30से 100 के बीच पुनः उस शरीर का क्षय होना सुनिश्चित ही है उसे उसी के पापों का बार बार दण्ड भी मिलेग। फिर मैं किसका दुख मनाऊँ, आत्मा परमात्मा ही साक्षात् है ...... सोऽहम्. ...

जो अजन्मा और मृत्यु रहित अमर अविनाशी है फिर इस सत्य से तो वह भी कभी नहीं मरता फिर दुख कैसा ?

शांति ,आनंद और अमरता ही सत्य है नश्वरता नहीं।

●मैं धन्य हूँ मैं धन्य हूँ क्योंकि अब मुझे वही दिखाई दे रहा है जो देखने योग्य और सर्वमय शाश्वत् है।

●मैं धन्य हूँ मैं धन्य हूँ
मेरी तृप्ति की क्या
इस लोक में कोई उपमा है?

(संसार के जीवभावी कागज के टुकड़ो को डिग्री या धन रूप में देखकर गदगद हो रहे हैं और भोगों के मिलने पर कुत्तों की तरह लपकते हैं और भोग्य पदार्थों के नाश या स्त्री पुत्र मरण से शोक से आच्छादित हो जाते हैं पर वह शोक मात्र अविद्या और जड़ता है।)

●जो स्वयं के भोगों की प्राप्ति पर भी नहीं उछलता और उन भोगों के नष्ट हो जाने पर भी नहीं रोता उसी को यथार्थ का साक्षात्कार हुआ है।

●मैं धन्य हूँ मैं धन्य हूँ अब मुझे कोई प्रिय या अप्रिय नहीं दिखाई दे रहा........भी सब कुछ एक ही दिखाई दे रहा है।

सोऽहम् सोऽहम् सोऽहम् ....

●मैं धन्य हूँ मैं धन्य हूँ अब मेरा कोई भी बंधन नहीं, मैं मुक्त था, आज मुक्त हूँ और ज्पसस ंसूले मुक्त ही रहूँगा,,,, वास्तव में मुमुक्षा भी अज्ञान ही थी पर कल्याण मार्ग में एक महान उपलब्धि अवश्य ही थी।

●मैं वर्णातीत ब्रह्म, मैं रूपातीत ब्रह्म मैं ही चारों आश्रमों से परे और सब कुछ हूँ, मेरे सिवाय अन्यत्र कुछ भी नहीं मैं ही मैं केवल मैं,

धन्योऽहं धन्योऽहं धन्योऽहं धन्योऽहं ....

●मैं सारे बंधनों और संबंधों से मुक्त एकमात्र परब्रह्म हूँ

●मेरे सिवाय न तो किसी अन्य संज्ञा का अस्तित्व है न ही द्वैत की सत्ता है......

अहो भाग्य विधाता धन्य धन्य,

अहो गुरु धन्य धन्य...........

अहो ज्ञान धन्य धन्य ....

अहो शास्त्र धन्य धन्य ....

जो स्वरूप का बोध कराकर तद्रूप और तद्भावी किया।

सोऽहम्

प्रश्न 36 ब्रह्मचारी कितने प्रकार के होते हैं।

उत्तर–

ब्रह्मचारी चार प्रकार के होते हैं।

1. तीन दिवसी(सावित्र)
2. एक वर्षीय(गृहस्थों को साधना आदि के लिए) (=प्राजापत्य)
3. वैदिक संपूर्ण विद्याप्राप्ती तक या भगवद् दर्शन होने तक व्रतधारी(=ब्राह्म ब्रह्मचारी)
4. विद्या और दर्शन के बाद भी जनकल्याण के लिए आयुपर्यंत ब्रह्मचर्य धारक सर्वोच्च नैष्ठिक ब्रह्मचारी (=बृहत् ब्रह्मचारी)

गाँव के कुछ मूर्ख किस्म के लोग अपने संयमी बच्चों को उनके आजीवन ब्रह्मचर्य से डराते फिरते हैं कि चाहे इस संसार में कोई भी हो उसे विवाह करके संतान पैदा करना जरूरी है यदि आजीवन ब्रह्मचर्य का पालन किया तो परमगति नहीं मिलती और हौआ बनता है वो नैष्ठिक ब्रह्मचारी........। कितने मूर्ख हैं वे लोग जो भागवत जी की कथा पांडालों में सुनते हैं पर उसी भागवत के इस श्लोक को नहीं मानते............

(सावित्रं प्राजापत्यं च ब्राह्मं चाथ बृहत् तथा....3/12/42.)

वे पुत्र वधु के सुख को ही सौभाग्य समझते हैं और आँसुओं की धारा से कुंड का निर्माण करके उसी कुंड में गोता लगाते रहते हैं और कुछ माँ बाप तो इतने खतरनाक होते हैं कि उस ब्रह्मचारी पुत्र को भक्ति और सतत् चिरकाल तक ब्रह्मचर्य का सुनकर शाप और बद्दुआ भी देने से नहीं चूकते।

शाप भले ही दे दें वे पर ये पक्का है कि हरिविमुख करने वाले ऐसे जनक और जननी के यहाँ वे पुनः कभी भी पैदा नहीं होना चाहते।

सुख की आड़ लेकर दुख आते हैं। इस भूलोक पर आये दिन सभी जाते ही जा रहे हैं,
साँस रुकी सब कुछ स्वाहा....
और यहाँ

☹जितना सुख बच्चे के पैदा होने पर होता है उससे 1000 गुना दुख और शोक उसकी मृत्यु पर होता है।

☹ जितना सुख धन मिलने पर होता है उससे भी 1000 गुना दुख रोगशोकदुखादि में धननष्ट होने पर होता है।

☹ जितना सुख प्रेमिका (या पत्नि स्त्री)के मिलन से होता है उससे 1000गुना उसकी मृत्यु या उसका विरह होने पर

⚇ जितना सुख पाँच दस साल तक पद मिलने पर होता है उससे अधिक दुख पदहीन होने पर होता है।

⚇ बड़ा आश्चर्य है कि फिर भी इस दुखालय संसार में लोग बार बार आना चाहते हैं और परम लक्ष्य की अपेक्षा यहीं छोटी मोटी चीजों में (तेरा मेरा....) उलझे रहते हैं।

गीता भी कहती है कि संसार दुखालय है।

एक भक्त भी औसतन 25 साल में अनन्य भक्ति को प्राप्त करता है और पत्नि पुत्र के मरण या रोजी रोटी नौकरी शादी की व्यवस्था करने में ही 55 साल नष्ट कर देता है जितनी भक्ति भक्त जन वैकुंठ में कर पाते है उतनी भूलोक पर प्रारब्ध के थपेड़ो के कारण कर ही नहीं सकते इस कारण दुखालय संसार से मुक्त होने के लिए(सदा के लिए वैकुंठ या गोलोक अथवा मणिद्वीप में स्वतंत्र भक्ति वहीं) मुमुक्षा (मोक्ष की इच्छा चाहे परामुक्ति हो चाहे परमलोक की मुक्ति) बहुत ही उत्तम औषधि है।

इससे राग, मोह ,लोभ और आसक्ति सब तत्क्षण नष्ट हो जाती है।

नोट –

यह मानना मूर्खता है कि वहाँ सत्संग ,भागवत, गीता या संत नही ,वहाँ आपको सूर, तुलसी, मीरा, शंकराचार्य, प्रह्लाद आदि सब मिलेगें।

Till always------

तरक्की का मतलब पद, नाम और खरब पति बनना नहीं।

अंतःकरण की शुद्धि ही परम तरक्की है।

अन्यथा

बड़े बड़े हीरो, हीरोइन,करोड़पति नेता भी आग में स्वाहा हो चुके हैं और जिन लोगों ने पद और धन ऐश्वर्यों की प्राप्ति के लिए पाप किया था वे भले ही आपके सामने 10साल पहले टेलीविजन पर आकर वाह वाही लूट चुके पर 6साल पहले वो जब मरे थे तो अब वही इधर उधर पूंछ हिलाते फिर रहे हैं........ और सब कुछ भूल चुके....... फिर नाम के पीछे क्यों भागना।

प्रश्न 37.

माया अच्छी या मायापति?

उत्तर–

हे मनुष्य गणों ! संसार में माया मिल भी जाये तो होगा क्या?

माया तो मात्र 90 दिन के अनुष्ठान से अथाह मिल जाती है।

पर गारंटी से भक्ति छूट जाती है क्योंकि अतुलनीय धन आने पर उसकी केयरिंग और देखभाल में समय नष्ट होता है। और शत्रु व चोर भय भी ।

अतः प्रभु कृपा से जो भी मिले ठीक है पर

अनन्य भक्ति ही श्रेष्ठ है।

यदि माया (धन संपदा से परिभाषित) से चित्त विश्रांत होता और भगवान मिलते तो हम इंजीनियरिंग जॉब ही करते ...वैसे भी धन कमाने में हममें ट्रिक्स ही बहुत हैं और अन्य 3–4 ऑफर्स का त्याग भी क्यों करते ।

हम तो ऐसे होशियारात्मक बुद्धि वाले छात्र थे ही यदि चाहते तो आज मासिक कम से कम एक लाख कमा रहे होते या 18 लाख का पैकेज अतः बड़ी बड़ी नौकरी करने की इच्छा वालों को ही सेवा करने दो ,

बैसे भी वैकेन्सी कम हैं अतः गरीबों को जाने दो वहां।

पर

पर

पर

अतुलनीय धन (1000करोड़ मान लो) से .....?

मात्र दान और मंदिरों धर्मशालाओं का निर्माण किया जा सकता है पर आपके जाने के बाद वहाँ भी लूटमार मचना आरंभ हो जायेगी। गरीब को दान देने से वह निठल्ले हो जायेंगें और घर पर बैठे बैठे पापपरायण सोच चालू हो जायेगी और वे घर में लड़ाई झगड़े करेंगे खाली बैठे बैठै।

धन से यह जो फल होगा वह मात्र स्वर्ग के 10 मंडलों तक (एक मन्वन्तरतक) सीमित है या कुछ कल्पों तक प्रभु धाम में सालोक्य मुक्ति।

अतः मात्र निष्काम भजन ही उद्धार करेगा।

प्रश्न 38

किसको सुख मिलता है ?

उत्तर– सुख प्राप्ति के लिए अनेक ऋषियों के अनेक मत हैं पर उन सभी का सार समान ही है पद्म पुराण के सृष्टिखण्ड में अध्याय 19 में देवी अरुन्धती के अनुसार–

तृष्णाका आदि–अन्त नहीं है, वह सदा शरीरके भीतर व्याप्त रहती है। दुष्ट बुद्धिवाले पुरुषोंके लिये जिसका त्याग करना कठिन है, जो शरीरके जीर्ण होनेपर भी जीर्ण नहीं होती तथा जो प्राणान्तकारी रोगके समान है, उस तृष्णाका त्याग करनेवालेको ही सुख मिलता है।"

प्रश्न 39

भगवन् ! यदि आपका मुझपर अनुग्रह है तो अब कन्यादानके फलका वर्णन कीजिये। साथ ही उसकी यथार्थ विधि भी बतलाइये।

उत्तर– प्रभु की ही वाणी सुनें–श्रीभगवान् बोले– ब्रह्मन् ! रूपवान्, गुणवान्, कुलीन, तरुण, समृद्धिशाली और धन–धान्यसे सम्पन्न वरको कन्यादान करनेका जो फल होता है, उसे श्रवण करो। जो मनुष्य अपने सामर्थ्य के अनुसार आभूषणोंसे युक्त कन्या का दान योग्य वर को करता है, उसके द्वारा पर्वत, वन और काननोंसहित सम्पूर्ण पृथ्वीका दान हो जाता है ऐसे पिता को अन्य दान महादान की आवश्यकता नहीं।

●जो पिता कन्याका शुल्क लेकर कन्यादान करके उस धन को खाता है, वह नरकमें पड़ता है। जो मूर्ख अपनी पुत्रीको बेच देता है, उसका कभी नरकसे उद्धार नहीं होता।

●जो मूर्ख पिता धन के लोभ से अयोग्य पुरुष या रोगी अथवा वृद्ध पुरुष अपनी कन्या का कन्यादान कर देता है, वह रौरव नरकमें पड़कर अन्तमें चाण्डाल होता है।
(इसीसे विद्वान् पुरुष दामादसे शुल्क लेनेका कभी विचार भी मनमें नहीं लाते।) अपनी ओरसे दामादको जो कुछ दिया जाता है, वह अक्षय हो जाता है।

●पृथ्वी, गौ, सोना, धन–धान्य और वस्त्र आदि जो कुछ दामादको दहेजके रूपमें दिया जाता है, सब अक्षय फलका देनेवाला होता है।

● जैसे कटी हुई डोर घड़े के साथ स्वयं भी कुएँमें डूब जाती है, उसी प्रकार यदि दाता संकल्प किये हुए दानको भूल जाता है और दान लेनेवाला पुरुष फिर उसे याद दिलाकर माँगता नहीं तो वे दोनों नरकमें पड़ते हैं। सात्त्विक पुरुषको उचित है कि वह जामाताको दहेजमें देनेके लिये निश्चित की हुई सभी वस्तुएँ अवश्य दे डाले। न देनेपर पहले तो वह नरकमें पड़ता है; फिर प्रतिग्रह लेनेवालेके दासके रूपमें जन्म ग्रहण करता है।

● ऐसे वर को कन्या न दें पद्मपुराण के अनुसार अनुचित है –

1.जो बहुत खाता हो,
2. अधिक दूर रहता हो,
3.अत्यधिक धनवान् हो (और कन्या का पिता मध्यमवर्ग का हो या निर्धन),
4.जो भले ही धनवान हो पर जिसमें अधिक दुष्टता हो या जो द्विज हो तो संध्याहीन होने पर भी उस मूर्ख वर को कन्या न दें,
5.जिसका कुल उत्तम न हो तथा जिस वर के माता पिता दुष्ट स्वभाव के हों ।
तथा
6.जो मूर्ख हो
इन छःमनुष्योंको कन्या नहीं देनी चाहिये।
इसी प्रकार .

●अतिवृद्ध,

●अत्यन्त दीन,

●रोगी,

●अति निकट रहनेवाले,

●अत्यन्त क्रोधी और

●असन्तुष्ट – इन छः व्यक्तियोंको भी कन्यादान नहीं करना चाहिये।
इन्हें कन्या देकर मनुष्य नरकमें पड़ता है। ऐसे अयोग्य वर को कन्या देने वाला पिता नाश को प्राप्त होता है न कि सुख समृद्धि को।

धनके लोभसे या सम्मान मिलनेकी आशासे जो कन्या देता या एक कन्या दिखाकर दूसरीका विवाह कर देता है, वह भी नरकगामी होता है। जो प्रतिदिन इस परम उत्तम पुण्यमय उपाख्यानका श्रवण करता है, उसके जन्म–जन्मके पाप नष्ट हो जाते हैं।

● जिस पिता की कन्या विवाह के बाद परपुरुष से गमन करती है वह पिता भी नरक का मुख अवश्य देखता है। और जिसकी कन्या पतिव्रता हो वह पिता वैकुण्ठ का अधिकार पा लेता है।

अतः ऋतुकाल नियम के अनुसार ही आदर्श कन्या को उत्पन्न करके परम धाम प्राप्त करना चाहिए अन्यथा नैष्ठिक ब्रह्मचर्य ही उत्तम है।

प्रश्न 40

तिलक कहाँ कहाँ वैष्णव को लगाने पर शीघ्र ही उसके कार्य की सिद्धी होने लगती है। ? तथा चरणोदक संबंध में कुछ कहें?

उत्तर –
पद्मपुराण पाताल खण्ड अध्याय 79 से बता रहे हैं देखिए–

1.ललाटमें केशव जी का निवास ,
2.कण्ठमें श्रीपुरुषोत्तम,
3.नाभिमें नारायणदेव,
4.हृदयमें वैकुण्ठ,
5.बायीं पसलीमें दामोदर,
6.दाहिनी पसलीमें त्रिविक्रम,
7.मस्तकपर हृषीकेश,
8. पीठमें पद्मनाभ,
9–10 .कानोंमें गंगा–यमुना तथा
11–12.दोनों भुजाओंमें श्रीकृष्ण और हरिका निवास समझना चाहिये।
उपर्युक्त स्थानोंमें तिलक करनेसे ये बारह देव रूप संतुष्ट होते हैं।
तिलक करते समय इन बारह नामोंका उच्चारण करना चाहिये। जो ऐसा करता है, वह यदि किसी भी कारण वश अधिक जप तप न भी कर पाये तो भी सब पापोंसे शुद्ध होकर विष्णुलोक को जाता है।

चरणोदक–

भगवान्के चरणोदकको पीना चाहिये और पुत्र, मित्र तथा स्त्री आदि समस्त परिवार के मस्तक व शरीरपर उसे छिड़कना चाहिये। श्रीविष्णु जी का चरणोदक यदि पापी अथवा नास्तिक को भी उपलब्ध हो जाये तो भी उस पापी के 100 करोड़ जन्मों के संचित पापों का नाश हो जाता है परंतु प्रारब्ध भोग का दुख तो यथार्थ ज्ञान से ही भाषित नहीं होता अन्यथा सबको मानसिक विक्षोभ होकर ही रहता है पुण्य भले ही इकट्ठे हों पर पराविज्ञान के बिना शाश्वत सुख नहीं मिलता। ज्ञान की महिमा श्रीकृष्ण गीता, ईश्वर गीता और देवी गीता में भी अद्वितीय है।

अतः इसी कारण मनुष्य को आत्म ज्ञानी संतों के सत्संग का लाभ अनिवार्य रूप से लेना ही चाहिए; बिना ज्ञान के चित्त की विश्रांति किसी भी तीर्थ स्थल की सेवा या महान से भी महान यज्ञो, तिलक, यज्ञोपवीत अथवा पूजा पाठ यम नियम आदि से भी संभव नहीं ।

यह सब संतों से मिलन में सहायक हो सकते हैं पर जीवन्मुक्त अवस्था के लिए, दुख रूपी रोग के नाश के लिए ब्रह्मनिष्ठ ही उत्तम औषधि है।

इसी कारण अवधूत संन्यासी को देह पर कुछ भी उपाय की आवश्यकता नहीं होती क्योंकि वे पराविज्ञान से गुणातीत और रूपातीत हो चुके हैं। विभिन्न विभिन्न उपायों से विष्णुलोक या शिवलोक तो मिल सकता है पर संतत्व या मुक्तावस्था का आना असंभव है।

प्रश्न 41

शिव नैवेद्य संबंधित संशय का नाश करें हे अंशभूतम्

उत्तर–

श्रीशिव महापुराण विद्येश्वर संहिता अध्याय 22 से शिव नैवेद्य संबंधित संशय का नाश–

जिन मनुष्योंने अन्य देवोंकी दीक्षा ली है और शिवकी भक्तिमें वे अनुरक्त रहते हैं, उनके लिये शिवनैवेद्यके भक्षणके विषयमें निर्णयको प्रेमपूर्वक आप सब सुनें ।।

1. शालग्राम में उत्पन्न शिवलिंग,
2. रसलिंग (पारदलिंग),
3. पाषाणलिंग,
4. रजतलिंग,
5. स्वर्णलिंग,
6. देवों और सिद्ध मुनियोंके द्वारा प्रतिष्ठित शिवलिंग,
7. केसरके बने हुए लिंग,
8. स्फटिकलिंग,
9. रत्नलिंग और
10. ज्योतिर्लिंग आदि समस्त शिवलिंगोंके लिये समर्पित नैवेद्यका भक्षण करना चान्द्रायण व्रतके समान फल देनेवाला कहा गया है ।।

यदि ब्रह्महत्या करनेवाला भी स्नान के बाद शिवका पवित्र निर्माल्य धारण करता है और उसे खाता है, उसके सम्पूर्ण पाप शीघ्र ही नष्ट हो जाते हैं।

पर जहाँ चण्डका अधिकार हो, वहाँ शिवलिंगके लिये समर्पित नैवेद्यका भक्षण मनुष्योंको नहीं करना चाहिये; जहाँ चण्डका

अधिकार न हो, वहाँ भक्तिपूर्वक भक्षण करना चाहिये तथा

1.बाणलिंग,

2.लौहलिंग,

3.सिद्धलिंग,

4.स्वयम्भूलिंग और

अन्य समस्त प्रतिमाओं (रुद्र मूर्ति) पर भी चण्डका अधिकार नहीं होता है,पर चण्डके द्वारा अधिकृत होनेके कारण अग्राह्य शिव नैवेद्य ,पत्र–पुष्प फल और जल–यह सब शालग्रामशिलाके स्पर्शसे पवित्र हो जाता है।। जो विधिपूर्वक शिवलिंगको स्नान कराकर उस स्नानजलको तीन बार पीता है, उसके समस्त पाप शीघ्र ही नष्ट हो जाते हैं।। हे मुनीश्वरो ! शिवलिंगके ऊपर जो भी द्रव्य चढ़ाया जाता है, वह अग्राह्य है और जो लिंगके स्पर्शसे बाहर

है, उसे अत्यन्त पवित्र जानना चाहिये।। सार समझो जो प्रसाद महादेव के निकट कटोरी में आप भोग के रूप में अर्पण करते हो वह प्रेम से स्वीकार करें पर शिवलिंग के मस्तक पर अर्पित प्रसाद को पवित्र जगह या नदी में ठंडा कर दें। इस प्रकार यह शिव नैवेद्य का वर्णन हुआ।

अन्यदीक्षायुजां नृणां शिवभक्तिरतात्मनाम्।
शृणुध्वं निर्णयं प्रीत्या शिवनैवेद्यभक्षणे।।

शालग्रामोद्भवे लिङ्गे रसलिङ्गे तथा द्विजाः ।
पाषाणे राजते स्वर्णे सुरसिद्धप्रतिष्ठिते।।

काश्मीरे स्फाटिके राले ज्योतिर्लिङ्गेषु सर्वशः।
चान्द्रायणसमं प्रोक्तं शम्भोर्नैवेद्यभक्षणम्।।

ब्रह्महापि शुचिर्भूत्वा निर्माल्यं यस्तु धारयेत् ।
भक्षयित्वा द्रुतं तस्य सर्वपापं प्रणश्यति।।

चण्डाधिकारो यत्रास्ति तद्भोक्तव्यं न मानवैः ।
चण्डाधिकारो नो यत्र भोक्तव्यं तच्च भक्तितः।।

बाणलिङ्गे च लौहे च सिद्धे लिङ्गे स्वयम्भुवि ।
प्रतिमासु च सर्वासु न चण्डोऽधिकृतो भवेत्।।

स्नापयित्वा विधानेन यो लिङ्गस्नपनोदकम् ।
त्रिः पिबेत्त्रिविधं पापं तस्येहाशु विनश्यति ।।

अग्राह्यं शिवनैवेद्यं पत्रं पुष्पं फलं जलम् ।
शालग्रामशिलासङ्गात्सर्वं याति पवित्रताम् ।।

प्रश्न 42

आधा फल नष्ट करना हो तो खाते रहो। से आपका तात्पर्य क्या है?

उत्तर–

गृहस्थ लोग और शैव गृहस्थ भी कृष्ण पक्ष की एकादशी की रात में शिव जी की पूजा करके एक समय भोजन कर सकते हैं पर शैव या वैष्णव शुक्ल पक्ष की एकादशी को अन्न न खाएं।

अति कमजोर , गर्भवती, शिशु , वृद्ध आदि लोग इस दिन चावल न खायें और यथासंभव जल कम ग्रहण करें । और कथा वाचको के लिए एक महत्वपूर्ण सूचना –

जिसके अन्नको खाकर मनुष्य जबतक कथा–श्रवण आदि सद्धर्मका पालन करता है, उतने समयतक उसके किये हुए पुण्यफलका आधा भाग दाताको मिल जाता है; इसमें संशय नहीं है।

शिव पुराण विद्येश्वर संहिता अध्याय 13 श्लोक 70 से ....अतःसंभव हो तो तीर्थ या भंडारे में अपनी व्यवस्था स्वयं करें ताकि आपको अपनी पूजा , पाठ , कथा आदि का पूरा फल मिल सके। भले ही छः माह में एक बार जाओ पर अपनी व्यवस्था खुद ही करके जाओ।

प्रसादी लेना पड़े तो तनिक सी मात्रा लीजिए न कि भरपेट। ताकि प्रसाद का भी सम्मान हो।

अतः आधा फल नष्ट करना हो तो खाते रहो।

प्रश्न 43

महाराज ! ऐसा क्या प्रबल प्रारब्ध बन जाता है, जिससे माताओ के प्रति दुर्व्यवहार बढते जा रहा है भारतीय समाज मे , महिलाओ की सुरक्षा के लिए प्रयास होना चाहिए। – राहुल शर्मा

उत्तर– राहुल शर्मा ! प्रयास अवश्य होना चाहिए पर यह शोषणादि हर युग में होते थे। इसमें महिला के प्रारब्ध का दोष नहीं माना जाता।

मात्र दुराचारी को ही दण्ड मिलता है कालान्तर में।

देश विदेश में अनेक पापाचरण वाले तमोगुणी घूम रहे हैं उनकी दृष्टि बहु बेटियों पर ही होती है उनको तत्काल फांसी का प्रावधान जब तक नहीं होगा तब तक ये लोग नहीं डरने वाले।

आम मनुष्य कुछ नहीं कर सकता।

जिसने कुबुद्धि ने पाप का सोचा है पर किया नही उसको आप कानून या हम दण्ड दे नहीं सकते। और जिसने घटना को अंजाम दे दिया उसको मारने का अधिकार कानून ने किसी को नहीं दिया। यदि अति क्रोध में आकर आप (पापी को ढूंढ कर) मार डालो तो हमारा ही कानून आपको हत्या का दण्ड देगा न कि आपकी धर्मपरायणता के गीत गायेगा।

ऐसे में मनुष्य मजबूर हो जाता है और वह यथासंभव मात्र अपनी ही बहन बेटी तक सोच पाता है। जब तक कठोर कार्यवाही का आदेश नही होगा तब तक कुछ नहीं होने वाला।

प्रश्न 44

दक्षिणायन के छः माह में मरने वाला क्या मुक्ति नहीं पाता ?

उत्तर– हाँ। यह लौकिक नर नारियों के लिए अनिवार्य सिद्धांत माना जाए पर वह जीवन्मुक्त अर्थात ब्रह्मनिष्ठ है तो उसकी परमगति तो हरपल ही है । तद्भावित के लिए क्या समय ? क्या घर ?या आश्रम? वह तो चाण्डाल के घर प्राण त्यागे चाहे ब्राह्मण के घर उस पर कोई प्रभाव नहीं होता। यह उत्तरायण संबंधित (व शुक्ल , दिन आदि भी) आपने भगवान श्रीकृष्ण की गीता में पढ़ा ही होगा।

पर हमारे अनुसार यह तद्भावित ब्रह्मनिष्ठ पर लागू नही होता शेष सब पर लागू मान सकते हो।

समझने के लिए– आपकी गुरु परंपरा को ही सर्च कर लो पता चल जायेगा कि पिछले 5 गुरुओं में से 3–4 दक्षिणायन अथवा कृष्ण पक्ष में ही देह हीन हुए हैं।

प्रश्न 45

किसको पाप लिप्त नहीं करते।

उत्तर– गीता 4/20–23 में देखें।

प्रश्न 46

आत्मा (स्वयं) का नाश करने वाले कौन कौन से मुख्य कारक हैं ।

उत्तर – काम क्रोध और लोभ गीता 16/21

प्रश्न 47

क्या श्रीराम का जन्म या प्रकाट्य इसी चतुर्युगी के त्रेतायुग में हुआ था?

उत्तर–

श्रीराम 24वीं चतुर्युगी के त्रेतायुग में अवतरित हुए थे, न कि इस चतुर्युगी में ।

यही सच है । उसी त्रेतायुग में स्वयं श्रीनारायण ने दशरथ के यहाँ 'राम' नाम से अवतार लिया था। अर्थात

श्रीराम इस चतुर्युगी के त्रेतायुग में ही नहीं, बल्कि 24वें त्रेतायुग में जन्मे थे–

'चतुर्विंशे युगे रामोवसिष्ठेन पुराधसा ।
सप्तमो रावणस्यार्थे जज्ञे दशरथात्मजः ।।'

(वायुपुराण, 98.72; मत्स्यमहापुराण, 47.245)✍

'चतुर्विंशयुगे चापि विश्वामित्रपुरः सरः ।
रामो दशरथस्याथ पुत्रः पद्मायतेक्षणः ।।'
(हरिवंशपुराण, 1.41.121; ब्रह्माण्डमहापुराण, 104.11)

✍'अस्मिन्मन्वन्तरे ऽतीतेचतुर्विंशतिकेयुगे ।
भवतीर्यरघुकुलगृहे दशरथस्यच ।।'
(पद्ममहापुराण, 8.66–67)

विष्णुमहापुराण (3.3.18) में श्रीराम को स्पष्टतः 24वें त्रेतायुग में ही बताया गया है। विष्णुमहापुराण में 7वें वैवस्वत मन्वन्तर के गत 27 चतुर्युगों के एवं वर्तमान 28वें चतुर्युग के क्रमानुसार 28 वेदव्यासों के नाम गिनाए गये हैं।

(इसमें स्पष्ट रूप से अंकित है कि 24वें त्रेतायुग में हुए (24वें) वेदव्यास भृगुवंशीय ऋक्ष थे जो बाद में वाल्मीकि कहलाये)

'ऋक्षोऽभुद्भार्गवस्तस्माद्वाल्मीर्किऽभिधीयते ।
तस्मादस्मत्पिता शक्तिर्व्यासस्मादहं मुने।।'

रामकथा के अनुसार महर्षि वाल्मीकि और श्रीराम समकालीन थे और देवी सीता ने महर्षि वाल्मीकि के आश्रम में ही लव और कुश को जन्म दिया था, अतः विष्णुमहापुराण में संकलित वेदव्यासों की सूची से भी यह सिद्ध हो जाता है कि श्रीराम 24वें त्रेतायुग में अवतीर्ण हुए थे, 28वें में नहीं।

महाभारत (शान्तिपर्व, 339.85) के अनुसार त्रेता और द्वापर की सन्धि में श्रीरामावतार सिद्ध होता है–

'संध्यंशे समनुप्राप्ते त्रेतायां द्वापरस्य च ।
अहं दाशरथी रामोभविष्यामि जगत्पतिः ।।'

इस दृष्टि से विक्रम संवत् 2071 और ईसवी सन् 2014 तक श्रीरामजन्म के 1 करोड़ 81 लाख 49 हज़ार और 116 वर्ष होते हैं–

श्रीरामजन्मपर्यंत 24वाँ त्रेता, द्वापर, कलियुग 12,96,000 वर्ष

25, 26, 27वाँ चतुर्युग (3गुणा 43,20,000 वर्ष=) 1,29,60,000 वर्ष

28वाँ सत्ययुग, त्रेता, द्वापर 38,88,000 वर्ष

ईसवी सन् 2008 तक 28वाँ कलियुग (3102 + 2014) 5,116 वर्ष

1,81,49,116 वर्ष

किन्तु केवल इसी एकमात्र साक्ष्य के आधार पर श्रीराम को 28वें त्रेतायुग का नहीं कहा जा सकता, क्योंकि एक तो पुरातात्त्विक सामग्रियों का तिथि–निर्धारण, और वही भी लाखों–करोड़ों वर्ष प्राचीन वस्तु का, अत्यन्त टेढ़ा कार्य है; इसमें भूल की पूरी–पूरी सम्भावना रहती है, यह बात प्रसिद्ध इतिहासकार डा. देवसहाय त्रिवेद ने अपने एक आलेख 'कार्बन से तिथि–निर्धारण' में स्वयं स्वीकार किया है।

दूसरा, श्रीराम को 28वें त्रेतायुग में रखने पर सम्पूर्ण पुराण–साहित्य पर एक बड़ा प्रश्न–चिह्न लग सकता है, क्योंकि सारे पुराणों में प्रतिपाद्य विषय प्राचीन भारतीय इतिहास का एक संयत लेखा प्रस्तुत करते हैं और इनके आधार पर भगवान् श्रीकृष्ण, महाभारत युद्ध और भगवान् बुद्ध के काल सहित अनेकानेक ऐतिहासिक गुत्थियों को सुलझाया जा चुका है। अतः हमें श्रीराम के कालखण्ड के लिये 'नासा' द्वारा निर्धारित तिथि 17,50,000 वर्ष पूर्व को न अपनाकर राम का समय 1,81,49,116 वर्ष पूर्व को अपनाना चाहिये।

प्रश्न 48

अठारह पुराणों के नाम बताएं?

उत्तर– इन 18 पुराणों के नाम जो शिव पुराण की उमा संहिता के अध्याय 44 तथा श्रीमद्भागवत महापुराण के 12वें स्कन्ध के अध्याय 13 में एक समान है। सुनें –

बस थोड़ा–बहुत क्रम में अंतर है पर 19वाँ कोई भी पुराण नहीं पर हाँ उपपुराण अवश्य 18 हैं वे अलग हैं।

यह क्रम हम शिवपुराण से दे रहे हैं पर श्लोक संख्या श्रीमद्भागवत महापुराण के द्वादश स्कन्ध से ।

1.ब्रह्म (10,000 श्लोक)
2.पद्म(55,000 श्लोक)
3.विष्णु (23000 श्लोक)
4.शिव महापुराण (24000 श्लोक)
5.भागवत (18000 श्लोक)–

शिव पुराण उमा संहिता अध्याय 44 का श्लोक 129 यह घोषित करता है कि भागवत श्रीमद्देवीभागवत नाम से ही इस लोक में सुप्रसिद्ध है।

भगवत्याश्च दुर्गायाश्चरितं यत्र विद्यते।
तत्तु भागवतं प्रोक्तं ननु देवी पुराणकम्।।

(नोट– देवी और कृष्ण दो भेद ; दोनों में समान स्कन्ध और श्लोक संख्या भी समान हैं ऐसा सुना है पर आधुनिक कृष्ण भागवत में 14500 के लगभग ही श्लोक उपलब्ध है) श्रीधर की टीका में इन दोनों के संदर्भ में एक डाऊटेबिल थोट भी है पर वह खास नहीं ; क्योंकि मानव को ज्ञान से मतलब होना चाहिए न कि उवाच प्रोसेसिंग से कि किसने किससे और कब कहा, शिव पुराण में कहा है कि 18 पुराणों में जो भागवत नाम आया है वह मात्र पराशक्ति (देवी) के चरित से युक्त है न कि श्रीकृष्ण से युक्त , और परीक्षित का उद्धार देवी भागवत से ही हुआ था अन्य किसी भी प्रकार से नहीं , क्योंकि (श्रीधर टीका और भविष्य पुराण तथा में कहा है कि देवीभागवत की तर्ज पर एक परम भक्त ने श्रीमद्भागवत की रचना करने की इच्छा की , वह सन् 1300 के समीप वृन्दावन गया और उसने कठोर तपस्या की तब भगवान परब्रह्म श्रीकृष्ण प्रकट हुये , तब भगवान ने उस भक्त को त्रिकालज्ञ बनाया तब उसने श्रीमद्देवीभागवत महापुराण के समान श्लोकों में श्रीमद्भागवत महापुराण की रचना की और उसमें जो भी लिखा वह हर श्लोक परम सिद्ध ही है क्योंकि भगवान श्रीकृष्ण ने ही उसे आज्ञा दी कि हे भक्तराज जो भी आपके द्वारा रचित इस पुराण को पढ़ेगा वह मेरा धाम निश्चित ही पायेगा और कालान्तर में इस पुराण को ही वैष्णवजन देवीभागवत के समतुल्य स्थान देंगे और इसके हर श्लोक के पाठ से अनेक यज्ञों, दानों और समस्ततीर्थस्थल पर यात्रा करने का फल भी मिलेगा और गोलोक भी , अतः दोनों ही प्रकार से यह भागवत स्वयं सिद्ध ही है और परम फल देने वाली कल्पलता है। अतः शैव व शाक्त लोग भी इस वैष्णवीय भागवत का परम सम्मान करें और वैष्णव मत के अनुसार 18 पुराणों में जो भागवत है वही वेदव्यास जी की अंतिम पुराण हैं। अक्षयरुद्र अंशभूतशिव यह कहता है कि दोनों मत वाले उलझे न जो श्रीकृष्णमयी

श्रीमद्भागवत महापुराण पढ़ेंगे वह गोलोक ही जायेंगे और जो देवी भागवत पढ़ेंगे वे मणिद्वीप जायेंगे। काहे फालतू में झगड़े करते हो। कहीं लड़ाई करते करते मर गए तो (सात दिन में परीक्षित तो तर गए पर आप माराकाटी लड़ाई झगड़े में निश्चित ही नरक जाओगे । यथार्थ भागवत श्रीमद्देवीभागवत है या कृष्ण भागवत यह केवल 1000 साल पुरानी पाण्डुलिपी ही प्रमाणित करेगी। पाण्डुलिपि के अभाव में यदि आप दोनों संप्रदाय के लोग लड़ते हो तो मूर्खता है। खैर आज एक भक्त ने प्रश्न किया कि अठारह पुराणों में कौन कौन सी है इस कारण बता रहे हैं जो ईश्वर की कृपा से आपके प्रश्न पुस्तक की शोभा बनेगा यह प्रश्न। दोनों की समान फलश्रुति है और श्रीकृष्ण चरित्र से युक्त होने से हमारे अनुसंधान के अनुसार यही नंबर वन ग्रंथ है वैष्णवों का ; इसमें ब्रह्मवैवर्त पुराण और विष्णु पुराण का ही सार समाया है जो कि श्रीकृष्णद्वैपायन जी ने लिखी;

6.भविष्य पुराण (14000)
7.नारदीय (25000)
8. मार्कण्डेय (9000)
9.अग्नि(15400 श्लोक)
10.ब्रह्मवैवर्त (18000 श्लोक)
11.लिंग (11000 श्लोक)
12. वराह (24000 श्लोक , पर यह गिनना पड़ेगा क्योंकि इसका आकार अत्यन्त लघु है जो आजकल प्राप्त हो रहा है ऐसा लगता है कि इसमें 9000 के लगभग ही कुल श्लोक होंगे)
13.वामन (10,000 श्लोक)
14. कूर्म (17000 श्लोक)
15.मत्स्य (14000 श्लोक)
16.गरुड (19000 श्लोक)
17. स्कन्द (81,000+101 इसके लिए श्लोक 12/13/7 पढ़े श्रीमद्भागवत में)
तथा
18.ब्रह्माण्ड(12000 श्लोक) ये अठारह पुराण कहे गये हैं।

शिवजीका यश सुननेवाले मनुष्योंको ये 18 पुराण यश तथा पुण्य प्रदान करते हैं ।

सूतजी बोले– हे वेदवेत्ताओंमें श्रेष्ठ! आपने जिन अठारह पुराणोंके नाम कहे हैं, अब उनका निर्वचन कीजिये ॥ यह शिवपुराण के अनुसार लिख रहे हैं हम।

व्यासजी बोले – (हे सूत!) यही प्रश्न ब्रह्मयोनि तण्डीने नन्दिकेश्वरसे किया था, तब उन्होंने जो उत्तर दिया था, उसीको मैं कह रहा हूँ ॥

नन्दिकेश्वर बोले – हे तण्डि मुने! साक्षात् चतुर्मुख ब्रह्मा स्वयं जिसमें वक्ता हैं, उस प्रथम पुराणको इसीलिये ब्रह्मपुराण कहा गया है ॥

जिसमें पद्मकल्पका माहात्म्य कहा गया है, वह है ॥

दूसरा पद्मपुराण कहा गया पराशर ने जिस पुराणको कहा है, वह विष्णुका द्य ज्ञान करानेवाला पुराण विष्णुपुराण कहा गया है। पिता एवं पुत्रमें अभेद होनेके कारण यह व्यासरचित भी माना जाता है ॥ जिसके पूर्व तथा उत्तरखण्डमें शिवजीका विस्तृत चरित्र है, उसे पुराणज्ञ शिवपुराण कहते हैं ॥ **जिसमें भगवती दुर्गाका चरित्र है, उसे देवीभागवत नामक पुराण कहा गया है ॥**

नारदजीद्वारा कहा गया पुराण नारदीय पुराण कहा जाता है । हे तण्डि मुने! जिसमें मार्कण्डेय महामुनि वक्ता हैं, उसे सातवाँ मार्कण्डेयपुराण कहा गया है। द्य अग्निद्वारा कथित होनेसे अग्निपुराण एवं भविष्यका वर्णन होनेसे भविष्यपुराण कहा गया है ।

ब्रह्मके विवर्तका आख्यान होनेसे ब्रह्मवैवर्त– पुराण कहा जाता है तथा लिंगचरित्रका वर्णन होनेसे लिंगपुराण कहा जाता है ॥

हे मुने! भगवान् वराहका वर्णन होनेसे बारहवाँ वाराह पुराण है, जिसमें साक्षात् महेश्वर वक्ता हैं और स्वयं स्कन्द श्रोता हैं, उसे स्कन्दपुराण कहा गया है।

वामनका चरित्र होनेसे वामनपुराण है। कूर्मका चरित्र होनेसे कूर्मपुराण है तथा मत्स्यके द्वारा कथित (सोलहवाँ)मत्स्यपुराण है ॥

जिसके वक्ता स्वयं गरुड हैं, वह (सत्रहवाँ) गरुडपुराण है। ब्रह्माण्डके चरित्रका वर्णन होनेके कारण (अठारहवाँ) ब्रह्माण्डपुराण कहा गया है ॥

●●●●●●●●●●●●●●●●●

भागवत पुराण–

भागवत दो हैं। एक श्रीमद् कृष्ण भागवत और दूसरा श्रीमद्देवीभागवत महापुराण।

श्री विष्णु या नारायण अथवा श्रीकृष्ण जी के भक्त कृष्ण मयी श्रीमद्भागवत को 18 पुराणों में गिनते हैं जबकि देवी के भक्त देवी भागवत को।

आइये दोनों की विषय सूची देखें।

श्रीमद्भागवत वैष्णव ग्रंथ है जबकि देवी भागवत शाक्त ग्रंथ है। बस यही भेद है। तत्वतः हरि और शिव, दुर्गा और श्री समान ही हैं। ये सब कुछ मात्र एक परम तत्व है।

श्रीमद्भागवत –

श्रीमद्भागवत में 12 स्कंध हैं। सभी स्कंधों को मिलाकर 335 अध्याय हैं। इसमें 18000 श्लोक हैं पर गिनने पर 14000–15000 के आसपास ही निकलते हैं, शायद कुछ श्लोक हटा दिए या मिले ही नहीं इस कारण जितने मिले उतने ही प्रकाशित कर दिये।

वर्णित विषय

पहला स्कंध– नैमिष क्षेत्र की कथा, अवतार कथा के प्रसंग में भगवान श्रीकृष्ण के चरित्र का वर्णन, श्री कृष्ण द्वारा परीक्षित की रक्षा, श्री कृष्ण का द्वारिका गमन, धृतराष्ट्र का स्वर्ग के लिए प्रस्थान इत्यादि।

दूसरा स्कंध– विष्णु की भक्ति की महिमा, विराट सृष्टि का वर्णन, विराट पुरुष की विभूति का वर्णन इत्यादि। दूसरे स्कंध से ही भागवत की कथा का आरंभ होता है।

तीसरा स्कंध– विदुर–उद्धव संवाद, कृष्ण द्वारा कंस का वध, विराट पुरुष की सृष्टि की कथा, ब्रह्मा की सृष्टि, भगवान विष्णु के वराह अवतार की कथा, कपिल मुनि का जन्म, ध्यान में योग के द्वारा आत्म स्वरूप का ज्ञान इत्यादि।

चौथा स्कंध– मनु की कन्याओं का वर्णन, दक्ष का यज्ञ, ध्रुव के पराक्रम का वर्णन, राजा पृथु द्वारा अश्वमेध यज्ञ इत्यादि।

पांचवां स्कंध– प्रियव्रत की कथा, भगवान विष्णु का जन्म, राजा भरत का विवाह, सुमेरु पर्वत के आसपास का वर्णन, समुद्र सहित छह द्वीपों का वर्णन, सूर्य की गति, चंद्रमा और उसकी गतियों, शेषनाग इत्यादि।

छठा स्कंध – प्रजा की रचना करने के लिए दक्ष का हरिभजन, इंद्र को नारायण कवच का उपदेश, वृत्रासुर की कथा, चित्रकेतु की कथा, दिति के पुंसवन व्रत की कथा इत्यादि।

सातवां स्कंध– भगवान विष्णु के नरसिंह अवतार की कथा और हिरण्यकशिपु का वध, चारों आश्रमों के धर्म का वर्णन इत्यादि।

आठवां स्कंध– स्वायंभुव, स्वारोचिष, उत्तम और तामस इन चार मनुओं का वर्णन, गजेंद्र मोक्ष का वर्णन, समुद्र मंथन का वर्णन, भगवान विष्णु का वामन अवतार एवं मत्स्य भगवान की लीलाओं का वर्णन इत्यादि।

नवां स्कंध– वैवस्वत मनु के पुत्र का वंश वर्णन, मांधाता के जामाता सौभरि की कथा, कुश और इक्ष्वाकु के पुत्र शशाद के कुल का वर्णन, निमि के वंश का वर्णन, परशुराम के पिता जमदग्नि का वध, विश्वामित्र के वंश की कथा, नहुष के पुत्र ययाति की कथा, दिवोदास की कथा, अनु द्रुहु व तुर्वसु के वंश की कथा इत्यादि।

दसवां स्कंध– भगवान विष्णु के कृष्ण अवतार की कथा कही गई है। कृष्ण के जन्म, उनकी लीलाओं, कंस का वध, कृष्ण के विवाह, सुदामा की कथा, युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ, सुभद्रा हरण इत्यादि।

ग्यारहवां स्कंध– यदुवंश के विध्वंस के लिए मूसल के पैदा होने की कथा, श्री कृष्ण का वैकुंठ गमन, विष्णु के अवतारों की विभूति का वर्णन, ज्ञान की कथा, आत्मा और अन्य सब पदार्थों की उत्पत्ति और नाश, भक्ति योग का वर्णन, कुसंग से योग मार्ग में रुकावट इत्यादि।

बारहवां स्कंध– कलियुग का प्रभाव, वर्णसंकरता का वर्णन, मगध वंश के भविष्य के राजाओं की नामावली, कल्कि अवतार की कथा, राजा परीक्षित को मोक्ष की प्राप्ति, जनमेजय का सर्प यज्ञ, पुराणों के लक्षण, महापुरुषों का वर्णन, मार्कण्डेय की तपस्या इत्यादि।

श्रीमद्देवीभागवत– श्रीमद्भागवत की तरह देवी भागवत में भी 12 स्कंध हैं। इसकी भी श्लोक संख्या 18000 ही है। इसमें कुल 317 अध्याय हैं।

वेदव्यास जी ने मात्र एक भागवत लिखा था दो नहीं।

शाक्त भक्तों के अनुसार केवल श्रीमद्देवीभागवत ही वेदव्यास जी द्वारा रचित हैं। और इसी मे 18000 श्लोक है। इसमें देवी के विराट रूप के दर्शन और देवी गीता है।

वर्णित विषय–

पहला स्कंध– पुराण के लक्षण, 18 महापुराणों के नाम, उपपुराणों के नाम, शुकदेव जी के जन्म व जीवन की कथा, नारद–व्यास संवाद, हयग्रीव अवतार की कथा, मधु–कैटभ दैत्यों की कथा, बृहस्पति की स्त्री तारा के साथ चंद्रमा का मेल–मिलाप, पुरूरवा का जन्म, धृतराष्ट्र, विदुर व पांडु की उत्पत्ति की कथा इत्यादि।

दूसरा स्कंध– सत्यवती की कथा, मत्स्यगंधा की कथा, व्यासदेव के जन्म की कथा, महामिष राजा का वृतांत, राजा शांतनु की उत्पत्ति व गंगा से विवाह, कर्ण की जन्म कथा, धृतराष्ट्र की मृत्यु, श्रीकृष्ण का वैकुंठ गमन, परीक्षित की कथा, जन्मेजय का सर्प यज्ञ इत्यादि।

तीसरा स्कंध– निर्गुण सगुण की कथा, सगुण के लक्षण, सत्यव्रत ऋषि की कथा, देवदत्त ब्राह्मण की कथा, ध्रुवसंधि की कथा, जयद्रथ का द्रौपदी हरण, विश्वामित्र की कथा, सुदर्शन की कथा, श्री राम का जन्म एवं वन गमन, नवरात्र का व्रत–उपदेश इत्यादि।

चौथा स्कंध– कृष्ण अवतार की कथा का प्रश्न, कर्म फल की प्रधानता, वरुण का धेनु हरण, पुत्र के लिए दिति का व्रत, प्रहलाद का राज्यारोहण, शुक्राचार्य का पुत्र यज्ञ, देवासुर संग्राम इत्यादि।

पांचवां स्कंध– सभी देवों में शिव की प्रधानता का वर्णन, महिषासुर की कथा, मंदोदरी उपाख्यान, धूमलोचन युद्ध, शुंभ–निशुंभ की कथा, चंड–मुंड का वध, रक्तबीज का युद्ध, महामाया का महात्म्य वर्णन, शिवलिंग की थाह लेने के लिए ब्रह्मा और विष्णु का उद्योग, सुरथ और समाधि की देवी उपासना इत्यादि।

छठा स्कंध– वृत्रासुर की कथा, इंद्र के स्वर्ग छोड़कर मानसरोवर जाने की कथा, इंद्र और नहुष की कथा, कलियुग महिमा, शुनःशेप की कथा, लक्ष्मी को शिव का वरदान, अगस्त्य और वशिष्ठ की उत्पत्ति, जनक की उत्पत्ति, हैहय–गण की कथा, नारद के पुत्र से जुड़ी कथा इत्यादि।

सातवां स्कंध– इंद्र और सूर्य वंश की कथा, च्यवन ऋषि की कथा, शर्याति की कथा, मांधाता के वंश का वर्णन, सत्यव्रत की कथा, हरिश्चंद्र एवं उसके पुत्र रोहित की कथा, शताक्षी

देवी का महात्म्य, दक्ष के घर सती की उत्पत्ति, तारकासुर का वर्णन, योग का वर्णन, ब्रह्म ज्ञान का उपदेश, भक्ति और ज्ञान का वर्णन, देवी पूजा का विधान इत्यादि।

आठवां स्कंध– वराह अवतार की कथा, जंबूद्वीप का वर्णन, सुमेरु पर्वत का वर्णन, नद, नदी और देवी का वर्णन, सूर्य व चंद्रमा की गति का वर्णन, नरकों के नाम इत्यादि।

नवां स्कंध– देवी की अनेक मूर्तियों का वर्णन और पूजा विधि, विष्णु और महादेव की उत्पत्ति, सरस्वती कवच और स्तोत्र, कलि का वर्णन, कल्कि अवतार की कथा, पृथ्वी की उत्पत्ति, गंगा की उत्पत्ति व पूजा, तुलसी की कथा, विश्वध्वज का उपाख्यान, सीता हरण, सीता का द्रौपदी रूप से जन्म ग्रहण, द्रोपदी के पांच पति होने का कारण, शंखचूड़ और शिव का युद्ध, महालक्ष्मी की कथा, समुद्र मंथन की कथा, सती सावित्री और सत्यवान की कथा, जन्माष्टमी और शिवरात्रि व्रत का विधान, 86 कुंडों का वर्णन, मनसा देवी की कथा, सुरभि की कथा, दुर्गा और राधा का महात्म्य इत्यादि।

दसवां स्कंध– शिव द्वारा विंध्याचल की गति रोकना, चाक्षुष मनु की कथा, महाकाली चरित, मधु–कैटभ वध, शुंभ–निशुंभ वध, महिषासुर वध, भ्रामरी देवी की कथा इत्यादि।

ग्यारहवां स्कंध– सदाचार और नित्यक्रिया का वर्णन, रुद्राक्ष की महिमा, भस्म धारण का महात्म्य, त्रिपुंड का महात्म्य, गायत्री की 24 मुद्रा और गायत्री जाप के महात्म्य इत्यादि।

बारहवां स्कंध– गायत्री की अद्भुत महिमा का वर्णन, गायत्री सहस्त्रनाम, गायत्री स्तोत्र, गायत्री की कृपा से गौतम की सिद्धि की कथा इत्यादि।

●●●●●●●●●●●●●●●●

एक श्लोक भी 18 पुराणों को लेकर प्रसिद्ध है जो विष्णु पुराण से है। पर उस श्लोक में शिव पुराण का स्थान वायु पुराण ने लिया है। ऐसा ही भाव नारद पुराण का है।

पर वैष्णवीय भागवत में शिव पुराण का ही वर्णन है और शाक्त संहिता उमा संहिता में भी शिव पुराण का ही नाम है। वैसे अनुक्रमणिका को देखा जाये तो शिव पुराण और वायु पुराण की अनुक्रमणिका एक समान नहीं पर हाँ वायु पुराण में भी 24000 श्लोक हैं यह नारद पुराण कहता है। और वायु पुराण में दो भाग है पूर्व और उत्तर।

पुराण अठारह हैं। देखे विष्णु पुराण के अनुसार–

मद्वयं भद्वयं चैव ब्रत्रयं वचतुष्टयम् ।

अनापलिंगकूस्कानि पुराणानि प्रचक्षते ॥

म–2, भ–2, ब्र–3, व–4 ।

अ–1,ना–1, प–1, लिं–1, ग–1, कू–1, स्क–1 ॥

विष्णु पुराण व नारद के अनुसार उनके नाम ये हैं–

1. विष्णु,
2. पद्म,
3. ब्रह्म,
4. वायु ; यह नाम भागवत जी व शिवपुराण की उमा संहिता के अनुसार शिवपुराण है।
5. भागवत ; यह नाम उमा संहिता अध्याय 44 के श्लोक 129 के अनुसार देवी पुराण अर्थात् श्रीमद् देवीभागवत महा पुराण है पर श्रीहरिमयी भागवत पुराण में जिस भागवत का वर्णन है वह श्रीकृष्णमयी ही है।
6. नारद,
7. मार्कण्डेय,
8. अग्नि,
9. ब्रह्मवैवर्त,
10. लिंग,
11. वाराह,
12. स्कंद,
13. वामन,
14. कूर्म,
15. मत्स्य,
16. गरुड,
17. ब्रह्मांड और
18. भविष्य।

और 18 पुराणों से युक्त ढाई श्लोक शिवपुराण की उमा संहिता के अध्याय 44 में भी है जो श्लोक 120,121 तथा 122 के आधे में है ।

प्रश्न 49

हे अक्षयरुद्र अंशभूतशिव जी ! आपने प्रयाग , पुष्कर और कुरुक्षेत्र आदि में 3 दिन या 45 दिन रहने की बड़ी बड़ी फलश्रुति अपनी पुस्तकों में लिखी है पर हम शासकीय नौकरी में रत हैं इतने लम्बे समय तक वहाँ जाना संभव ही नहीं तो क्या हमें वह फल नहीं मिलेगा?

उत्तर – भगवान दयालु हैं आप चिन्ता न करें देखें –

1. जो मनुष्य विष्णु पुराण का मात्र एक बार पाठ कर लेता है उसे संपूर्ण तीर्थों में तीर्थवास करके वहाँ व्रत–उपवास और पूजा आदि करने का भी फल मिल जाता है। और भी बहुत कुछ लिखा है द्विज को अग्निहोत्र करने का फल भी मिलता है।
2. और तो और इसका मात्र एक पाठ करने से ही मथुरा–वृंदावन में यमुना स्नान करके प्रभु के दर्शन का फल भी मिलता है यह श्लोक 31–32 में लिखा है। यह सब कुछ आप षष्ठं अंश के अध्याय 8 के श्लोक 28 से देख सकते हैं। हम व्याख्या बता रहे हैं। इस पुराण में मात्र छः अंश ही हैं और बहुत कम श्लोक है अक्षयरुद्र अंशभूतशिव तो यही कहेगा कि इस चतुर्मास में यह पुराण एक बार अवश्य पढ़ना चाहिए या किसी जितेन्द्रिय ब्राह्मण से भी धन देकर करवा लीजिए पर मंदिर में करें। आगे सुनें–
3. अश्वमेध यज्ञमें अवभृथ (यज्ञान्त) स्नान करनेसे जो फल मिलता है वही फल मनुष्य इसको सुनकर प्राप्त कर लेता है।
4. प्रयाग, पुष्कर, कुरुक्षेत्र तथा समुद्रतटपर रहकर उपवास करनेसे जो फल मिलता है वही इस पुराणको सुननेसे प्राप्त हो जाता है।

एक वर्षतक नियमानुसार अग्निहोत्र करनेसे मनुष्यमात्र को जो महान् पुण्यफल मिलता है वही इसे एक बार सुननेसे हो जाता है।ज्येष्ठ शुक्ला द्वादशीके दिन दिन मथुरापुरीमें यमुना–स्नान करके कृष्णचन्द्रका दर्शन करनेसे जो फल मिलता है हे विप्रर्षे ! वही भगवान् कृष्णमें चित्त लगाकर इस पुराणके एक अध्यायको सावधानतापूर्वक सुननेसे मिल जाता है ॥ हे मुनिश्रेष्ठ ! ज्येष्ठमासके शुक्लपक्षकी द्वादशीको मथुरापुरीमें उपवास करते हुए यमुनास्नान करके समाहितचित्तसे श्रीअच्युतका भलीप्रकार पूजन करनेसे मनुष्यको अश्वमेध यज्ञका सम्पूर्ण फल मिलता है ॥ वही फल मात्र एक अध्याय के पाठ से मनुष्य प्राप्त कर लेता है।

प्रश्न 50

हे अक्षयरुद्र! पूर्ण ब्राह्मण कौन ?

उत्तर– यह सब शिव पुराण में विद्येश्वर संहिता में लिखा है आप देखें साथ में अन्य महत्वपूर्ण बात भी सुनें –

शिव पुराण विद्येश्वर संहिता अध्याय 13 श्रीमद्देवीभागवत महापुराण नवें स्कन्ध के अध्याय 26 से तथा अग्निपुराण 541,671 पृष्ठ पर भी वर्णित है ..

●नित्य एक हजार बार किया हुआ जप ब्रह्मलोक प्रदान करनेवाला होता है–ऐसा जानना चाहिये।

●नित्य सौ बार किया हुआ जप इन्द्रपदकी प्राप्ति करानेवाला माना गया है।

● कुल 100,लाख जप से ब्राह्मण संपूर्ण पापों से मुक्त हो जाता है और 10 लाख से तीन से 10 जन्मों की शुद्धि हो जाती है।

●ब्राह्मणेतर पुरुष आत्मरक्षाके लिये जो स्वल्पमात्रामें जप करता है, वह ब्राह्मणके कुलमें जन्म लेता है।

(इतरत्त्वात्म रक्षार्थं ब्रह्मयोनिषु जायते शि. पु. विद्ये. सं. अध्याय 13 , श्लोक 45)

●बारह लाख गायत्रीका जप करनेवाला पुरुष पूर्णरूपसे ब्राह्मण कहा गया है।

●जिस ब्राह्मणने एक लाख गायत्रीका भी जप न किया हो, उसे वैदिक कार्यमें न लगाये।

●एक दिन बिना गायत्री के बीते तो एक माला अतिरिक्त करें।

●10 दिन का अंतराल हो गया हो तो एक लाख गायत्री से उस दोष का मार्जन हो जाता है पर एक माह से अधिक दिन बीत गए हो तो पुनः उपनयन संस्कार कराना चाहिए।

(यह प्रमाण शिव पुराण विद्येश्वर संहिता अध्याय 13 में श्लोक 30,31 में देखें)

●पर आधुनिक युग में कर्मकांड के लिए अनिवार्य पात्रता एक लाख गायत्री जापक कही गई है इसका तात्पर्य यह है कि यदि किसी ब्राह्मण ने संध्या छोड़ दी हो 10 दिन से अधिक समय तक या एक दो मास तो पहले तो पुनः उपनयन संस्कार कराकर 1 लाख अतिरिक्त जपे इससे दोष निवारण होगा तदोपरान्त कर्मकांड के लिए पात्र बनने के लिए पुनः 100000 गायत्री जपे।

इतना करने पर भी आप यजमान का अधिक कल्याण नहीं कर पाओगे; क्योंकि पूर्ण ब्राह्मण ही यजमान का पूर्ण कल्याण करता है और पूर्ण ब्राह्मण कौन ? यह

शिव पुराण की विद्येश्वर संहिता के अध्याय 13 में श्लोक 46 देखें अर्थात अखंड ब्रह्मचर्य पूर्वक 12 लाख गायत्री मंत्र का जप करके ही आप यजमान का परम मंगल कर सकोगे।

सत्तर वर्षकी अवस्थातक नियमपालनपूर्वक कार्य करे। इसके बाद गृह त्यागकर संन्यास ले ले। परिव्राजक या संन्यासी पुरुष नित्य प्रातःकाल बारह हजार प्रणवका जप करे।

यदि एक दिन नियमका उल्लंघन हो जाय, तो दूसरे दिन उसके बदलेमें उतना मन्त्र और अधिक जपना चाहिये; इस प्रकार जपको चलानेका प्रयत्न करना चाहिये। यदि क्रमशः एक मास उल्लंघनका व्यतीत हो गया हो तो डेढ़ लाख जप करके उसका प्रायश्चित्त करना चाहिये। इससे अधिक समयतक नियमका उल्लंघन हो जाय तो पुनः नये सिरेसे गुरुसे नियम ग्रहण करे। यह भी इसी विद्येश्वर संहिता के अध्याय 13 में है।

ऐसा करनेसे दोषोंकी शान्ति होती है, अन्यथा रौरव नरकमें जाना पड़ता है।

प्रश्न 51. सुख कब प्राप्त होता है ? दुख से कैसे बचें ?

उत्तर–

1.प्रारब्ध से ऐश्वर्य या पद धन आदि लाभ होने पर भी सुख प्राप्त होता है।

2. जिस काम में स्वार्थ न हो वह यदि (आरंभ के बाद भी पूर्ण) न भी हो तो हमें दुख नहीं होता।
अतः हर कार्य बिना स्वार्थ के करें। तो आप सदा सुखी रहोगे।
3. जो वस्तु प्रारब्ध में नहीं है समझ लीजिए कि आपने पूर्व जन्म में उस वस्तु की प्राप्ति लायक पुण्य नहीं किया अतः इस जन्म में पुण्य करो तो अगले जन्म में पा लेना पर रोना किसी भी प्रकार की समस्या का समाधान नहीं।
4. वैसे गीता में इस विश्व को दुखालय कहा है यहाँ चाहे कुछ भी मिल जाए उस उपलब्धि के कारण एक नवीन दुख भी साथ में आता है अतः अक्षयरुद्र के अनुसार निवृत्ति मार्ग पर चलो। और न मानों तो सुख और दुख से भरा हुआ रास्ता चुन सकते हो। सब स्वतंत्र हैं।

वैसे अखंड ब्रह्मचर्य और एकाकीपने का रास्ता भी आसान नहीं यह अक्षयरुद्र पिछले 20 साल से देख चुका है। पर हाँ असंभव और अति कठिन भी नहीं।

प्रश्न 52

प्रभु दुनिया में लोग इतने सारे अपराध करके भी बाहर मजे लेते हुए नजर आते हैं।
जिस अपराध का दंड जन्म कैद कि सजा हो सकती है
वो लोग प्रायश्चित ना करके भी अपना कर्म छुपाकर नजर आते हैं।
क्या उनका कुछ पुण्य होगा कि उनको देवता दंड नहीं दे रहे।
कि जैसे पशु पर दया दिखाते वैसे उनपर दया दिखा रहे हैं।

– किशोर भागवत

उत्तर–

जब तक पुण्य कर्म बचें हैं तब तक भोग रहे हैं। उनको दण्डित करने पर उनके बच्चों और पत्नी आदि को हर घर में आज ही पीड़ा व दुख तकलीफ होगी इस कारण सब कुछ समय समय पर प्रकृति दण्डित करती है।

प्रश्न 53

पति, बच्चों , सास ससुर और अतिथि की सेवा करने के कारण मैं अधिक पूजा पाठ नहीं कर सकती । (मेरा सारा समय इन सभी में चला जाता है इनकी सेवा और इनकी संतुष्टि के कारण मैं अनुष्ठान तक नहीं कर पाती औपचारिक अनुष्ठान की बात अलग है , मैं भी पार्वती, वेदवती या मनसा जैसा तप करना चाहती हूँ मुझे भी उन जैसा बनना है ?

क्या मेरा उद्धार नहीं होगा?
क्या मुझे उन जैसे वरदान नहीं मिलेंगे?

क्या मैं दो चार लोगों की सेवा करते करते यूँ ही मर जाऊँगी। माता पिता ने कहा तो मैने नौकरी के हर माह बीस हजार छोड़कर शादी कर ली। पर मेरी इच्छा अब पूर्णतः समर्पण कर ध्रुव जैसा घोर तप करके भगवान के दर्शन करने की है । पति में या सास ससुर में भगवान श्रीकृष्ण को देखकर उनकी सेवा से मुझे आज तक दर्शन न हो पाये। और श्रीध्रुव श्रीकर्दम आदि ने वन में सतत् जप से अल्पकाल में ही हरि का साक्षात्कार कर लिया था। लोग–बाग तपस्या करते हैं उनको वरदान मिलता है क्या मुझे दर्शन भी नहीं मिलेगा । मैं जनकल्याण भी करना चाहती हूँ। पर रात दिन चूले चकिये और बर्तन झाड़ू साफ सफाई में ही बीत रहा है।

उत्तर– पतिव्रता स्त्री द्वारा जो इन सब की सेवा की जाती है और मन में इष्ट सुमिरन.... अथवा नैष्ठिकब्रह्मचारी शिष्य द्वारा जो गुरु सेवा अखंड ब्रह्मचर्य पूर्वक की जाती है उसके बदले सदा के लिए वैकुण्ठ मिलता है और इन सब जप तप व्रत–उपवास व तीर्थ या जनकल्याण कारी योजनाओं की तुलना में 10000000 कोटी गुना फल भी। पर परम शिष्य या परम पत्नि को फल मृत्यु के बाद स्पष्ट दिखाई देता है। फल के लिए धैर्य रखना चाहिए।

जब परिवार में ही शान्ति नहीं होगी तो हर घर में सास परेशान होगी काम कर–कर के तो बाहर रोड पर जनकल्याण किसका और कैसा व क्या खाक करोगी।

अतः जनकल्याण का कार्य अपने पति व नैष्ठिकब्रह्मचर्य धारी लोगों या गुरुओं पर छोड़कर आप सीता व पार्वती या अनुसुइया की तरह पति सेवा पर ही बल दो। साकेत को देखो वहाँ की श्रीसीता कोई भी तपस्या या जप तप व्रत–उपवास नहीं करती जो भी पति की आज्ञा होती है वही करती है उधर श्रीपार्वती को देखो वहाँ भी पतिसेवा के अलावा अन्य कुछ भी नजर नहीं आयेगा।

अब रही पति के अवगुण या गुण की बात तो वह आप पर निर्भर है कि कैसे मेनटेन करना है। यदि पति पातकी या परायी नारी से दूषित है तो उसका विधान अलग है । उसका त्याग करके आप जप तप व्रत–उपवास का स्वतंत्र मार्ग अपना सकती हो यह श्रीमद्भागवत महापुराण में लिखा है कि पातकी पति को छोड़कर जाने में दोष नहीं। पर अच्छा भला पति है तो आपके पूर्व जन्म का तप का ही फल है। अब कौन सा तप करोगी। स्त्री का सुख पति तक ही सीमित होता है।

और रही हरि से प्रेम करने वाली बात तो (पति अच्छा है तो) उन हरि से मन और बुद्धि से लगाव रखो। कोई अनिवार्य नहीं की 1000 माला ही करो। 5–5 मिनट के अनेक पाठ हैं एक दो चुन लो। और अति ही इच्छा है तपस्या करके हरि को पति बनाने की या दर्शन की तो आप श्री राधा जी की मानसिक पूजा करके "गोपीजन वल्लभ चरणान् शरणं प्रपद्ये " की मात्र एक माला नित्य शाम को करो तदोपरान्त ब्रह्म वैवर्त पुराण का एक श्रीकृष्ण

स्तोत्र (बस आजीवन का संकल्प लो) दर्शन की संभावना अधिक हो जायेगी। यदि न भी दर्शन हुये तो आप निश्चित ही मरने के बाद हरिधाम ही जाओगी।

और जप तप व्रत–उपवास की ही अति प्रबलतम इच्छा है (पति या बच्चे सास ससुर आदि के बंधन से मुक्त होना चाहती हो तो) अगले जन्म में आप निश्चित ही सुलभा जैसी अखंड ब्रह्मचारिणी हो जाओगी तब आप घोर तप व्रत–उपवास करना। उस समय आपके पास न तो पति होगा न ही बच्चे न ही सास ससुर।

आपने यह कैसे सोच लिया कि भगवान मात्र 100–100 माला घुमाने से ही प्रसन्न होते हैं। पतिसेवा, गुरुसेवा , गौसेवा, संध्यापूत जितेन्द्रिय ब्राह्मण सेवा, तपोनिष्ठ या ब्रह्मनिष्ठ की सेवा का जो फल है अभी मात्र माला तक सीमित रहने वाले साधकों को पता ही नहीं। क्रिया मत देखो फल देखो। अथवा चिन्ता न करें आपको अगले जन्म में न तो पति मिलेगा न ही बच्चे या सास ससुर। खूब 1000 माला घुमाना डैली और अब जप तप व्रत–उपवास से ही पाना हरि को। गृहस्थ का सुख भी चाहो और स्वतंत्रता भक्ति भी............. यह संभव नहीं। गृहस्थों की कुछ आशाएं अपेक्षाएं रहती हैं इसी कारण उन लोगों ने आपको अपनी बहु बनाया है यह परम सत्य है ऐसे में सतत् मणियों से माला घूम ही नहीं सकती। अतः औपचारिक माला ही करना होगा पर उन सभी को हरि रूप जानकर आपका कल्याण होने की आज्ञा भी शास्त्रों ने दी है पर विश्वास न हो तो हम पुनः कहते हैं कि आपको पुनर्जन्म में स्वतंत्रता मिल जाएगी पर उस समय ये मत कहना कि मुझे पति का सुख भी चाहिए जैसा कि द्रोपदी ने पूर्व जन्म में कहा था। कहने का सार यह है कि दो नावों में स्वतंत्र पैर नहीं रखा जा सकता। जप तप और जनकल्याण के लिए आपने सुलभा की तरह अखंड संयम का संकल्प नहीं लिया तो यह सब पारिवारिक कर्तव्य तो उठाना ही होगा।

अरे! जब धर्म शास्त्र कहते हैं कि आपको पतिव्रत धर्म से मृत्यु के बाद माला व तप का फल वैकुण्ठ मिल जायेगा तो अधिक क्यों सोचती हो। मत सोचो ज्यादा। अतः मन तो खाली है न उसको नाम जप से भरो। निन्दा चुगली आदि से दूर रहो और मन में जप करती रहो सतत्। हाथ भले ही रोटी बनाये या पति के पाँव दावे पर मस्तिष्क तो खाली है न उसमें हरि नाम की माला भरो। मात्र तुलसी या रुद्राक्ष कंठ में धारण कर लो और मनसे जपो। अक्षयरुद्र अंशभूतशिव यह सत्य कहता है कि जहाँ हम जायेंगे वही परम धाम में आप हमे मिलोगी। पर अक्षयरुद्र पर विश्वास करो।

प्रश्न 54

किस प्रकार और कहाँ बैठकर शिव जी का पंचाक्षरी जप करें ?

उत्तर– पंचाक्षरी का जप चलते फिरते उठते बैठते कर सकते हैं पर इसी लोक में महाफल के लिए अनुष्ठान रूप से करें तो अधिक श्रेष्ठ फल मिल जाता है।

जहाँ गाय का पीछे वाला पाँव है उधर बैठकर उत्तर दिशा की और मुख करके पंचाक्षरी जप का फल अत्यधिक होता है। और घर की शिवलिंग हो तो चार अंगुल की होने पर संपूर्ण फल। दो अंगुल की शिवलिंग पूजित होने पर आधा फल तथा एक अंगुल की शिवलिंग (बिल्कुल छोटी) से 25प्रतिशत फल मिलता है। शिवलिंग का आकार चार अंगुल होने पर भी रुद्राक्ष और भस्म धारण करके व श्रृद्धा और लगन से एकाग्रचित्त होकर भजन का फल भी अधिक है।

बिना रुद्राक्ष धारण बिना भस्म धारण के लिंग पुराण के अनुसार शिव पूजा का फल नहीं मिलता पर हाँ अति श्रृद्धा से सेवा की हो तो भगवान शिव के अनुग्रह से इन सबका माहात्म्य मात्र किसी भी माध्यम (शास्त्र या गुरु या संतादि अथवा लेख) से उपलब्ध हो जाता है ताकि पुनः गलती न हो।

इसी कारण कहा जाता है कि शास्त्र या संत या दोनों का मिलन तथा ब्रह्मनिष्ठ (गुणातीत और रूपातीत होने से गुरु संज्ञा) का मिलन ही नाम जप का फल है। अतः

ऐसा मानना अनुचित है कि बिना शास्त्र और बिना संत के माध्यम से आप मात्र कोरी पारी सेवा से ईश्वर के दर्शन कर लोगे। कुछ लोग संत या शास्त्र से विमुख होकर हर दिन 32 अपराध करते रहते हैं (इनमें चारों वर्ण और चारों आश्रम के लोग शामिल हैं) पर अपने हठ पर अड़े है कि नाम ही हमारा पार लगायेगा हमें मतलब नहीं यम नियम या अपराध से। ऐसे लोग संत और शास्त्र दोनों की अवहेलना करने से नाम जप का फल नष्ट करते हैं। ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार कि अमावस्या पर किसी का अन्न भक्षण करने से 30 दिन की आध्यात्मिक सेवा का फल उस खिलाने वाले के खाते से एक्सचैंज हो जाता है और कभी कभी नष्ट भी। अतः जो भी करें शास्त्र अनुसंधान करके या संत श्रवण करके ही करें।

पर एक महत्वपूर्ण बात– आजकल कुछ कुछ लोग शास्त्र विमुख बातें भी अपने प्रवचनों में बोल रहे हैं अतः ऐसे में आपको स्वाध्याय भी करते रहना होगा। ताकि लकीर के फकीर न बन सकें। नित्य 10 माला से भी भगवान शिव एक वर्ष में अतुलनीय कृपा देते हैं। मात्र 10–15 मिनट से ही 10 माला हो सकती हैं ।

गायत्री को भी शिवमयी कहा है अतः द्विज लोग नित्य 10 माला गायत्री करें तो एक माह में एक लाभ आरंभ हो जाता है तथा दो माह के संकल्प से अखंड ब्रह्मचर्य पूर्वक करें तो दो कामनाओं की सिद्धि श्रीमद्देवीभागवत महापुराण में कही है। 12 माला एक टांग पर खड़े होकर जपें तो 1 वर्ष का फल महान है और दो वर्ष का और भी अधिक श्रेष्ठ जो आप हमारे श्री देवी रहस्य में भी पढ़ सकते हैं ।

प्रश्न 55

पद्म पुराण की अनुक्रमणिका के पाठ का फल बताएं।

उत्तर–अद्भुत माहात्म्य है इस अनुक्रमणिका का। सुनें– जो नारद पुराण के अनुसार बता रहे हैं।

भगवान ब्रह्माजी कहते हैं–बेटा! सुनो, अब मैं पद्मपुराण का वर्णन करता हूँ। जो मनुष्य प्रसन्नतापूर्वक इसका पाठ और श्रवण करते हैं, उन्हें यह महान् पुण्य देनेवाला है। इस पुराण की अनुक्रमणिका मात्र से भी मनुष्य इस पुराण के संपूर्ण पाठ का फल पा लेता है।

जैसे सम्पूर्ण देहधारी मनुष्य पाँच ज्ञानेन्द्रियोंसे युक्त बताया जाता है, उसी प्रकार यह पापनाशक पद्मपुराण पाँच खण्डोंसे युक्त कहा गया है। ब्रह्मन् ! जिसमें महर्षि पुलस्त्यने भीष्मको सृष्टि आदिके क्रमसे नाना प्रकारके उपाख्यान और इतिहास आदिके साथ विस्तारपूर्वक धर्मका उपदेश किया है। जहाँ पुष्करतीर्थका माहात्म्य विस्तारपूर्वक कहा गया है, जिसमें ब्रह्म–यज्ञकी विधि, वेदपाठ आदिका लक्षण, नाना प्रकारके दानों और व्रतोंका पृथक् पृथक् निरूपण, पार्वतीका विवाह, तारकासुरका विस्तृत उपाख्यान तथा गौ आदिका माहात्म्य है, जो सबको पुण्य देनेवाला है, जिसमें कालकेय आदि दैत्योंके वधकी पृथक् पृथक् कथा दी गयी है तथा द्विजश्रेष्ठ ! जहाँ ग्रहोंके पूजन और दानकी विधि भी बतायी गयी है, वह महात्मा श्रीव्यासजीके द्वारा कहा हुआ 'सृष्टिखण्ड' है।

पिता–माता आदिकी पूजनीयताके विषयमें शिवशर्माकी प्राचीन कथा, सुव्रतकी कथा, वृत्रासुरके वधकी कथा, पृथु, वेन और सुनीथाकी कथा, सुकलाका उपाख्यान, धर्मका आख्यान, पिताकी सेवाके विषयमें उपाख्यान, नहुषकी कथा, ययातिचरित्र, गुरुतीर्थका निरूपण, राजा और जैमिनिके संवादमें अत्यन्त आश्चर्यमयी कथा, **अशोक सुन्दरीकी कथा।** हुण्ड दैत्यका वध कामोदा की कथा, विहुण्ड दैत्यका वध, महात्मा च्यवनके साथ कुञ्जलका संवाद, तदनन्तर सिद्धोपाख्यान और इस खण्डके फलका विचार–ये सब विषय जिसमें कहे गये हों, वह सूत–शौनक– संवादरूप ग्रन्थ 'भूमिखण्ड' कहा गया है। जहाँ सौति तथा महर्षियोंके संवादरूपसे ब्रह्माण्डकी उत्पत्ति बतायी गयी है, पृथ्वीसहित सम्पूर्ण लोकोंकी स्थिति और तीर्थोंका वर्णन किया गया है। तदनन्तर जहाँ नर्मदाजीकी, कृत्पत्ति– कथा और उनके तीर्थोंका पृथक् पृथक् वर्णन है, जिसमें कुरुक्षेत्र आदि तीर्थों की पुण्यमयी कथा कही गयी है, कालिन्दीकी पुण्यकथा, काशी– माहात्म्य–वर्णन तथा गया और प्रयागके पुण्यमय माहात्म्यका निरूपण है, वर्ण और आश्रमके अनुकूल कर्मयोगका निरूपण, पुण्यकर्मकी कथाको लेकर व्यास–जैमिनि– संवाद, समुद्र–मन्थनकी कथा, व्रतसम्बन्धी उपाख्यान, तदनन्तर कार्तिकके अन्तिम पाँच दिन (भीष्मपञ्चक) का माहात्म्य तथा सर्वापराधनिवारक स्तोत्र– ये सब विषय जहाँ आये हैं, वह 'स्वर्गखण्ड' कहा गया है। ब्रह्मन् ! यह सब पातकोंका नाश करनेवाला है।

रामाश्वमेधके प्रसङ्गमें प्रथम रामका राज्याभिषेक, अगस्त्य आदि महर्षियोंका आगमन, पुलस्त्यवंशका वर्णन, अश्वमेधका उपदेश, अश्वमेधीय अश्वका पृथ्वीपर विचरण, अनेक राजाओंकी पुण्यमयी कथा, जगन्नाथजीकी महिमाका निरूपण, (वृन्दावनेका सर्वपापनाशक माहात्म्य, कृ ष्णावतारधारी श्रीहरिकी नित्य लीलाओंका कथन, वैशाख स्नान की महिमा

स्नान–दान और पूजनका फल, भूमि–वाराह– संवाद, यम और ब्राह्मणकी कथा, राजदूतोंका संवाद, श्रीकृष्णस्तोत्रका निरूपण, शिवशम्भु–समागम, दधीचिकी कथा, भस्मका अनुपम माहात्म्य, उत्तम शिव–माहात्म्य, देवरातसुतोपाख्यान, पुराणवेत्ताकी प्रशंसा, गौतमका उपाख्यान और शिवगीता तथा कल्पान्तरमें भरद्वाज–आश्रममें श्रीरामकथा आदि विषय 'पातालखण्ड' के अन्तर्गत हैं। जो सदा इसका श्रवण और पाठ करते हैं, उनके सब पापोंका नाश करके यह उन्हें सम्पूर्ण अभीष्ट फलोंकी प्राप्ति कराता है।

पाँचवें खण्डमें पहले भगवान् शिवके द्वारा गौरीदेवीके प्रति कहा हुआ पर्वतोपाख्यान है। तत्पश्चात् जालन्धरकी कथा, श्रीशैल आदिका माहात्म्यकीर्तन और राजा सगरकी पुण्यमयी कथा है। उसके बाद गङ्गा, प्रयाग, काशी और गयाका अधिक पुण्यदायक माहात्म्य कहा गया है। फिर अन्नादि दानका माहात्म्य और महाद्वादशीव्रतका उल्लेख है। तत्पश्चात् चौबीस एकादशियोंका पृथक्– पृथक् माहात्म्य कहा गया है। फिर विष्णुधर्मका निरूपण और विष्णुसहस्रनामका वर्णन है। उसके बाद कार्तिकव्रतका माहात्म्य, माघ स्नानका फल तथा जम्बूद्वीपके तीर्थोंकी पापनाशक महिमाका वर्णन है। फिर साभ्रमती (साबरमती) का माहात्म्य, नृसिंहोत्पत्तिकथा, देवशर्मा आदिका उपाख्यान और गीतामाहात्म्यका वर्णन है। तदनन्तर भक्तिका आख्यान, श्रीमद्भागवतका माहात्म्य और अनेक तीर्थोंकी कथासे युक्त इन्द्रप्रस्थकी महिमा है। इसके बाद मन्त्ररत्नका कथन, त्रिपादविभूतिका वर्णन तथा मत्स्य आदि अवतारोंकी पुण्यमयी अवतार–कथा है। तत्पश्चात् अष्टोत्तरशत दिव्य राम–नाम और उसके माहात्म्यका वर्णन है। वाडव ! फिर महर्षि भृगुद्वारा भगवान् विष्णुके वैभव की परीक्षाका उल्लेख है। इस प्रकार यह पाँचवाँ 'उत्तरखण्ड' कहा गया है, जो सब प्रकारके पुण्य देनेवाला है। जो श्रेष्ठ मानव पाँच खण्डोंसे युक्त पद्मपुराणका श्रवण करता है, वह इस लोकमें मनोवाञ्छित भोगोंको भोगकर वैष्णव धामको प्राप्त कर लेता है। यह पद्मपुराण पचपन हजार (55000) श्लोकोंसे युक्त है। मानद ! जो इस पुराणको लिखवाकर या लिखकर पुराणज्ञ ब्राह्मणका भलीभाँति सत्कार करके ज्येष्ठकी पूर्णिमाको स्वर्णमय कमलके साथ इस लिखित पुराणका उक्त पुराणवेत्ता ब्राह्मणको दान करता है, वह सम्पूर्ण देवताओंसे वन्दित होकर वैष्णव धामको चला जाता है। जो पद्मपुराणकी इस अनुक्रमणिकाका पाठ तथा श्रवण करता है, वह भी सम्पूर्ण पद्मपुराणके श्रवणजनित फलको प्राप्त कर लेता है।

प्रश्न 56

जी पुराण के संदर्भ में कुछ मार्गदर्शन चाहिए था कुछ–कुछ पुराण संक्षिप्त रूप में ही प्रकाशित दिखते हैं जैसे संक्षिप्त गरुड़ पुराण संक्षिप्त शिव पुराण तो इन सब पुरान को संक्षिप्त रूप कब प्रदान कर दिया गया क्या इससे पहले यह पूर्ण रूप से भी प्रकाशित होते थे उनकी पूर्ण उनकी पूर्ण और संक्षिप्त रूप की व्याख्या कब और किस प्रकार हो गई।

–अखिलेश तिवारी

उत्तर–

मूल संस्कृत भाषा में जो 24000 श्लोक शिव पुराण में है उन श्लोकों में से लगभग 12000से 13000 श्लोकों के अर्थ को लेकर गीताप्रेस या अन्य प्रकाशकों ने जो पुस्तक प्रकाशित की उसे ही इन लोगों ने संक्षिप्त शिव पुराण कह दिया। ऐसा ही संक्षिप्त स्कन्द पुराण आई और इसी प्रकार संक्षिप्त श्रीमद्देवीभागवत महापुराण तथा अन्य सभी को समझें।

प्रश्न 57

अखंड ब्रह्मचर्य का सतत पालन कौन कर सकता है? महान ब्रह्मचारी लक्ष्यारूढ़ होता है पर साधारण ब्रह्मचारी पथिक कहलाता है। ऐसा क्यों?

उत्तर–ब्रह्मभाव पर ही अखंड ब्रह्मचर्य का सतत पालन होता है। ब्रह्मभाव पर ही मनुष्यत्व का नाश होकर वह शिवत्व के कारण समाधिस्थ हो सकता है क्योंकि वह उस समय तद्रूप होने से साक्षात ब्रह्म ही होता है। एक उपनिषद के अनुसार जीव और ईश्वर की संज्ञा जब **एक ब्रह्म ही** हो जाती है तभी समाधि का काल होता है, द्वैत पर समाधि की कोई भी संभावना नहीं। द्वैत पर मात्र अश्रू बह सकते हैं पर समाधि नहीं लग सकती। 2005 में सलकनपुर में हमारे नयनों के आंसू इसको अनुभव भी कर चुके है। अब भक्ति को आप समाधि कह डालो वो बात अलग है। ब्रह्मनिष्ठता पर ही उसका देहत्व भाव नहीं बचता इस कारण यह कहना ही शाश्वत सत्य है कि एक ब्रह्मभावी ही अखंड ब्रह्मचर्य का सतत पालन करता है। जीव भाव पर वह प्रयास अवश्य करता है और इस प्रयास के बदले उसे महर्लोक या ब्रह्म लोक में सुख मिलता है पर वह जीते जी मुक्त नहीं हो पाता। कैवल्या पद का अधिकार नहीं पाता। ब्रह्मभाव ही परम उपलब्धि है। इस संसार में ब्रह्मचारी दो ही तरह के हैं एक वह जो अपने जीव भाव से रत होकर ईश्वर से रक्षा के लिए प्रार्थना कर रहे है (कभी हनुमत् मंत्र का अनुष्ठान करते हैं तो कभी स्मर सूक्त से उपासना तो कभी यम स्तोत्र का पाठ जिससे वो खंडन के परिणाम से कांपने लगते है और यमगदा से डरकर परायी नार को नेत्र गड़ाकर नहीं देखते न ही परायी स्त्रियों से डर के चक्कर में संबंध स्थापित कर पाते हैं यह भी यमभयभाव उत्तम है इसका फल

भी अद्वितीय है पर इस प्रकार के ब्रह्मचर्य की प्रशंसा यह शिव स्वरूप अक्षयरुद्र नहीं करता क्योंकि ऐसा ब्रह्मचारी महान लक्ष्यारूढ़ न होकर पथिक कहलाता है। महान तो हे अक्षयरुद्र! वही है जो ब्रह्मचर्य व्रत के पालन हेतु सोचता नहीं न ही उपाय करता है पर सहज ही भगवान कृष्ण और शिव जी की तरह अखंड ब्रह्मचर्य पूर्वक रहता है। और यह तद्भावित ब्रह्मनिष्ठता पर संभव है भेदभाव वाले तो दैहिक बुद्धि से परे हो ही नहीं पाते। देवता वर्ग भी जब तक स्वरूप बोध से युक्त न होगा तब तक वह अखंड ब्रह्मचर्य पूर्वक नहीं रह सकता इसी कारण एक बार चंद्र देवता भी काम का गुलाम होकर उसी के गुरु को पत्नी पिण्ड से मूँह काला कर चुका है और एक बार इन्द्र देव भी अहिल्या प्रसंग में पतित हो चुका। हालांकि अब ये दोनों घोर तप से शुद्ध होकर पुनः पूजे जाने लग गए पर बात ब्रह्मभाव की ही उत्तम है जो जीवत्व भाव पर तो कभी भी कलंक लगा सकती है देह भाव ही जीव भाव है और महावाक्य का पालन ही ब्रह्म भाव जहाँ देह ही नहीं बचता मन भी अमनस्क होने पर वह ब्रह्म ही हो जाता है। बस वही परम रक्षा है और सब औपचारिक। इस विश्व के ऐसे ही दिव्य ब्रह्मचारियों को नमन है। नमन है नमन है। और जो प्रयास रत हैं उन सभी का प्रयास सार्थक हो।

प्रश्न 58– क्या मात्र 100–100 माला घुमाने से ही प्रसन्न होते हैं हरि प्रभु। पतिसेवा, गुरुसेवा या गौसेवा से नहीं।

उत्तर–आपने यह कैसे सोच लिया कि भगवान मात्र 100–100 माला घुमाने से ही प्रसन्न होते हैं। पतिसेवा, गुरुसेवा , गौसेवा, संध्यापूत जितेन्द्रिय ब्राह्मण सेवा, तपोनिष्ठ या ब्रह्मनिष्ठ की सेवा का जो फल है अभी मात्र माला तक सीमित रहने वाले साधकों को पता ही नहीं।

प्रश्न 59

<u>प्रेम प्रस्ताव यथार्थ में कौन सा प्रस्ताव है?</u>

उत्तर–नारी तन (योनी , स्तन युक्त देह अथवा देवी का रूप भी घोषित है उस)के अंदर वही आत्मा है जो तुम्हारी देह के अंदर (तुम स्वयं) है फिर हे मनुष्य तू उससे क्या चाहता है जरा ये तो बता। वह जो है

तुम्हारा ही आत्मा है फिर उस तन के पास जाकर ही प्रेम प्रस्ताव यथार्थ में कौन सा प्रस्ताव है यह तो बता ? यह या तो मोह है कि वह सुंदर रूप सदा के लिए पास रहे या रतिसुख की आरजू अर्थात् इच्छा.....और कुछ भी नहीं। पत्नि को छोडकर दूसरी औरतों की ओर भागना और प्रेम प्रेम चिल्लाना........आपकी अतीववासना मात्र है न कि

प्रेम। मात्र मधुर बातों से प्रेम होता तो आपको अक्षयरुद्र से ही प्रेम हो जाता न कि स्त्रियों से ही। अक्षयरुद्र की मधुरता का प्रमाण उसके 18 ग्रंथों की रचना है पर फिर भी आप नारी पिण्ड की तरफ ही भागते हो उसी के तन की ओर घुसे जा रहे हो अतः समझ लो कि आपको मात्र नारी से या तो मोह है या रति का रस पान करना चाहते हो। सोचो जिन स्तनों ने आपका पोषण किया है आप उनसे ही अपनी हवस की भूख मिटाने के लिए पाप तक कर बैठते हो, अरे !!!!अति रतिभोग की कामना है अति स्तन मर्दन की स्पृहा है न कि अखंड संयम की ..... .तो धर्म शास्त्रों ने नारी रूप से विवाह की आज्ञा दे रखी है पर किसी की बहन बेटी पर गंदी नजर महापाप ही है। हालांकि कुछ लोग मात्र वंश के लिए भी विवाह करते हैं उनका वासनात्मक भाव नहीं होता यह भी सच है। सौन्दर्य किसमें कैसा है और उस परायी नारी में ही तुझे सौन्दर्य दिखता है अपनी आत्मा में नहीं । या तुझे विवाह से पूर्व उसमें भी दिखता था तो बता इस अक्षयरुद्र को वह सौन्दर्य कहाँ गया। मैं बताता हूँ सुन – जिसको भोग लिया जाता है उसका सौन्दर्य पुनः स्त्रीलम्पट पुरुष को नहीं दिखाई देता। और जिसको नहीं भोगा जाता बस उसी में सौन्दर्य नजर आता है अर्थात समझ कि सौन्दर्य भोगहीनता के काल का नाम मात्र है। यह तेरी वासना ही मल मूत्र वाले पिण्ड में सौन्दर्य देखती है। वह भी क्षणभंगुर दैहिक सुख के चक्कर में अन्यथा जो सौन्दर्य आत्मा के आनंद में है वह माँसपिण्डों में कहाँ। यह सौन्दर्य तेरी भ्रामक व भौतिक बुद्धि का परिचय देता है । आश्चर्य है कि – मनुष्य योनी परम पद के लिए ईश्वर ने गिफ्ट के रूप में प्रदान की है और तू है कि उस नर योनी को तूने मात्र मूत्रात्मक योनी व कुच मर्दन तक सीमित कर डाला। अथवा योनी से इतना ही प्रेम है तो उसे सृष्टि की आधार के रूप में पूजनीय बना न कि घर्षण के क्षणभंगुर सुख के लिए प्रयोग कर।अपनी स्त्री की महायोनी को भी मात्र संतान उत्पन्न करने के लिए प्रयोग कर शेष समय उसे दिव्य मूर्ति की भाँति पूज ताकि वह तुझे 84 लाख योनियों से छुटकारा दिलाने में सहायक हो। वह योनी पूजित होने पर पुनर्जन्म से मुक्ति के लिए यथार्थ पराविज्ञान तक पहुंचाने के लिए गुरु तक पहुंचा सकती है पर उसको मात्र सुख का गुलाम बनायेगा तो वह तुझे नचा डालेगी। और फिर से उसी योनी से जन्म लेने पर विवश कर देगी। हे वीरों ! तुम अपने मूल रूप में स्थित रहो न कि नाशवान पिण्डों में उलझो। तुम अखंड ब्रह्मचर्य पूर्वक रहो और वह स्थान पाओ जो सनत्कुमार और हनुमान जी को प्राप्त हुआ । अक्षयरुद्र के अनुसार हनुमान जी के ब्रह्मा पद पाने के बाद जब पुनः रामावतार होगे उस समय एक अखंड ब्रह्मचारी की आवश्यकता होगी जो हनुमान की तरह लीला कर सके अतः तू वही बन या अन्य ब्रह्माण्ड का महापद पा।

प्रश्न 60

परमधाम के लिए क्या काम करें हे अक्षयरुद्र पूजा करें या संन्यास लें या कथा वक्ता बनें।

उत्तर–

कथाओं , ज्योतिष या सभी शास्त्रों को रटने से सदा के लिए मुक्ति या परमधाम नहीं मिलता अपितु निस्पृह , अचिन्त्य और शान्त होने से व शम दम सहित छः गुण (साधन चतुष्ट्य के एक साधन के अंश) से परिपूर्ण होने पर ही परम पद मिलता है परम धाम सतत् काल तक मिलता है। अतः काम चलाऊ काम मत करो। या तो गृहस्थ में 3–4 संतानों को जन्म देकर अच्छा पालन करो या अक्षयरुद्र बनो।

प्रश्न 61

शत शत नमन। मैं 6–7 वर्षों से पंचाक्षर स्त्रोत का 27 जप नित्य कर रहा हूं । इसका अनुष्ठान कैसे कर सकते हैं। –निखिल रंजन जी

उत्तर–तो 27–27 ही चलने दो कुल 1100 बार अखंड ब्रह्मचर्य पूर्वक करें । समय व स्थान न बदलें , पराये लोगों का अन्न न खायें । साधनारत की स्थिति में किसी के सूतक पातक में भी शामिल न हों । किसी की अर्थी में भी (अनुष्ठान काल में) न जायें। अन्यथा अनुष्ठान भंग माना जायेगा। साधक के घर में ऐसी घटना घट जाये तो भी शुद्धि के बाद पुनः अनुष्ठान करना होगा।

और भूमि पर कुश की चटाई और उसके ऊपर पतला सा कंबल बिछाकर सोयें। साधना के सभी नियम का पालन करना होगा। रुद्राक्ष व त्रिपुण्ड्र धारण अनिवार्य है । शिव कवच अनिवार्य है।

प्रश्न 62

शालग्राम– शिला का संक्षिप्त माहात्म्य कहें।

उत्तर–हाँ शालग्राम– शिला होती है, वहाँ सभी तीर्थ और भुक्ति–मुक्तिका वास होता है। वैष्णवों के घर में शालग्राम अवश्य होना चाहिए और शैवों के घर में भी शिव जी की प्रसन्नता के लिए यह सर्वोत्तम है।

शयन के समय तुलसीपत्र को शालग्राम–शिलासे हटाकर पार्श्वमें रख दिया जाता है। शालग्रामका चरणोदक सभी तीर्थोंसे अधिक पवित्र माना गया है।

शालग्रामकी पूजा सम–संख्या (4,6,8,10,12) में अच्छी मानी जाती है, किंतु सम–संख्यामें दो शालग्रामोंका निषेध है। विषममें एक शालग्रामकी पूजाका विधान है।

शालग्रामके साथ द्वारावती–शिला भी रखी जाती है। व्रत, दान, प्रतिष्ठा तथा श्राद्धादि कार्योंमें शालग्रामका सांनिध्य विशेष फलप्रद होता है। साधारण स्त्री, अनुपनीत ब्राह्मणादि को शालग्रामका स्पर्श नहीं करना चाहिये।

ऐसे ब्राह्मण या ऐसे क्षत्रिय जो परायी नारी से दूषित है वे भी शालग्राम का स्पर्श नही कर सकते।

सत्यनारायण–पूजा अथवा शालग्रामकी नित्य–पूजामें शालग्रामकी मूर्तिको किसी पवित्र पात्रमें रखकर पुरुषसूक्तका पाठ करते हुए पंचामृत अथवा शुद्ध जलसे अभिषेक करानेके बाद मूर्तिको शुद्ध वस्त्रसे पोंछकर गन्धयुक्त तुलसीदलके साथ किसी सिंहासन अथवा यथास्थान पात्रादिमें विराजमान कराकर ही पूजा प्रारम्भ की जानी चाहिए। जिस मंदिर में 12 शालग्राम नित्य पूजित होते हैं वहाँ का स्थान परम तीर्थ वैकुण्ठ ही कहलाता है और पूजा करने वाले के दर्शन से साक्षात ब्रह्म दर्शन का फल मिलता है।

अपने गले में तुलसी की माला धारण करके (लहसुन प्याज छोड़कर) ही नित्य सेवा करें। शैव जन रुद्राक्ष ही पहनें पर चाहें तो शिव जी की प्रसन्नता के लिए तुलसी का दाना भी धारण कर सकते हैं।

प्रश्न 63

वियोग' का दुख दूर कैसे होगा? बिजली का डर नहीं होगा तथा 'दुख' नाशक औषधि क्या हैं।

उत्तर– श्रीकल्याणमित्र नाम मात्र से वियोग' का दुख दूर हो जाता है। वह मिल जाती है

बिजली का डर नहीं होगा तथा 'दुख' नाशक औषधि भी यह हैं। नित्य 100 बार जपें।

श्री कल्याणमित्राय नमः (पुस्तक– महिमा में संकलित) पर ज्ञान से तो सदा के लिए दुख दूर हो जाता है।

एक कथा– ब्रह्माजी– भोग सम्बन्धी प्रारब्धके क्षीण हो जाने पर ही मैं तुम्हें (हे सुतपा!) अपनी दास्य–भक्ति दूँगा।' अभी नहीं। तदनन्तर स्वयं ब्रह्माजीने उन्हें पितरोंकी मानसी कन्या प्रदान की। मुनिप्रवर शौनक ! उसके गर्भसे 'कल्याणमित्र' नामक पुत्रका जन्म हुआ। उस बालकके नित्य त्रिकाल समय में स्मरणमात्रसे किसीको अपने ऊपर वज्र या बिजली गिरनेका भय नहीं रहता। इतना ही नहीं, कल्याणमित्र के स्मरण से निश्चय ही उन बन्धुजनोंकी भी प्राप्ति अति शीघ्र हो जाती है, जिनका दर्शन असम्भव होता है। इस कारण किसी से वियोग होने पर

उससे मिलन के लिए कल्याणमित्र जी का सुमिरन आरंभ कर देना चाहिए – ब्रह्म वैवर्त पुराण ब्रह्म खंड अध्याय 11 से

प्रश्न 64

उपवास की परिभाषा क्या है?

उत्तर–पापोंसे उपावृत्त (निवृत्त) होकर जो गुणोंके साथ वास किया जाय, उसीको 'उपवास' समझना चाहिये। शरीरको सुखा डालनेका नाम 'उपवास' नहीं है'

–स्कंद पुराण वैष्णव खंड 453

प्रश्न 65

सर्प का भय कैसे दूर होगा?

उत्तर–नर्मदायै नमः प्रातर्नर्मदायै नमो निशि।
नमोऽस्तु नर्मदे तुभ्यं त्राहि मां विषसर्पतः।।

इस श्लोक के पाठ से

प्रश्न 66 ध्वजारोपणकी विधि बतलाएं।

उत्तर– एक पुराण के अनुसार– ध्वजारोपणकी विधि बतलाता हूँ।

पूर्वकालमें देवता और असुरोंमें जो भीषण युद्ध हुआ, उसमें देवताओंने अपने–अपने रथोंपर जिन–जिन चिह्नोंकी कल्पना की, वे ही उनके ध्वज कहलाये। उनका लक्षण इस प्रकार है–
ध्वजका दण्ड सीधा, व्रणरहित और प्रासाद (मंदिर/देवालय)के व्यासके बराबर लम्बा होना चाहिये

अथवा..
चार,
आठ,
दस,
सोलह या
बीस हाथ लम्बा होना चाहिये ।

ध्वजाका दण्ड बीस हाथसे अधिक लम्बा न हो और सम पर्वोंवाला हो। उसकी गोलाई चार अङ्गुल होनी चाहिये।

ध्वजके ऊपर देवताको सूचित करनेवाला चिह्न बनवाना चाहिये।

1.भगवान् विष्णुके ध्वजपर गरुड,......
2.शिवजीकी ध्वजापर वृष,
3.ब्रह्माजीकी ध्वजापर पद्म (कमल)
4.सूर्यदेवकी ध्वजापर व्योम,
5.सोमकी पताकापर नर,
6.बलदेव की पताकापर फालसहित हल,
7.कामदेव की पताकापर मकरध्वज,
8.इन्द्रकी ध्वजापर हस्ती,
9.दुर्गा (ह्रीं स्वरूपिणी) की ध्वजापर सिंह,
10.उमा देवीकी ध्वजापर गोधा,
11. रैवतकी ध्वजापर अश्व,
12वरुणकी ध्वजापर कच्छप
13., वायुकी ध्वजापर हरिण,
14.अग्निकी ध्वजापर मेष,
15. गणपति की ध्वजापर मूषक का
तथा
16.ब्रह्मर्षियोंकी पताकापर कुशका चिह्न बनाना चाहिये। ((जिस देवताका जो वाहन हो, वही ध्वजापर भी अङ्कित रहता है।))

विष्णुकी ध्वजाका दण्ड सोनेका और पताका पीतवर्णकी होनी चाहिये, वह गरुड़के समीप रखनी चाहिये। शिवजीका ध्वजदण्ड चाँदीका और श्वेत वर्णकी पताका वृषके समीप स्थापित करे। ब्रह्माका ध्वजदण्ड ताँबेका और पद्मवर्णकी पताका कमलके समीप रखे। सूर्यनारायणका ध्वजदण्ड सुवर्णका और व्योमके नीचे पँचरंगी पताका होनी चाहिये, जिसमें किंकिणी लगी

प्रश्न 67

महाराज जी! यदि कोई किसी पंथ के गुरु से मंत्र दीक्षा लेकर उसका अनुयायी बन गया हो पर कुछ समय पश्चात उसे यह महसूस होने लगे की वह पंथ या उसका गुरु उसके लिए उपयुक्त नहीं है और वह वहा से बिना द्वेष किये किसी अन्य जगह स्थानांतरण करना चाहे तो वह ससम्मान पूर्वक किस तरह प्रस्थान करे क्योंकि वह महसूस करता है की वह वहा बंधा हुआ है स्वतंत्र नहीं है उसकी भावना के अनुरूप कुछ बाते वहा नहीं है तो बिना दोषारोपण

<u>किये वह वहा से किस प्रकार प्रस्थान करें</u> स्वतंत्रता और चयन का अधिकार मनुष्य को भगवान ने दिया है वह ससम्मान किस प्रकार उन मंत्रो दीक्षाओं को अपने उस पंथ के गुरु को समर्पित करके आगे बढ़े क्या इससे गुरु अपमान या द्रोह का पाप तो नहीं बनता है इस विषय मे शास्त्रों और भगवान के वचनों का क्या मत है कृपया हमें बताये. जिससे हम संतुष्ट हो सके हमारा मार्गदर्शन करें जिससे हम स्वतंत्रता और संतोष का अनुभव कर सके।

उत्तर–

शिव पुराण विद्येश्वर संहिता अध्याय 18 तथा अनेक ग्रंथों में स्पष्ट लिखा है तथा लिंग पुराण महाभारत आदि में भी कि –

जिस गुरु के दर्शन या पूजन से मन में प्रसन्नता न हो अथवा भय उत्पन्न हो या विक्षेप उत्पन्न हो उस गुरु से विद्रोह किये बिना दूसरे गुरु की शरण लेकर सेवा आरंभ कर सकते हैं। और यह भी लिखा है कि अपने गुरु से भी अधिक श्रेष्ठ कोई पुरुष मिल जाये तो पूर्व गुरु को बिना बताये उस उत्कृष्ट गुणों से युक्त या अधिक श्रेष्ठ भूमिका वाले पुरुष को गुरु रूप में वरण करके मोक्ष का मार्ग प्रशस्त करना चाहिए।

इसके विपरीत जो लोग यह दम्भ भरते हैं कि गुरदीक्षा के बाद गुरु बदला नहीं जा सकता फिर चाहे वह कैसा भी हो .... यह गलत बात है क्योंकि गुरुगीता में भगवान ने कुछ ऐसे अवगुण बताये हैं जो किसी गुरु में दिख जाए तब उस गुरु का तत्काल त्याग कर धैर्यवान और विशुद्ध गुरु की शरण में चले जाना चाहिए। आप स्वयं गुरुगीता के अध्याय दो में श्लोक 103 के लगभग ये पढ़ सकते हैं।

और उदाहरण नंबर दो –जो दीक्षागुरु अपने शिष्य की पत्नी को या आपकी बहन या आपकी ही पत्नी को काम भाव से देखता है अथवा आप पर 20 लाख के गवन का झूठा आरोप लगा डाला हो और वही डराकर कहता है कि गुरु बदला नहीं जाता तो आप ही बताओ (फिजीकल रूप से प्रज्ञा का इस्तेमाल करके) कि वह गुरु पूजा के योग्य है या भगाने के योग्य।.....................

प्रश्न 68–गुरु कौन कहलाते हैं?

उत्तर–

नित्यं ब्रह्म निराकारं निर्गुणं बोधयेत् परम्।
भासयन् ब्रह्मभावं च दीपो दीपान्तरं यथा ।।

गुरु वे हैं जो नित्य, निर्गुण, निराकार, परम ब्रह्म का बोध देते हुए, जैसे एक दीपक दूसरे दीपक को प्रज्ज्वलित करता है वैसे, शिष्य में ब्रह्मभाव को प्रकटाते हैं।

गुरवो बहवः सन्ति शिष्यवित्तापहारकाः।
तमेकं दुर्लभं मन्ये शिष्यह्यत्तापहारकम्।।

शिष्य के धन को अपहरण करनेवाले पाखंडी गुरु तो बहुत हैं लेकिन शिष्य के हृदय का संताप हरनेवाला एक गुरु भी दुर्लभ है ऐसा मैं शिव मानता हूँ।

चातुर्यवान्विवेकी च अध्यात्मज्ञानवान् शुचिः ।
मानसं निर्मलं यस्य गुरुत्वं तस्य शोभते।।

जो चतुर हों, विवेकी हों, अध्यात्म के ज्ञाता हों, पवित्र हों तथा निर्मल मानसवाले हों उनमें गुरुत्व शोभा पाता है द्य पशुबुद्धि वाला या लोभी दीक्षा देने लगे तो वह परम गुरु नही हो जाता।

गुरवो निर्मलाः शान्ताः साधवो मितभाषिण।
कामक्रोधविनिर्मुक्ताः सदाचारा जितेन्द्रियाः।।

गुरु निर्मल, शांत, साधु स्वभाव के, मितभाषी, काम–क्रोध से अत्यंत रहित, सदाचारी और जितेन्द्रिय होते हैं जो भोगी या स्त्रीलम्पट है वह गुरु शिष्य को जो भी मंत्र देता है ब्रह्मवैवर्तपुराण के अनुसार वह मंत्र दरिद्र कर देता है।

श्री महादेव उवाच

सूचकादि प्रभेदेन गुरवो बहुधा स्मृताः।
स्वयं समयक् परीक्ष्याथ तत्वनिष्ठं भजेत्सुधीः।।

सूचक आदि भेद से अनेक गुरु कहे गये हैं बुद्धिमान् मनुष्य को स्वयं योग्य विचार करके तत्वनिष्ठ सदगुरु की शरण लेनी चाहिए (163) और शिव पुराण विद्येश्वर संहिता अध्याय 18 अनुसार यदि अपने गुरु से भी अधिक श्रेष्ठ ज्ञानी पुरुष मिले तो बिना भय के उस पूर्व गुरु को छोड़कर श्रेष्ठ गुरु की सेवा के लिये जाना चाहिए

याज्ञवल्क्य, बालक शुक्राचार्य व निमि ने भी गुरु के स्वार्थ और लोभादि देखकर उस पूर्व गुरु को त्याग दिया।

सर्वसन्देहसन्दोहनिर्मूलनविचक्षणः।
जन्ममृत्युभयघ्नो यः स गुरुः परमो मतः।

सर्व प्रकार के सन्देहों का जड़ से नाश करने में जो चतुर हैं, जन्म, मृत्यु तथा भय का जो विनाश करते हैं वे परम गुरु कहलाते हैं, सदगुरु कहलाते हैं।

बहुजन्मकृतात् पुण्याल्लभ्यतेऽसौ महागुरुः।
लब्ध्वाऽमुं न पुनर्याति शिष्यः संसारबन्धनम्।।

अनेक जन्मों के किये हुए पुण्यों से ऐसे महागुरु प्राप्त होते हैं द्य उनको प्राप्त कर शिष्य पुनः संसारबन्धन में नहीं बँधता अर्थात् मुक्त हो जाता है।

एवं बहुविधालोके गुरवः सन्ति पार्वति।
तेषु सर्वप्रत्नेन सेव्यो हि परमो गुरुः।।

हे पर्वती ! इस प्रकार संसार में अनेक प्रकार के गुरु होते हैं द्य इन सबमें एक परम गुरु का ही सेवन सर्व प्रयत्नों से करना चाहिए।

पार्वत्युवाच

स्वयं मूढा मृत्युभीताः सुकृताद्विरतिं गताः।
दैवन्निषिद्धगुरुगा यदि तेषां तु का गतिः ।।

पार्वती जी ने कहा

प्रकृति से ही मूढ, मृत्यु से भयभीत, सत्कर्म से विमुख लोग यदि दैवयोग से निषिद्ध गुरु का सेवन करें तो उनकी क्या गति होती है।

श्रीमहादेव उवाच

निषिद्धगुरुशिष्यस्तु दुष्टसंकल्पदूषितः।
ब्रह्मप्रलयपर्यन्तं न पुनर्याति मृत्यताम् ।।

श्री महादेवजी बोले–निषिद्ध गुरु का शिष्य दुष्ट संकल्पों से दूषित होने के कारण ब्रह्मप्रलय तक मनुष्य नहीं होता, पशुयोनि में ही रहता है।

प्रश्न 69

पृथ्वी पर भार स्वरूप पशु के समान विचरण करने वाला कैन है?

उत्तर–

येषां न विद्या न तपो न दानं
ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः।

ते मृत्युलोके भुवि भारभूता
मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति।।

श्लोकार्थ – जिनके पास विद्या, तप, दान, ज्ञान, शील, गुण और धर्म ये नहीं होते हैं, वे पृथ्वी पर भार स्वरूप मनुष्य रूप में पशु के समान विचरण करते हैं।

प्रश्न 70

कौन सा ब्राह्मण गायत्री मंत्र तथा कर्मकाण्ड का अधिकारी नहीं? – एक वैश्य का प्रश्न

उत्तर–

पद्म पुराण, स्कन्द ,ब्रह्म वैवर्त व श्रीमद्देवीभागवत महापुराण के अनुसार जिस जन्मजात ब्राह्मण का यज्ञोपवीत संस्कार नहीं हुआ या समय अवधि निकलने पर भी अनिवार्य संस्कार नहीं हुये अथवा यज्ञोपवीत धारण करने के बाद जो पराई स्त्री से संभोग का सुख लेकर पतित हो गया अथवा जिस ब्राह्मण ने लगातार तीन दिन तक संध्या नहीं की , जो ब्राह्मण गायत्री मंत्र की दीक्षा से हीन है (बिना मंत्रदीक्षा के गायत्री संध्या कैसी ?) वह जन्मजात ब्राह्मण भी इन चारों पुराणों के अनुसार (उपर्युक्त में से एक भी अवगुण होने पर) निम्न वर्ण को प्राप्त हो जाता है। ऐसे पतित ब्राह्मण को योग्य ब्राह्मण अपनी कन्या का दान भी न करें जब तक वह प्रायश्चित न कर ले उसे उच्च स्तरीय वर्ण के लोग अपने आध्यात्मिक कर्मकांड आदि में निमंत्रित भी न करें न ही आमंत्रण दे।

और एक महत्वपूर्ण बात– वैश्य भी "परनारी भोग युक्त" व शिखा यज्ञोपवीत से हीन हो , "संध्यापूत न" हो तो वह भी गायत्री मंत्र का अधिकारी नहीं।

कुछ कुछ लोग ईर्ष्यावश भी ऐसे प्रश्न पूछते हैं अतः उचित होगा कि आप स्वयं योग्यता पाकर गायत्री के 4–5 पुरश्चरण कर डालो। सामने वाला अयोग्य है फिर भी गायत्री का जप बिना प्रायश्चित के कर रहा है तो उसका पाप वह भोगेगा।

प्रश्न 71

दान के कितने प्रकार हैं ? सुना है कि अपनी माँ को धन या वस्त्र आदि अर्पण करने का भी महाफल है जबकि पुत्र या पत्नि को देने से एक चौथाई फल ।

उत्तर– दान (धन या द्रव्य का) के 3 प्रकार के हैं।

- ●शुक्ल
- ●शबल
- ●कृष्ण

जिनमें शुक्ल सर्वोत्तम है।

●वेदों को पढ़ाकर या यथार्थ ज्ञान विज्ञान (पराविज्ञान) देकर अथवा ईश्वर को अखंड ब्रह्मचर्य पूर्वक अपना जीवन सरेंडर करने पर प्रजा, शिष्य या भक्त आदि से जो धन प्राप्त होता है वह सर्वोत्तम धन शुक्ल ही है।

पर पाप का धन यदि ये ब्राह्मण या संत आदि लें तो उसका परिणाम घातक हो सकता है ऐसे में गायत्री हृदय का पाठ या शिव अथर्वशीर्ष साधकों या ब्राह्मण आदि को बचा लेता है मात्र ब्रह्मभावी (अभिन्नता से तद्भावित) को किसी भी प्रकार का पाप पुण्य या दोष नहीं लगता। शेष चारों वर्ण के लोग किसी के घर के खाये हुए अन्न से भी विकार ग्रस्त हो सकते हैं जिसका अनाज खाया जाता है उस अन्न में अन्नदाता के पाप कुंडली बनाके बैठे रहते हैं अतः इसी कारण जो लोग मुफ्त में भोजन करने का सोचते हैं वे पाप का ही भक्षण करके पापी हो जाते हैं। इसी कारण ब्रह्म वैवर्त पुराण और श्रीमद्देवीभागवत महापुराण में कहा गया है कि पाप की कमाई करने वाले , मदिरा पीने वाले का या कुलटा अथवा वैश्या का अन्न खाने वाला उसके पापों का आठवां अंश स्वयं भोगता है।

●कन्या से, सूद, व्यापार (धंधा व्यवसाय या नौकरी) खेती और बिना पुरुषार्थ के मात्र याचना (माँगना) से मिला धन शबल है।

दान फल –

शुक्ल धन के दान (संत या संध्यापूत पात्र को तीर्थादि में) से देवयोनि प्राप्त होकर महा फल प्राप्त।

● दान फल – राजस भाव से शबल धन के द्वारा याचकों को दान से मानव योनि में भोग । तथा इस ईमानदारी की कमाई से निष्काम भाव होकर योग्य संध्यापूत ब्राह्मण या तपोनिष्ठ अथवा पराविज्ञानी को दान करोगे तो भी उच्च लोक में लाभ ।

●तमोगुण से आवृत होकर कृष्ण धन (कालाधन या पाप की कमाई से, चोरी या लूट से , नापतौल में वस्तु कम करके जो धन आता है वह , वेश्यावृत्ति करके उसके बदले धन लेकर अथवा शासन का धन हड़पकर उस) से दान द्वारा पहले तो आपको पशु योनी मिलेगी क्योंकि आपने धन चुराया या लूटा। फिर पशु, पक्षी आदि योनियों में दान का फल प्राप्त होता है। पर इस दान से मनुष्य योनी में भोग नहीं मिलते। अतः पाप की कमाई करो ही मत या उस कमाई से दान करो तो पशुयोनी (कुत्ता बिल्ली आदि) बनने को तैयार हो जाओ । फिर उसमें आपको जो कभी कभार लोग जूठे मालपुआ या जूठे गुलाब जामुन बाहर फेंकेगे उसी को चाटते रहना। अतः अंशभूतशिव की बात मानों और चोरी लूट वेश्याकर्म आदि छोड़ दो। और

संत , संन्यासी या वीतरागी गुरु न बन पाओ या श्रेष्ठ कर्मकांड न कर पाओ तो नौकरी धंधा करो और उसमें छःसात घंटे ईमानदारी से सेवा करो।

नोट – अपनी जन्म देने वाली माँ को दान का वही फल है जो वेदपाठी, अग्निहोत्री और जितेन्द्रिय संध्यापूत ब्राह्मण को दान का है ऐसा अग्नि पुराण कहती है। अतः पात्र ब्राह्मण न मिले तो यह न सोचे कि दान किसको करें। जब तक माँ जीवित है तब तक अपनी माँ को तृप्त करें इससे वही आशीर्वाद मिलेगा जो वसिष्ठ या वेदव्यास जैसे ब्राह्मण को दान देने से मिलता है। पर संयोग से संध्यापूत जितेन्द्रिय और वेदपाठी ब्राह्मण भी मिल जाये तो उनको भी कभी कभार सामर्थ्य के अनुसार दान करते रहें। यदि तीन वर्ण के लोग ही उनको दान नहीं करेंगे तो वे बेचारे अपने परिवार का पालन पोषण कैसे करेंगे और मजबूरी में वे मध्याह्न की संध्या छोड़कर शहर की ओर धनार्जन के लिए भागेंगे इसका दोष तीनों वर्ण के लोगों को भी लगेगा। ईमानदारी से धन कमाकर अपना दशांश दान जितेन्द्रिय, क्षमाशील व संध्यापूत ब्राह्मण या साधु संत तथा गौ सेवा में लगाना ही चाहिए।

प्रश्न 72 ब्रह्मचारी रहना चाहते है महिना पंद्रह दिन पालन भी करते है कभी कभार दो तीन माह भी अच्छी स्थिति चलती है पर टूट जाता है कोई उपाय ? प्याज़ लाहसुन भी नही खाते।–**एम.एस. सिसोदिया**

उत्तर– जब तक देह भाव है तब तक अखंड ब्रह्मचर्य का पालन न तो संन्यासी के लिए संभव है न ही गृहस्थ के लिए। इस बात को नोट कर लेना। ये शाकाहार या शुद्ध भोजन एक आंशिक उपाय अवश्य है पर सब कुछ नहीं। जब तक कामारि महादेव का शिवत्व प्राप्त नहीं होगा तब तक इस विश्व में तो क्या अखिल ब्रह्माण्डों में कोई देवता भी अखंड ब्रह्मचारी नहीं हो सकता। श्मशान की चिता देखकर 24 घंटे तक मरकट वैराग्य तो हो सकता है पर सतत् वैराग्य न होने से वही पशुता जाग्रत हो जायेगी।

अतः स्थिर उपाय शिवत्व है। जहाँ जीव और ईश्वर दोनों संज्ञा का लोप हो जाता है। और यदि आप गृहस्थ हो तो भी स्त्री को भोग का एक खिलौना मत समझना। जो सदा ही संतान की कामना लेकर पत्नी से संसर्ग करता है वह गृहस्थ भी ब्रह्मचारी कहा जाता है। महान ऋषियों ने भी संतानें उत्पन्न की थी पर बिना संतानेच्छा के वे रतिभोग नहीं करते थे आजकल के वासनात्मक लोगों की तरह। ऋषिवर्ग ने आजकल के स्त्रीलम्पट पुरुष की तरह बिना संतानेच्छा के पत्नि के गर्भ को दूषित करने का प्रयास नहीं किया।(समझ गए होंगे शायद सभी गृहस्थ लोग हम कहना क्या चाहते हैं आजकल लोग संतान के इच्छुक न होकर नारी को भोग का साधन समझ बैठे हैं बस इसी कारण वे गृहस्थ ब्रह्मचारी नहीं मात्र योनी लम्पट हैं।

प्रश्न 73

हे अक्षयरुद्र! गृहस्थ जीवन में, आधुनिक युग का ब्राह्मण अपनी ब्रह्मचर्य वाली जीवनशैली कैसे निर्धारित करे? हमारी जीवनशैली तथा दिनचर्या कैसी होनी चाहिए?

उत्तर–

युग कोई सा भी हो पर जो मानव मन सहित सभी 10 इंद्रियों पर विजय नहीं पा लेता तब तक वह न तो साक्षात् ईश्वर के दर्शन कर सकता है न ही परम मुक्ति। न ही वह कामी भक्ति की पराकाष्ठा पर पहुंच सकता है।

बैसे संयम न हो तो परस्त्री को त्याग कर स्वनारी संग में अधिक दोष नहीं।

अधिक दोष नहीं .....ऐसा इस कारण कहा कि परायी नारी तो दूषित नहीं होंगी इससे।

वराह पुराण में संतान की कामना के अलावा मात्र क्षणिक सुख के लिए कोई भी जगह नहीं बताई।

और अति वासना सताये तो भी चतुर्थी ,अष्टमी और एकादशी (एकादशी व्रत वाले द्वादशी को भी नियंत्रण में रखें अपने आपको) तथा अमावस्या और पूर्णिमा को भी व्रत भंग न करें।

श्राद्ध काल (16 दिन) ,स्त्री के उपवास के समय, संध्याकाल में ,दिन में भी संसर्ग न करें।

अन्यथा भयंकर हानि होगी। यह जीवन भोग के लिए नहीं मात्र परम योग के लिए मिला है। पर परायी नार के चरणों को ही निहारें या उसके चेहरे को दुर्गा राधा समझकर देख सकते हो । उसके गुप्त अंगों को न देखें । उसके प्रति कामुक भाव न रखें। हालांकि स्वपत्नी को भी बिना संतान की इच्छा से रतिभोग कर्म से भोगोगे तो तेज (वीर्य) का भूमि पर स्पर्श या तेज का नाश अवश्य होगा जिसका पाप भी धरा प्रसंग में वराह पुराण में लिखा है पर परायी नारी (विवाहित या किशोरी नवयौवना) को यदि भोगा तो वह पाप 100 गुना अधिक होगा। जो पुरुष किसी पराई नारी (किसी की पत्नी या किसी पिता की अविवाहित पुत्री) की योनी दूषित कर देता है उसका प्रायश्चित इतना आसान नहीं क्योंकि वह किसी नारी को कुलटा बनाने वाला महापापी ही है अथवा जिस क्वांरी कन्या को भोगा है उसके होने वाले पति के प्रति भयंकर घात है । (आप भी विवाह से पहले यही सोचते हो कि काश ऐसी युवती मिले जो शुद्ध हो तो सोचो आप काहे किसी नवयौवना या किसी क्वांरी कन्या को दूषित कर रहे हो)

दूसरी बात– आप सदा यह चाहते हो कि आपकी शादीशुदा बहन या क्वांरी बेटी सदा ही शुद्ध रहे तो हे मूर्खों ! आप काहे किसी अन्य भैया की बहन को भोग रहे हो या क्यों उसके तन को दूषित करने पर तुले हो। महामानव या देवलोक के किसी देवता का अवतार या देवता का अंश वही है जो सभी परायी कन्याओं को अपनी बहन या बेटी समझता है फिर चाहे वह देवांश जाति का चर्मकार ही क्यों न हो चाहे विदुर जैसा शूद्र ही क्यों न हो वह धर्मपरायण

साक्षात् देवता ही होता है इसके विपरीत यदि आप वर्ण के ब्राह्मण या वैश्य आदि हो पर परायी स्त्री को भोग चुके या मित्र की पत्नी या आफिस की स्त्रीकर्मचारी के साथ मूँह काला कर चुके तो अक्षयरुद्र अंशभूतशिव यह सत्य कहता है कि आप किसी राक्षस के अंश हो या वर्ण संकर पर आपका रहस्य यह दुनिया नहीं जानती। मात्र नाम का ही डुप्लीकेट थप्पा लगा हुआ है। इसी कारण आप दो या तीन काल की संध्या भी नहीं करते और इसी कारण परायी योनी के दर्शन कर करके तथा इसी कारण परायी स्त्री के तन का गंदा तरल पदार्थ अमृत के समान समझकर पी रहे हो और यमदेव से भी नहीं डरते। अधिक जप तप व्रत–उपवास न हो सके तो शुद्ध तो रहो हे मानवों !

और हर पुराण में चारों वर्णों के नियम दिये हैं वह पढ़ सकते हो। पर जो वीतरागी, मुमुक्षु, अनन्य भक्त, जितेन्द्रिय या ब्रह्मनिष्ठ हो गया वह चाहे नारी हो या नर चाहे वर्ण संकर या शूद्र या वैश्य उसे किसी भी प्रकार का कर्तव्य और अकर्तव्य नहीं उसे विहित और अविहित भी शेष नहीं। पर जिसका अंतःकरण मलिन है या जो परायी नार, पराये धन पर नजर गड़ाये हैं उन चारों वर्णों के लिए अलग अलग नियम दिये हैं।

प्रश्न 74 कल्याण के लिए मार्ग कितने हैं ? –रमण सिंह ठाकुर

उत्तर– केवल दो ही मार्ग हैं प्रवृत्यात्मक अर्थात प्रवृत्ति और निवृत्ति मार्ग ।

जो 18 घंटे ही जनकल्याण करना चाहे और जिसे आसक्ति व लोभ न हो, न ही संसार या स्त्री भोग की कामना उस वीतरागी के लिए उपनिषदें कहती हैं कि वह नैष्ठिकब्रह्मचर्य के साथ निवृत्ति मार्ग पर चले और जो चंचल मन वाला है जो अपने आपको 60 साल लगातार तो क्या 1 साल भी बिना संसर्ग व बिना संयमित नहीं रख सकता उसे भोग के साथ साथ औपचारिक साधना की आज्ञा दी गई है ताकि 45–50 की आयु तक राग नष्ट हो जायें।

प्रश्न 75 सतत स्वरूपनिष्ठ कैसे रहा जा सकता है भगवन! कृपया मार्गदर्शन करें...

–युवराज सिंह राजपूत बेमेतरा छत्तीसगढ

उत्तर– साधन चतुष्ट्य संपन्न होने पर ।

जो लोग गुरु या भगवन के रूप की पूजा मात्र करते हैं न कि उनके चरित्र को अपनाते हैं उन लोगों को शान्ति नहीं मिलती। योगवाशिष्ठ के अनुसार यथार्थ व सम्यक् पूजा साधन

चतुष्ट्य से संपन्न होना है न कि मिठाई या फूल पत्ते चढ़ाना। ये पत्रम् पुष्प आदि बालकवत् सेवा है इस पूजा से जीवन्मुक्त नहीं होता कोई। अतः शम दम युक्त हो जाओ जितेन्द्रिय बनो साधन चतुष्ट्य को समझो और महावाक्यों का श्रवण करके कैवल्यामय हो जाओ। तभी सतत स्वरूपनिष्ठ हुआ जा सकता है अन्यथा पुनर्जन्म पक्का।

उमाशंकर व्यास राजस्थान का महाप्रश्न 76–

प्रश्न 76– क्या गृहस्थ आश्रम से मंगल नही होगा? अर्थात् मैने सुना है कि–"आप प्रश्नोत्तर भी ले रहे है तो मेरा भी एक प्रश्न है कि सतयुग में धर्म मानव वेद का सहारा लेते थे द्वापर में श्री कृष्ण ने गीता ज्ञान दिया और वन्दे जगत गुरु कहलाये। उन्होंने ही बताया कि देश काल परिस्थिति के अनुसार हमेशा निर्णय लिया जाता है। फिर कलयुग में नाथ सम्प्रदाय या यूं कहूं गुरु की महत्ता काफी रही अब समय और आगे निकल गया , अभी दान भी मानव कर रहे है, तो पूजा पाठ भी, संत जन तप भी कर रहे है , तो धर्म ध्वज लहराने हेतु कथावाचक अपनी कथाओं के माध्यम से कथाएं भी कर रहे है लेकिन दौर ऐसा चल रहा है कि 3 साल के बच्चे के हाथों में मोबाइल भी है, अब किस दिशा में विज्ञान आने वाली पीढ़ियों को भेजेगा पता नही तो क्या ऐसे में नैष्ठिक ब्रह्मचर्य का पालन कल्याण के लिए अनिवार्य तो नही हो सकता। गृहस्थ अपने धर्म का पालन करते हुए क्या ईश्वर के मार्ग की और अग्रसर नही हो सकता ?? जब शरीर मे सांस, दिल की धड़कन , आत्मा, मानव का मस्तिष्क और विवेक , एक साथ कार्य कर सकते है, तो प्रकृति द्वारा प्रदत्त अपनी आवश्यकताओ की पूर्ति करते हुए ईश्वर के मार्ग पर क्यों नही चल सकता? क्या ऐसा है जो सरल हो सहज हो जो आम मानव के ह्रदय में बैठाया जा सके और उसे ईश्वर की और चलने को मदद कर सके?? मेरा सोचना ऐसा है कि ईश्वर ने सभी को अपने कर्तव्य दे कर भेजा है धरती पर कोई भोग भोग रहे है, तो कोई धर्म ध्वज लहरा रहे है, कोई तप कर रहे है तो कोई देश के लिए अपना बलिदान कर रहे है, आदि आदि तो जब स्त्री से इतना ही दूर अगर मानव को होना था तो ईश्वर ने उसे बनाया ही क्यों??

अक्सर आप विवाह न करने की सलाह ही क्यों देते हो।

उत्तर–

हमने ऐसा तो नही कहा कि विवाह सभी के लिए घातक ही है। पर जो स्त्री के बिना न रह पाए या जिनका वंश समाप्त होने की कगार पर हो उसको तो विवाह करना ही चाहिए।

विवाह अनुचित नहीं पर विवाह के लिए पहले निष्पाप होना भी अनिवार्य है कर्दम जैसा तप करके। तदोपरान्त धनवान बनें ताकि पालन पोषण में परेशानी न आये । फिर (निष्पापता और धन के बाद) देवहुति जैसी प्रशस्त स्त्री मिले तो विवाह करें।

और दो तीन या चार –पाँच संतान के बाद आजीवन अखंड ब्रह्मचर्य पूर्वक रहें यह वराह पुराण कहता है।

जो गृहस्थ नर 2–4 संतानों के बाद भी स्त्री को वासना के रूप में भोगता है तथा धन से उसे या बच्चों को दुखी करता है वह पति नरक ही जाता है। तथा द्विज 50–55 की उम्र के बाद वानप्रस्थ या एकान्त जीवन जिये अन्यथा वह परम गति नहीं पाता। जिसमें संयम की क्षमता न हो वह विवाह अवश्य करे पर स्त्रीलम्पट तो न बनें। स्त्री का महा सम्मान करना ही चाहो तो 2–4 संतानों के बाद उसे शुद्ध रखें। अधिकांश लोग वासना को बुझाने के लिए श्शादी करते हैं और नाम गृहस्थ का लेते फिरते हैं यह अनुचित है। रामकृष्ण परम हंस जैसा आज एक भी गृहस्थ नहीं जो वासना से पूर्णतः रहित थे। और आपने यदि 14से 25 तक अखंड रूप से संयम रखा हो तो निश्चित ही आप आदर्श गृहस्थ बन पाओगे अन्यथा सब कहने और सुनने की बाते हैं। असली गृहस्थ बिना संतान की स्पृहा के स्त्री को नही भोगता ।

प्रश्न 77–क्या संग्रह करना अनुचित है?

आपसे क्या कहें हम स्वयं से ही कह रहे हैं........हे अक्षयरुद्र! देख सब खंडहर बन रहे हैं।

जिन किलो में एक राजा अपने हुंकार से बोलता था आज उन पर चमगादड़े घूम रही हैं। और वंश भी नहीं बचा। ये तो प्राकृत मनुष्यों की बात है भीष्म पितामह भी जिस वंश में जन्में वह वंश भी अता पता नहीं और लव कुश के बाद कुछ पीढ़ियोंतक रघुकुल चला वह भी नहीं बचा तो आप क्यों संसार में आसक्त हो।

न तो 50 करोड़ के महल का सपना देखो न ही उसमें आलीशान सामग्री भरने की इच्छा करो। बस दो वक्त की रोटी खाओ और मस्त रहो। अपने आप सहज ही (जो धन आता जाए उसके अनुसार) खर्च करो ।

बस अक्षयरुद्र की तरह फक्कड दास बने रहो तभी ब्रह्मानंद सतत् पाओगे अन्यथा जितना अधिक संग्रह करोगे उतने ही समानुपातिक रूप में दुख और विक्षेप पाओगे।

प्रश्न 78 कुछ महत्वपूर्ण बात कहो–

उत्तर– हर वाक्य महत्वपूर्ण बात ही होता है फिर भी श्रवण करो।

1.जिस जीव से आप सुख चाहते हो और उस सुख के बदले आप उसे आश्रय देते हो तो एक बात मत भूलना कि .वह जीव अपने साथ सुख के साथ रोग भी लायेगा और उसके कारण शोक की घटनाएं भी घटेंगी । पुष्प सुगन्धित होता है तो समय आने पर सड़ता भी है । गाड़ी सुख देती है तो कभी सुनसान वन में पंचर भी होती है। अतः इसी कारण मेरे भाई हे हंस ! तू निवृत्त होकर आत्मा में ही रमण कर और अवधूत बन। संसार के सुख का लोभ बंदर की तरह नचाता है। यह सब मत भूलना हे हंस हे अक्षयरुद्र तू ब्रह्म स्वरूप है किसी के अधीन तेरा सुख नहीं !!!!

2.जब तक आप बन्धु बान्धवों को भौतिक लाभ देते रहोगे या जब तक आपके पास कुछ माल पानी है तभी तक आपको सम्मान मिलेगा और जैसे ही आपका धन , पद और कीर्ति या ये

सब नष्ट हुए तो समझ लेना कि हे अक्षयरुद्र! बस उनका साथ इतना ही था। अतः तू पागल मत बन और जो निस्वार्थी देव है बस तू उसकी ही वन्दना कर इन लोभियों के आगे पीछे मत नाच। ईश्वर का ही कोई स्वार्थ नहीं होता वह बदले में आपसे कुछ भी नहीं मांगता। बस धर्म का पालन करते रहो। फिर सब कुछ तुम्हारा है और तुम ईश्वर के। अतः तू तो मात्र अध्यात्म का संग्रहण कर न कि स्त्री व संतानों का संग्रहण। अथवा जो अन्य हैं वे निस्वार्थी हो तो परीक्षण करके समीप ला सकते हो वे कभी भी विश्वास घात नहीं करेंगे।

प्रश्न 79– दुर्गा देवी या भगवती काली का कोई स्तोत्र पढ़ने के लिए क्या सबकी दीक्षा लेनी पड़ेगी? –प्रवीण जी

उत्तर– स्तोत्र के लिए दीक्षा की आवश्यकता नहीं होती। स्तोत्र का एक लाभ यह अतिरिक्त ही है कि बिना दीक्षा के भी स्तोत्र का भक्तिपूर्वक अनुष्ठान करने पर स्तोत्र के अधिष्ठाता का दर्शन आसानी से उपलब्ध हो जाता है। याज्ञवल्क्य जी को तो उनके गुरु ने गलती न होने पर भी

शाप दे डाला था पर याज्ञवल्क्य जी ने हिम्मत न हारकर स्वरचित स्तोत्र से भगवान सूर्य का अनुष्ठान किया उस के फल से इनको भगवान सूर्य ने गुरुदीक्षा भी दी और देवी शारदा का गुप्त मंत्र भी देकर कृपा की।

प्रश्न 80

महाराज श्री मेरा ये प्रश्न है कि मैं श्री संप्रदाय से दीक्षित वैष्णव हूँ पर मैं तंत्र मार्ग अपनाना चाहता हूँ , तंत्र में जो उपरी विद्या का काट हो सके , और लोक कल्याण हो सके , जो व्यक्ति भूत , प्रेत , तंत्र से पीड़ित हैं , उन्हें में सहायता कर सकूं परंतु मेरा मन विचलित है ,इष्ट निर्धारण नहीं हो पा रहा है कभी हनुमान जी में मन लगता है तो कभी नृसिंह , कभी देवी में मन लगता है तो कभी शिव में

उत्तर– एक इष्ट चुनें तब ही आगे कुछ हो पायेगा तथा पहले तो पुरश्चरण से इष्ट देव के दर्शन करें अन्यथा ये तंत्र यंत्र आदि से आप उलझ जाओगे।

प्रश्न 81– महाराज जी! आप किसी मनुष्य का वर्ण जन्म से मानते है या कर्म से क्योंकि आज ज्यादातर गुरु या संत कर्म से वर्ण का डंका पीटते है और जन्म आधारित वर्ण व्यवस्था का विरोध करते है और जो परम्परा प्राप्त संत परम्परा है उसके आचार्य जन्म आधारित वर्ण व्यवस्था मानते है जो श्रुति स्मृति पुराणोंक्त व्यवस्था है जो आज बहुत संघर्ष से जूझ रही है। तर्कों की कसौटी पर जब जन्म आधारित वर्ण व्यवस्था को उतारता हूँ तो सत्य लगता है जिस प्रकार सिँह का शावक सिंह गाय का बच्चा गाय जन्म से होता है और सिंह शिकार करके मांस भक्षण करता है जबकि गाय जन्म से शाकाहारी होती है इससे सिद्ध होता है की आपका वर्ण और कर्म दोनों जन्म आधारित है तो उसी प्रकार ब्रह्मण का पुत्र जन्म से ब्रह्मण क्षत्रिय का पुत्र जन्म से क्षत्रिय वैश्य का पुत्र वैश्य शूद्र का पुत्र शूद्र जन्म से ही होगा और उनका कर्म भी उनके जन्म के अनुसार होगा कर्म के आधार पर नहीं जन्म आधारित वर्ण व्यवस्था ही सत्य है पर मैकाले की दूषित शिक्षा के परिणाम स्वरुप आज कर्म आधारित वर्ण व्यवस्था का ही शोर है हिन्दुओ के कई प्रसिद्ध आचार्य कथावाचक भी इसका प्रचार करते हुए शास्त्रों की धज्जिया उड़ाते है उदाहरण के किये मेरे पिता और माता दोनों जन्म से क्षत्रिय है दोनों का शुद्ध रक्त मुझमे मौजूद है मेरी धर्मपत्नी भी क्षत्रिय है जन्म से मेरे पिताजी ने 8 से 10पीढ़ियों का डाटा भी हमारे पूर्वजो का रखा हुआ है मैंने मेहनत करके हमारी शुरुवात कहा से हुई 60,62 पीढ़ियों तक का रिकॉर्ड सुरक्षित रखा हुआ है हमारी वंश परा मे आज तक हमारा कुल सुरक्षित है पर आपसे प्रार्थना है आप इन बातो पर यथार्थ प्रकाश डाले जिससे जो भ्रम बन सकता है वह प्रकट हो जाये और हम आने वाली अपनी पीढ़ी को जन्म आधारित वर्णव्यवस्था का सत्य

बताकर उनका भविष्य सुरक्षित करके उनके कल्याण का मार्ग प्रसस्थ कर सके। हे श्री अक्षयरुद्र महाराज जी! हम वर्ण से क्षत्रिय है इसलिए क्षत्रिय का क्या धर्म कर्म और कर्तव्य है यहाँ जानना चाहते है और अपने अन्य वर्ण ब्राह्मण, वैश्य व शूद्र भाई लोगो का भी कर्म धर्म और कर्तव्य है जानना चाहते है ताकि हम सबका मे जिनका कुलधर्म अभी तक सुरक्षित है वह बचा रहे वे वर्णशंकरता को न प्राप्त हो और विधर्मी होने से बचे रहे जिससे उनका और सनातन का कल्याण हो. और एक बात और यदि कोई वर्णशंकर या विधर्मी मलेक्ष या सनातन से इतर दूसरे पंथ या रिलिजन मे जा चुका हो या उन दूसरे मजहबो का कोई अन्य भी हो और उसे आभास हो की उससे अपने धर्म को छोड़कर उसने गलती की उसे पश्चाताप हो वह लौटकर सनातनी हिन्दू बनकर सनातन की सेवा करना चाहे तो वह किस प्रकार सनातनी बन सकता है वह किस कालम मे रखा जायेगा अर्थात वह क्षत्रिय ब्रह्मण वैश्य शूद्र वर्णशंकर अवर्ण हिन्दू सनातनी होगा क्या होगा और उसका सनातन मे आने का क्या सही तरीका होगा और उनके भी धर्म अर्थ काम मोक्ष और कल्याण का मार्ग क्या होगा उनकी शादी विवाह रोजगार कर्म रोटी बेटी की क्या मर्यादा होंगी।

मेरी यह जिज्ञासा मेरे स्वयं और सबके हित की भावना से जुड़ी अतः आप से प्रार्थना है की मेरी इस जिज्ञासा और प्रार्थना को आप अपनी पुस्तक '' आपके प्रश्न'' मे स्थान दें और इसका सत्य समाधान हम जिज्ञासायुक्त भक्त साधको के समक्ष करें जिससे हम सभी कल्याण को प्राप्त हो सके ।हम सभी पर अनुग्रह करें हे अंशभूत शिव महाराज जी ! आपको इस भक्त का प्रणाम माँ जगदम्बा ,परमात्मा और गुरुतत्व की कृपा आप पर सदा बनी रहे। या वर्ण कर्म और जन्म दोनों से मानते है यह भी बतायें।

जय माँ नमन। पुनः नमन।

उत्तर–

गौरव जी! बहुत उत्तम प्रश्न किया है आपने। हम जो बताने वाले हैं वह श्शास्त्र सम्मत ही है जो मानेंगे वे कल्याण को ही प्राप्त करेंगे। वर्ण व्यवस्था जन्म से ही होती है। यह शाश्वत सत्य है । ब्राह्मण की संज्ञा के लिए लिए ब्राह्मणी माता का रज और ब्राह्मण पिता का वीर्य ही जन्म के कारक हैं।

यही परम सत्य है, पर कुछ और कंडीशन भी धर्म शास्त्रों में हैं – वह सुनें

1. ब्राह्मण वर्ण के पुरुष से यदि कोई क्षत्रिय या वैश्य वर्ण की क्वांरी कन्या विवाह करना चाहे तो वह निःसंकोच कर सकता है और उसकी संतान भी ब्राह्मण ही कहलायेगी पर वह दासी अर्थात् शूद्र स्त्री से विवाह नहीं कर सकता। ऐसा पुराणोक्त वचन है इस कारण हम भी मानते हैं।

उदाहरण– पराशर पिता और माता सत्यवती का पुत्र वेदव्यास इसी कारण ब्राह्मण कहलाये इस संदर्भ में माँ ब्राह्मण नहीं थी वह माँ मछली के गर्भ से उत्पन्न थी जो कि किसी क्षत्रिय के वीर्य से जन्मी थी। पर इन वेदव्यास जी के शिष्यों में हजारों शिष्य श्रोत्रिय ब्राह्मण ही थे। और इन वेदव्यास ने अपने तेज को एक शूद्रा(दासी) में भेजा इस कारण विदुर को ब्राह्मण नहीं माना गया। वेदव्यास का वीर्य भी नियोग नियम से विदुर को ब्राह्मण की उपाधि न दे सका।

●● वसिष्ठ जी पहले ब्रह्मा जी की संतान थे अतः ब्राह्मण थे पर निमि के शाप से वे इस बार पुनर्जन्म में एक अप्सरा के कारण उत्पन्न हुए पर मित्रावरुण देवताओं का वीर्य था इस कारण वे इस बार भी ब्राह्मण कहलाये। लेकिन यदि माँ शूद्र होती तो वे शूद्र कहलाते। पर अप्सराएं देवकोटी की होने से ब्राह्मण क्षत्रिय या वैश्य से कम नहीं होती।

●● दूसरी बात यह है कि हर शूद्र या वर्ण संकर अथवा चाण्डाल सदा के लिए शूद्र या हीन आदि ही कहलाये यह अनिवार्य सिद्धांत नहीं यह बात श्रीमद्भागवत महापुराण 7/11/35 से स्पष्ट हो जाती है। अतः इस पक्ष में जाति का चर्मकार या हरिजन भी यदि रैदास की तरह साधन चतुष्ट्य (विवेक वैराग्य,मुमुक्षा व षड् संपत्ति) से संपन्न हो चुका हो तो उसे पूर्व जन्म का कोई महायोगी या योगभ्रष्ट महात्मा समझकर **ब्राह्मण ही माना जाए** ऐसा भागवत कहती है। अगले 100 सालों में संभव है कि कुछ स्वार्थी लोग इस श्श्लोक को भागवत से हटा दें इस कारण हम कल्याण के भाव से यह कहते हैं कि तीन वर्ण के लोग 1–1 प्रति भागवत की अवश्य रखें।

●● और तीसरी बात जो अपरोक्ष ज्ञान से तद्भावी हो गया वह चारों वर्णों से परे महावर्णी कहलाता है न ही ब्राह्मण न ही दास। इस कारण उसके लिए भस्म धारण करने का मंत्र भी शिवोऽहम् है न कि चारों वर्णों का। सभी गीताओं में उसको परात्पर ब्रह्म व प्रभु का स्वरूप बताया है और शिव पुराण में साक्षात् अप्राकृत शिवरूप, परात्पर ब्रह्म व महारुद्रगण। न कि ब्राह्मण या शूद्र आदि। अवधूत उपनिषद तथा अवधूत गीता में वह साक्षात् पर ब्रह्म ही घोषित है।

●● पराविज्ञान की द्रष्टि से देखो तो एकमात्र अद्वैत का सार एकत्व अर्थात् कैवल्या है जो वज्रसूचिक उपनिषद से अभिन्नता का सूचक है। और एकमात्र यही सच है। इस उपनिषद के अनुसार बाह्य आवरण या जन्म का या कर्म का संबंध ब्राह्मण शब्द से नहीं। ब्राह्मण शब्द मात्र कैवल्या धारी की संज्ञा है।

प्रश्न 82

एक साधु ने शिवलिंग बनाई थी क्या उस शिवलिंग को समर्पित नैवेद्य खा सकते है?

उत्तर – हाँ, साधु संत सिद्ध द्वारा बनी तथा अनेक प्रकार की शिवलिंग के नैवेद्य पर सबका अधिकार है।

(शिव नैवेद्य संबंधित रहस्य के लिए अक्षयरुद्रस्य पुस्तक शास्त्रों के अद्भुत रहस्य का के पाठ 115 का अध्ययन करें जो पृष्ठ 177 पर है । और इसी के अध्याय 117 पर यज्ञोपवीत, चंदन , चावल आदि अर्पित करने के मंत्र भी है तथा आगे अध्याय 118 में ध्यान पूजन का विस्तार है। और अध्याय 121 में एक ऐसा स्तोत्र है जो मात्र एक माह के अनुष्ठान से महानतम कृपा कर देता हे और अध्याय 123 में परम रहस्य (इस स्तोत्र के एक ही बार उच्चारण से शिव लोक) पर त्रिपुण्ड्र व रुद्राक्ष धारण करके उत्तराभिमुख होकर शिवालय में कुशासन या कंबल के आसन पर बैठकर जपें किसी भी सोमवार को निशीध काल में।

प्रश्न–83 क्या महिलाएं शालग्राम की पूजा कर सकतीं हैं ? – पूजा शर्मा

उत्तर– सभी महिलाएं नहीं कर सकती। महिलाएं 9 प्रकार की होती हैं यह हमनें अपनी पुस्तक नारी जीवन में भी लिखा है ये तो शालग्राम जी की बात है शिवलिंग को भी हर (कैसी भी) नारी नहीं छू सकती शिवलिंग को मात्र जल अर्पित कर सकती है। पर आजकल परपुरुष गामी कुलटा नारी या पति निंदक भी अपने हाथ से दूध दही घी रगड़ रगड़कर शिवलिंग को घिस रही हैं यह शास्त्र विरुद्ध है। शिव चरित मानस में हमने इसका प्रमाण भी दिया है। नारियों को शिवाय नमः जप का अधिकार है और रुद्राक्ष धारण करने का भी तथा पार्थिव शिवलिंग बनाकर पूजा करने का भी पर नर्मदेश्वर शिवलिंग या ज्योतिर्लिंग या स्फटिक की शिवलिंग को पतिव्रता और अखंड ब्रह्मचर्य से युक्त नारी ही छू सकती है। शिव चरित मानस में आप पढ़ना। अभी समय नहीं। वह शिव लिंग को टच किये बिना पास ही प्लेट में नैवेद्य रख कर समर्पण से भी पुण्य पा लेती हैं। बिना प्रमाण के हम बात नहीं करते।

अतः शिवलिंग छूने का शौक है तो पतिव्रता बने। पतिव्रता (पति में श्रीहरि देखकर परपुरुष से दूर रहने वाली , पति की सेवा में तत्पर, पति की निन्दा न करने वाली , पूर्णतः सास ससुर व पति बच्चों की सेवा में तत्पर जिसने कभी भी किसी पराये पुरुष से दैहिक संबंध न रखा हो) या अखंड ब्रह्मचारिणी अथवा जिसने बचपन से ही श्री कृष्ण को पति मान लिया और किसी से संबंध नहीं बनाया मीरा की तरह पूर्णतः समर्पण करके सब कुछ छोड़कर जाने वाली ये नारियाँ तथा सत् शूद्र ये भी द्विजों व ब्राह्मण की भाँति शालग्राम को छू सकते हैं। छूकर पूजा भी कर सकते हैं और इसके विपरीत उन ब्राह्मणों व द्विजों को भी शालग्राम छूने का अधिकार नहीं जो परनार में आसक्त हैं और लहसुन प्यास चर रहे हैं या पूर्व में अपनी पत्नी के अलावा अन्य कुलटा से या किसी की कुवांरी कन्या से संबंध बना चुके । उनको भी बिना प्रायश्चित के शालग्राम छूने का अधिकार नहीं।

अतः हे नारियों ! थर्म और यम नियम सभी के लिए मात्र नारियों को डराने के लिए नहीं। और जो धर्म पतिव्रता का है ठीक वैसा ही पति के लिए राम सा आदर्श है। स्कंद और पद्म पुराण में भी पतिव्रता और सद् (सात्विक) शूद्र को शालग्राम पूजन की कथा मिलती है।

प्रश्न 84

प्रश्न– गौरव जी–महाराज जी प्रणव सहित नमः शिवाय और प्रणव के बिना नमः शिवाय जप का फल अलग अलग है या सामान आप जिस महारुद्र पद के लिए तप कर रहे वह प्रणवयुक्त नमः शिवाय से प्राप्त होता है या बिना प्रणव वाले नमः शिवाय से और आप कहते है और आप कहते है की क्रमशः 1,2,3,4,5 करोड़ पर क्रमशः ब्रह्मा विष्णु रूद्र महेश्वर पद सृजन पालन संहार तिरोधान का कार्य त्रिदेव पद प्राप्त होता और 5करोड़ पर सदाशिव के सामान होना बताते है और कभी इनके समान होना बताते है इन दोनों तत्वों का क्या भेद रहस्य है साक्षात् महारुद्र होना या इनके सामान होने का क्या भेद है

क्या प्रणवयुक्त नमःशिवाय और बिना प्रणवयुक्त नमः शिवाय मे फल मे कुछ भेद या अंतर है आपसे प्रार्थना है भ्रम का निवारण करें माँ आप पर सदा कृपालु हो

जय माँ । ॐ नमः शिवाय , नमः शिवाय या शिवाय नमः के लिए शिव पुराण की आज्ञा अलग अलग लोगों के लिए है।

उत्तर– ॐ नमः शिवाय ....संध्यापूत ब्राह्मण शिवाय नमः न जपें वह ॐ नमः शिवाय से ही सब कुछ प्राप्त कर पायेंगे। पर वे संध्यापूत न हो , वेदपाठी न हो तो वे भी सूक्ष्म प्रणव (ॐ) न लगायें। नमः शिवाय जपें क्षत्रिय और वैश्य भी नमः शिवाय। नारी व दास सेवक वर्ग के लिए शिवाय नमः से ही सब कुछ मिलेगा।

पतिव्रता नारी भी भस्म के त्रिपुण्ड्र व रुद्राक्ष माला धारण करके (सात्विक भोजन सहित) पति की विशेष रक्षा के लिए शिवाय नमः की दस माला एक वर्ष तक जपें।

तथा उनके पति को विशेष कल्याण चाहिए तो वे स्वयं 500000 से लेकर ,20 लाख और एक करोड़ तक जपें। एक करोड़ से ब्रह्मा जी के समान सिद्धियों व ऐश्वर्य पाकर ब्रह्म लोक जायेगा। अगले कल्प में परम सिद्ध प्रजापति नामक ब्रह्मा हो जायेगा। और कभी किसी ब्रह्माण्ड में जब जगह खाली होगी तो ब्रह्मा जी का पद भी पायेगा। पर पद रिक्त होने पर ही उसे पोस्ट मिलती है अन्यथा वह इस ब्रह्माण्ड के ब्रह्मा जी का पुत्र ही कहलाता है । पर शक्तियों में ब्रह्मा जी के समान अवश्य रहेगा।

ऐसे ही दो करोड़ बार जप से विष्णु जी के समान ऐश्वर्य और सिद्धि शक्ति वह इस ब्रह्माण्ड का पालन करने की सामर्थ्य पा लेता है पर किसी ब्रह्माण्ड में विष्णु पद रिक्त होने पर उसकी भर्ती होती है और 30000000 बार पंचाक्षरी से महारुद्र पद।

नोट – पर पंचाक्षरी में ॐ केवल संध्यापूत व वेदपाठी अग्निहोत्री ही लगायें।

प्रश्न 85–क्या वेदमाता की पूजा सेवा चारों वर्ण के लोग कर सकते हैं?

क्या पूर्व काल में किसी नारी को वेदमाता की आराधना के लिए वसिष्ठ जी ने उपदेश दिया था ?

गायत्री के आधे पुरश्चरण का क्या फल है ?

चार पुरश्चरण वेदमाता के करके क्या फल मिलता है?

हे अक्षयरुद्र! शास्त्र सम्मत वचन कहिये बिना प्रमाण के आजकल भगवाधारियों पर भी विश्वास नहीं होता क्योंकि आजकल तुक्केबाजी व टोटके बहुत बताये जा रहे हैं जो मनगढ़ंत हैं अतः कृपया इन सभी गंभीर प्रश्नों के उत्तर हेतु प्रमाण चाहिए कृपया बुरा मत मानना ?

उत्तर– इस प्रकार के सभी प्रश्नों के उत्तर आपको श्रीमद्देवीभागवत महापुराण (देवी भागवत) के नवें स्कन्ध के 26 वें अध्याय में मिल जायेंगे।

सुनें – इस श्रीमद्देवीभागवत महापुराण में वेदमाता का नाम सावित्री बताया है और इन वेदमाता की सेवा पूजा का अधिकार चारों वर्णों को है यह आप इस अध्याय के श्लोक 4 में देख लीजिए (वर्णाश्चत्वार ....)

और एक क्षत्रिय रानी मालती ने परम गुरु वसिष्ठ के उपदेश से वेदमाता की आराधना की इनके पति ने भी तीन जन्मों के पाप नष्ट करने के उद्देश्य से तथा संतान की प्राप्ति के लिए लगभग आधा पुरश्चरण (10 लाख जप) किया। यह आप श्रीमद्देवीभागवत महापुराण 9/26/7,8,23 में देखें । इसी में बताया है कि स्फटिक या कमल के बीजों की माला से ही वेदमाता गायत्री का जप करना चाहिए पर पूर्ण फल के लिए देवालय या तीर्थवास करके उस तीर्थ में ही जप करें तब आधे पुरश्चरण या दस लाख से 3 जन्म के पाप नष्ट होते हैं तथा चार पुरश्चरण (एक करोड़ गायत्री जप अखंड ब्रह्मचर्य व्रत सहित) से सौ फीसदी निष्पापता मिलती है यह भी 9.26. 16 में घोषणा है।

सावित्रीपूजाविधिकथनम्–

नारद उवाच

तुलस्युपाख्यानमिदं श्रुतं चातिसुधोपमम् ।
ततः सावित्र्युपाख्यानं तन्मे व्याख्यातुमर्हसि ॥ १ ॥

पुरा केन समुद्भूता सा श्रुता च श्रुतेः प्रसूः ।
केन वा पूजिता लोके प्रथमे कैश्च वा परे ॥ २ ॥

श्रीनारायण उवाच

ब्रह्मणा वेदजननी प्रथमे पूजिता मुने ।
द्वितीये च वेदगणैस्तत्पश्चाद्विदुषां गणैः ॥ ३ ॥

तदा चाश्वपतिर्भूपः पूजयामास भारते ।
तत्पश्चात्पूजयामासुर्वर्णाश्चत्वार एव च ॥ ४ ॥

नारद उवाच

को वा सोऽश्वपतिर्ब्रह्मन् केन वा तेन पूजिता ।
सर्वपूज्या च सा देवी प्रथमे कैश्च वा परे ॥ ५ ॥

श्रीनारायण उवाच

मद्रदेशे महाराजो बभूवाश्वपतिर्मुने ।
वैरिणां बलहर्ता च मित्राणां दुःखनाशनः ॥ ६ ॥

आसीत्तस्य महाराज्ञी महिषी धर्मचारिणी ।
मालतीति समाख्याता यथा लक्ष्मीर्गदाभृतः ॥ ७ ॥

सा च राज्ञी च वन्ध्या च वसिष्ठस्योपदेशतः ।
चकाराराधनं भक्त्या सावित्र्याश्चैव नारद ॥ ८ ॥

प्रत्यादेशं न सा प्राप्ता महिषी न ददर्श ताम् ।
गृहं जगाम दुःखार्ता हृदयेन विदूयता ॥ ९ ॥

राजा तां दुःखितां दृष्ट्वा बोधयित्वा नयेन वै ।
सावित्र्यास्तपसे भक्त्या जगाम पुष्करं तदा ॥ १० ॥

तपश्चकार तत्रैव संयतः शतवत्सरम् ।
न ददर्श च सावित्र्या प्रत्यादेशो बभूव च ॥ ११ ॥

शुश्रावाकाशवाणीं च नृपेन्द्रश्चाशरीरिणीम् ।
गायत्र्या दशलक्षं च जपं त्वं कुरु नारद ॥ १२ ॥

एतस्मिन्नन्तरे तत्र आजगाम पराशरः ।
प्रणनाम ततस्तं च मुनिर्नृपमुवाच च ॥ १३ ॥

मुनिरुवाच

सकृज्जपश्च गायत्र्याः पापं दिनभवं हरेत् ।
दशवारं जपेनैव नश्येत्पापं दिवानिशम् ॥ १४ ॥

शतवारं जपश्चैव पापं मासार्जितं हरेत् ।
सहस्रधा जपश्चैव कल्मषं वत्सरार्जितम् ॥ १५ ॥

लक्षो जन्मकृतं पापं दशलक्षोऽन्यजन्मजम् ।
सर्वजन्मकृतं पापं शतलक्षाद्विनश्यति ॥ १६ ॥

करोति मुक्तिं विप्राणां जपो दशगुणस्ततः ।
करं सर्पफणाकारं कृत्वा तद्रन्ध्रमुद्रितम् ॥ १७ ॥

आनम्रमूर्धमचलं प्रजपेत्प्राङ्मुखो द्विजः ।
अनामिकामध्यदेशादधोऽवामक्रमेण च ॥ १८ ॥

तर्जनीमूलपर्यन्तं जपस्यैवं क्रमः करे ।
श्वेतपङ्कजबीजानां स्फटिकानां च संस्कृताम् ॥ १९ ॥

कृत्वा वै मालिकां राजन् जपेत्तीर्थे सुरालये ।
संस्थाप्य मालामश्वत्थपत्रे पद्मे च संयतः ॥ २० ॥

कृत्वा गोरोचनाक्तां च गायत्र्या स्नापयेत्सुधीः ।
गायत्रीशतकं तस्यां जपेच्च विधिपूर्वकम् ॥ २१ ॥

अथवा पञ्चगव्येन स्नात्वा मालां सुसंस्कृताम् ।
अथ गङ्गोदकेनैव स्नात्वा वातिसुसंस्कृताम् ॥ २२ ॥

एवं क्रमेण राजर्षे दशलक्षं जपं कुरु ।
साक्षाद्रक्ष्यसि सावित्रीं त्रिजन्मपातकक्षयात् ॥ २३ ॥

नित्यं सन्ध्यां च हे राजन् करिष्यसि दिने दिने ।
मध्याह्ने चापि सायाह्ने प्रातरेव शुचिः सदा ॥ २४ ॥

सन्ध्याहीनोऽशुचिर्नित्यमनर्हः सर्वकर्मसु ।
यदह्ना कुरुते कर्म न तस्य फलभाग्भवेत् ॥ २५ ॥

स शूद्रवद्बहिष्कार्यः सर्वस्माद् द्विजकर्मणः ॥ २६ ॥

यावज्जीवनपर्यन्तं त्रिःसन्ध्यां यः करोति च ।
स च सूर्यसमो विप्रस्तेजसा तपसा सदा ॥ २७ ॥

तत्पादपद्मरजसा सद्यःपूता वसुन्धरा ।
जीवन्मुक्तः स तेजस्वी सन्ध्यापूतो हि यो द्विजः ॥ २८ ॥

तीर्थानि च पवित्राणि तस्य संस्पर्शमात्रतः ।
ततः पापानि यान्त्येव वैनतेयादिवोरगाः ॥ २९ ॥

न गृह्णन्ति सुराः पूजां पितरः पिण्डतर्पणम् ।
स्वेच्छया च द्विजातेश्च त्रिसन्ध्यारहितस्य च ॥ ३० ॥

मूलप्रकृत्यभक्तो यस्तन्मन्त्रस्याप्यनर्चकः ।
तदुत्सवविहीनश्च विषहीनो यथोरगः ॥ ३१ ॥

विष्णुमन्त्रविहीनश्च त्रिसन्ध्यारहितो द्विजः ।
एकादशीविहीनश्च विषहीनो यथोरगः ॥ ३२ ॥

हरेरनैवेद्यभोजी धावको वृषवाहकः ।
शूद्रान्नभोजी यो विप्रो विषहीनो यथोरगः ॥ ३३ ॥

शूद्राणां शवदाही यः स विप्रो वृषलीपतिः ।
शूद्राणां सूपकारश्च विषहीनो यथोरगः ॥ ३४ ॥

शूद्राणां च प्रतिग्राही शूद्रयाजी च यो द्विजः ।
मसिजीवी असिजीवी विषहीनो यथोरगः ॥ ३५ ॥

यः कन्याविक्रयी विप्रो यो हरेर्नामविक्रयी ।
यो विप्रोऽवीरान्नभोजी ऋतुस्नातान्नभोजकः ॥ ३६ ॥

भगजीवी बार्धुषिको विषहीनो यथोरगः ।
यो विद्याविकयी विप्रो विषहीनो यथोरगः ॥ ३७ ॥

सूर्योदये स्वपेद्यो हि मत्स्यभोजी च यो द्विजः ।
शिवापूजादिरहितो विषहीनो यथोरगः ॥ ३८ ॥

इत्युक्त्वा च मुनिश्रेष्ठः सर्वपूजाविधिक्रमम् ।
तमुवाच च सावित्र्या ध्यानादिकमभीप्सितम् ॥ ३९ ॥

दत्त्वा सर्वं नृपेन्द्राय ययौ च स्वाश्रमे मुने ।
राजा संपूज्य सावित्रीं ददर्श वरमाप च ॥ ४० ॥

प्रश्न 86

हे अक्षयरुद्र अंशभूतशिव जी ! मेरे घर से 15 किलोमीटर दूर एक ब्रह्मनिष्ठ संत रहते हैं पर उनका वर्ण क्षत्रिय है क्या मैं उनको मन और तन दोनों प्रकार से साष्टांग नमन कर सकता हूँ । ब्राह्मण वर्ण के अपरोक्ष ज्ञाननिष्ठ को नमन वंदन करने से मुझे अधिक शान्ति मिलती है पर पता नहीं क्यों क्षत्रिय या वैश्य ब्रह्मनिष्ठ हो तो उसको नमन करने में कुछ संकोच भी होता है हालांकि वे तो आत्मारामी हैं आत्मारामत्व से युक्त (यथार्थ पराविज्ञान से शिवत्वमय ही) हैं उनकी दृष्टि में तो एक ब्रह्म के सिवाय कुछ और है ही नहीं वे स्वयं सतत् अपनी समाधिस्थ अवस्था में ही रहते हैं उनका संसार सा छूट गया। ऐसा लगता है। उनको तो हमारे नमन

से भी कोई मतलब नहीं । उनके पास कौन आता है कौन नहीं उसका उनको भान ही नही । लगता है कि वे तद्रूप हैं । और उपनिषदों में ब्रह्मनिष्ठ को साक्षात् परात्पर ब्रह्म के समान व विष्णु जी के समान बताया है। – एम. एल. त्रिवेदी

उत्तर– यहाँ कम से कम 2–3 या 5–6 उच्च वर्णी और 10 क्षत्रिय उत्तर दें।

दीनानाथ पाण्डेय–

जो साध लिये वो साधु हैं , भाई ! ब्रह्मनिष्ठ साधु की कोई जाति नही होता है। वैसे जगद्गुरु ब्राह्मण ही होते हैं यह ठीक है पर ये भी सत्य है की ब्राह्मणों के गुरु साधु (जितेन्द्रिय संन्यासी या ब्रह्मनिष्ठ) होते हैं। बिस्वामित्र जीको ही देखिये क्षत्रिय कुल में जन्म ग्रहण किये फिर भी ब्रह्मर्षि कहलाये अतः भ्रम में न पड़ें क्योंकी तीन दिन तक यदी ब्राह्मण शन्ध्यावन्दन से वन्चित होजाय तो (द्विजःशुद्रस्यमाप्नुयात)आगे आपस्वयं सोचें। कर्मनिष्ठ पे जाति पाति का भेद भाव नहीं होना चाहीये,अतः ये स्वयं शिद्ध होजाताहै कीआप उन्हे शहर्ष दण्डवत प्रणाम करसक्ते हैं। ।जै

माँ भवानी

●●●●

रघुवीर सिंह गहलोत–
जो शिवनारयण हरी हर तुल्य हैं उन्हें नमन करने मैं क्या संकोच हैं

●●●●

स्ंदीप कच्वाहा
जब ब्रह्म निष्ठ हो ही गए है तब वे बचे ही कहां
अब तो सब कुछ एक ही है।

●●●●

निखिल रंजन–
करना चाहिए। जो ब्रह्म भाव को प्राप्त हो गए हैं वो जाति पंथ से ऊपर उठ गए हैं।

●●●●

मार्कण्डेय बाबा–
बिलकुल कर सकते है...

"जात ना पूछो साधु की" ये बहुत पुरानी कहावत है.
मनुष्य का जन्म पूर्व जन्मो के कर्म से होता है लेकिन उसकी पहचान वर्तमान मे किये हुए कर्म से..

●●●●

प्रश्न 87–आदरणीय, एक बात बताओ। मैं लगभग हर समय मन ही मन अपने गुरु मंत्र का जाप करता रहता हूं। कभी कभी तो ध्यान भी नहीं होता। कभी नींद से उठते ही पता लगता है कि मन में मंत्र चल रहा है। कभी तो शौच के वक्त भी चलता रहता है। पवित्र मंत्र को अपवित्र जगह, बिस्तर या हालत में जपना, क्या यह ठीक है? –नवल किशोर वर्मा

क्या इसे अजपा जप कहते हैं? गुरु जी तो ईश्वर में समा गए हैं। किससे पूछूं, समझ नहीं आता। सोचा आपसे ही पूछ लूं। कृपया मार्गदर्शन करें।कार्य कुछ भी कर रहा होऊं, पाशर्व में अपने आप चलता रहता है। यदि कभी बंद भी हो जाए तो याद आते ही दोबारा शुरू कर देता हूं।

उत्तर– जब तक होश में हैं तब तक हमें अशुद्ध अवस्था में मात्र नाम में श्री लगाकर जपना चाहिए। तन की अशुद्ध अवस्था में गुरु पादुका या शिव पादुका या श्रीनाथ पादुका की आज्ञा कुलार्णव तंत्र में दी गई है।

पर सुबह उठने पर या निद्रा के बीच सहज ही अपने आप गुरुमंत्र (जिसमें बीज हो या नमः व प्रणव आदि) का जप हो तो दोष नहीं पर यदि यह अहसास होने लगे कि अरे मैं तो अशुद्ध वस्त्र और अशुद्ध बिस्तर या अशुद्ध स्थान पर हूँ तो तत्काल उठकर शुद्ध वस्त्र धारण कर शुद्ध आसन पर बैठकर जपें।

प्रश्न 88

सभी तीर्थ किस वैष्णव का स्पर्श करना चाहते हैं ?
और किस शैव का स्पर्श करना चाहते हैं ?

उत्तर – जो 12 शालग्राम एक साथ पूजता है और उनके जल का नित्य पान करता है तथा शिव और हरि के मूल तत्व में भेद नहीं करता उस वैष्णव को छूने के लिए तीर्थ भी कामना करते हैं। तथा असंख्य प्राकृत प्रलय तक वह वैकुण्ठ में रहता है। और वह भक्त 7 या 21 पीढ़ी ही नहीं अपितु लाखों पूर्वजों का उद्धार करने वाला सिद्ध होता है । (पुंसां लक्षं तत् पितृणां निस्तरेत्तस्य जन्मतः ......देवी भागवत 9.24.86)

जो मात्र एक शालग्राम की भी पूजा करता है वह भी पृथ्वी की परिक्रमा का फल तथा संपूर्ण दान व यज्ञादि का फल पा लेता है। (पर धनाढ्य लोग दान और यज्ञ या गौसेवा आदि में धन का सदुपयोग अवश्य करते रहें अन्यथा धर्म का कार्य अवरुद्ध होने पर पाप भी इन धनवानों को भोगना पड़ेगा)

मृत्यु के समय (उसी दिन जिस दिन मरण हो) जिस मनुष्य को शालग्राम जल का जल प्राप्त हो जाये वह भी संपूर्ण पापों से मुक्त होकर इष्ट के लोक को ही पाता है।

शालग्राम के समान ही शिवलिंग का माहात्म्य है।

नोट – दो शालग्राम न पूजें। 4,6,8,10,12 पूज सकते हैं।

दो शिवलिंग भी निषिद्ध हैं।

प्रश्न 89

हे अक्षयरुद्र जी ! हम नित्य वेदपाठ नहीं कर सकते मजबूरी है वक्त और परिस्थिति से अति मजबूर हैं क्या कोई अन्य उपाय नहीं है ?

उत्तर– बिल्कुल है ।

हमारी पुस्तक स्तोत्र निधिवन भाग प्रथम के अध्याय 36 का अंतिम श्लोक पढ़े सब कुछ ज्ञात हो जायेगा।

स्वधास्तोत्रमिदं पुण्यं यः श्रृणोति समाहितः।
स स्नातः सर्वतीर्थेषु वेदपाठफलं लभेत् ।।

● समझ गए न हे भूदेव!

और दूसरा तरीका वेदपाठ के फल का – वह यह कि नित्य शालग्राम शिला की पूजा (प्रमाण हेतु श्रीमद्देवीभागवत महापुराण 9.24.81)

प्रश्न 90

क्या शालग्राम की पूजा से कभी कभी कष्ट भी हो सकता है?

उत्तर– हाँ

पर यह कष्ट शालग्राम की अनिश्चित या विकृत आकृति के कारण होता है ।

यह सब श्रीमद्देवीभागवत महापुराण के नवम स्कन्ध अध्याय 24 के श्लोक 77–78 में देखें।

द्विचक्री–

जो अत्यन्त विस्तृत मुखवाला हो , दो चक्र के चिह्नोंसे सुशोभित हो, जो देखनेमें बड़ा विकट लगता हो, मनुष्योंको शीघ्र वैराग्य प्रदान करनेवाले ऐसे पाषाणको भगवान् 'नरसिंह' का स्वरूप समझना चाहिये ।

द्विचक्री वनमालायुक्त–

जिसमें दो चक्र हों, जो विस्तृत मुखवाला हो तथा वनमालासे सुशोभित हो, गृहस्थोंको सुख प्रदान करनेवाले ऐसे पाषाणको 'लक्ष्मीनृसिंह' का स्वरूप समझना चाहिये।

द्विचक्री व श्रीयुक्त–

जिसके द्वारदेशमें दो चक्र तथा 'श्री' का चिह्न स्पष्ट रूपसे अंकित हो, समस्त कामनाओंका फल प्रदान करनेवाले उस पाषाणको भगवान् 'वासुदेव' का विग्रह जानना चाहिये ।

सूक्ष्म चक्र –

जो सूक्ष्म चक्रके चिह्नसे युक्त हो, नवीन मेघके समान श्यामवर्णका हो और जिसके मुखपर बहुतसे छोटे–छोटे छिद्र विद्यमान हों, गृहस्थोंको सुख प्रदान करनेवाले उस पाषाणको 'प्रद्युम्न' का स्वरूप जानना चाहिये ।

पृष्ठभाग विशाल –

जिसमें परस्पर सटे हुए दो चक्रोंके चिह्न विद्यमान हों तथा जिसका पृष्ठभाग विशाल हो, गृहस्थोंको निरन्तर सुख प्रदान करनेवाले उस पाषाणको भगवान् 'संकर्षण' का ही रूप समझना चाहिये ।

जो अत्यन्त सुन्दर, गोलाकार तथा पीत आभावाला हो, गृहस्थोंको सुख प्रदान करनेवाले उस पाषाणको विद्वान् पुरुष भगवान् 'अनिरुद्ध' का स्वरूप कहते हैं।

जहाँ शालग्रामकी शिला रहती है, वहाँ भगवान् श्रीहरि विराजमान रहते हैं और वहीं पर भगवती लक्ष्मी भी सभी तीर्थोंको साथ लेकर सदा निवास करती है।

ब्रह्महत्या आदि जो भी पाप हैं, वे सब शालग्रामकी शिलाके पूजनसे नष्ट हो जाते हैं।

- छत्राकार शालग्रामके पूजनसे राज्य,
- गोलाकार शालग्रामके पूजनसे महालक्ष्मी,

●शकटके आकारवाले शालग्रामके पूजनसे कष्ट तथा
●शूलके समान अग्रभागवाले शालग्रामके पूजनसे निश्चितरूपसे मृत्यु होती है।
●विकृत मुख वाले शालग्राम से दरिद्रता
●पिंगल वर्ण वाले से हानि
●खण्डित चक्र हो तो रोग होने लगते हैं
●विदीर्ण शालग्राम से निश्चित ही मरण होता है।

प्रश्न 91

कुछ लोग शीघ्र ही कृपा और दर्शन के अधिकारी क्यों हो जाते हैं ?

उत्तर –

पूर्व जन्म के महान साधकों को (जो अनुष्ठान में तत्पर थे पर मृत्यु होने पर अपना जप आधा या आधे से अधिक ही कर पाये उनको) पुनर्जन्म में में इसी कारण शीघ्र दर्शन हो जाते हैं पर साधारण मनुष्य यह रहस्य न समझकर भगवान को ही असमान दृष्टि वाला समझकर नवीन अपराध कर बैठते हैं। अपनी कामनाओं को कम करो या घोर तप करते रहो एक न एक दिन अवश्य ही आपको फल मिलेगा। पर अभी फल से दूर हो तो ईश्वर या देवी को कोसो मत अपितु अपने ही पूर्व पाप या अल्प साधना को जानकर साधन व दृढ़संकल्प बड़ाओ।

भगवद् कोटी के देवों की साधना के फल में समय भले ही लग जाये पर फल अनुपम अद्वितीय और मधुर होता है।

सांझ ढल रही है
देखते ही देखते
आत्मा निकल रही है।
विश्व की देह
पंच तत्वों से बनी
पशुता इनमें ही रमी
देखते ही देखते हरियाली
वीरान 'रेगिस्तान सी' हो रही है।
सांझ ढल रही है
पिपासा हो रही शान्त
संतन की सेवा से
छाती ठंडी हो रही है।

प्रश्न 92

भगवन्! गुरु मंत्र बड़ा या गायत्री मंत्र – युवराज सिंह राजप

उत्तर– द्विज लोगों का अनिवार्य गुरुमंत्र गायत्री ही होता है।

पर आजकल सब कुछ.....मनमाने संप्रदायों के कारण मनमाना मंत्र मिलने लगा। और गायत्री को तो पलायन वेग से फेंक दिया आजकल के गुरुओं ने।

पर अक्षयरुद्र ने अनगिनत ग्रंथों का अध्ययन किया और उन सभी में पाया कि द्विज पुरुष भले ही हजारों मंत्र गुरुओं से ले लें पर जब तक संध्या के लिए गायत्री मंत्र नहीं लेगा तब तक उसकी कोई भी साधना फलीभूत नहीं होगी।

सोचो कैसी बिडम्बना है कि आजकल नारी और दास वर्ग बार बार अक्षयरुद्र से गायत्री जपने की आज्ञा लेने का प्रयास कर रहे हैं और द्विज लोग गायत्री को भूले बैठे हैं।

प्रश्न 93

गुरुजी आज से शुरू कर सकते हैं क्या? पंचाक्षरी मंत्र

उत्तर–

केवल पंचाक्षरी मंत्र ही ऐसा है जिसके आरंभ के लिए तिथि वार नक्षत्र, मुहूर्त आदि देखने की आवश्यकता नहीं पर आप यदि स्त्री देह में हो तो शिवाय नमः की आज्ञा है आपको।

हे ऋषियों ! नमः शिवाय मंत्र कभी भी सुप्त नहीं होता सदा ही जाग्रत रहता है। इसके श्रावण मास में बिल्ववृक्ष के निकट इसके एक बार ही उच्चारण मात्र से ही पापी से भी घोर पापी मनुष्य मरणोपरांत नरक नहीं जा सकता । कल्याण का यह सूत्र ही सरल सहज और सुगम है।

प्रश्न 94

नर्मदेश्वर शिवलिंग की या स्फटिक शिवलिंग की सेवा न कर पाएं तो क्या करें।

उत्तर–

नर्मदेश्वर शिवलिंग की या स्फटिक शिवलिंग की सेवा न कर पाओ तो –

मिट्टी, आटा, गायके गोबर, फूल, कनेरपुष्प, फल,
गुड़, मक्खन, भस्म अथवा अन्नसे भी अपनी रुचिके
अनुसार शिवलिंग बनाकर तदनुसार उसका पूजन
करें ।
यह न हो तो कागज पर शिवलिंग (आकृति रूप) बनाकर पूजें ।
अथवा
पानी या अग्नि में शिव देखकर सेवा करें।
अथवा
यह भी न हो तो अपने हाथ के अंगूठे को ही शिवलिंग मानकर सेवा से दया के सागर परब्रह्म शिव प्रसन्न हो जाते हैं।

शिव पुराण विद्येश्वर संहिता अध्याय ११ ॥ ३२–३३ ॥ का सार

प्रश्न 95

हे अक्षयरुद्र! क्या वास्तव में महारुद्र जी के पास अधिक पॉवर है और विष्णु या ब्रह्मा जी के पास कम।

उत्तर– ये तो वही जानें पर आप काहे लड़ रहे हो ।

यदि आप विष्णु जी से या रुद्र देव से सच्चा प्रेम करते हो तो प्रेम का विषय सिद्धियों या चमत्कार पर आधारित होता ही नहीं यदि आप महान सामर्थ्य देखकर प्रेम करते हो तो वह प्रेम नहीं अपितु उनके वैभव या पराक्रम का वशीकरण या जाल समझो।

प्रेम में उत्तम चरित्र या देवत्व मात्र देखा जाता है न कि धन , वैभव या बल पराक्रम न ही नाम रूप को देखकर प्रेम करने वाले उस रूप से भोग या सम्मान चाहते हैं कि वह सुन्दर रूप मेरे पास होगा तभी मेरी अधिक तारीफ होगी या मुझे बेटर फील होगा।

बस ।

और हाँ परब्रह्म यथार्थ में मूल रूप से एक ही है दो नहीं।

पर सभी रूपों के पास का बल और सामर्थ्य अवश्य ही अधिक या कम है यह भी सच है आत्मिक सुख तो मूल तत्व से मिलता है न कि बाह्य आवरण या सिद्धियों से।

एक प्रेमिका किसी से सच्चा प्रेम करती है तो वह धन बल आदि के कारण नहीं अपितु उसकी सज्जनता या उत्तम केरेक्टर के कारण ही करती है। यदि उसका प्रेम पुरुष की कीर्ति व प्रतिष्ठा पर आधारित है तो वह निश्चित ही वह महत्वाकांक्षी है न कि प्रंमी गूढतम रहस्यों में (धर्म शास्त्रों में ही निहित) सभी का बल पराक्रम भी अलग अलग बताया है।

पर मनुष्य का मोक्ष उनकी कृपा या उनके पराविज्ञान पर आधारित है न कि सिद्धियों पर । अतः इस कारण मूर्खता छोड़कर मन चाहे ब्रह्मनिष्ठ या मनचाहे परलौकिक रूप का भजन करो।

रोहन – हे सोहन! तू मूर्ख है यह 6 ही है न कि 9।

सोहन – हे मूर्ख के बाप ! तू अज्ञानी है जो 9 को छः कह रहा है।

बस यही हाल संप्रदायों का है।

जिन्होनें एक ही परब्रह्म को अपनी अपनी दृष्टि में बांधकर संकीर्णता फैला दी कि मेरा मत ही सच्चा है शेष सब झूठ ।

पर वह एक ही है दृष्टिदोष से किसी को मात्र हरि ही दिख रहा है किसी को हरि की जगह शिव ।

वैष्णव लोग उसी परब्रह्म को एकमात्र हरि (चतुर्भुजी नारायण या दो भुजा वाले राम कृ ष्ण)

मानने पर तुले हैं वे उसी चोले तक सीमित हो गए

और शैव लोग पंचमुखी आवरण तक सीमित हो गये ।

जबकि मूल सत्ता 1000 एक ही है।

वह है जींज शब्द से कही जाने वाली (परम सत्ता)

या परब्रह्म।

ये सब नाम और रूप मात्र भावुक लोगों को सान्त्वना देने के लिए है । जिस प्रकार एक शिशु या छोटा सा बालक माँ को देखकर ही खुश होता है उसी प्रकार एक आरंभिक नन्हा सा साधक रूप को देखकर ही खुश होता है।

ठीक है यह भी। पर एक रूप की तुलना में दूसरे रूप को छोटा बड़ा समझना महापाप है।

अरे!

जब तत्त्वमसि से वह त्वम् आत्मा नाम से भी है तो चोलों के कारण कौन बड़ा और कौन छोटा।

सारे के सारे 100प्रतिशत चोला पहले नहीं थे। और आगे भी वे उस रूप को जानबूझकर परिवर्तित करते रहते हैं और तुम हो कि मात्र एक निश्चित चोले के चक्कर में लड़ लड़कर मरे जा रहे हो।

कम या अधिक शक्ति की कहो तो हम मान सकते हैं कि यथार्थ में सभी 100प्रतिशत रूपों के पास समान ऐश्वर्य व समान शक्तियाँ नहीं इस भिन्नता का भी कारण है।

और ये सब भिन्नता उनके भी तप के अंतर के कारण है।

इसी कारण वे अपनी हैसियत के अनुसार ही एक दूसरे को नमन आदि करते है।

पर चोला के भेद के कारण लड़ना तो मूर्खता ही है।

और मूल ब्रह्म का इन ऐश्वर्य और शक्ति या सिद्धियों से भी कोई वास्ता नहीं वह तो आनन्द स्वरूप है।

फिर काहे मरकट रहे हो।

और रही कामना सिद्धि की बात तो वह तो उनके पार्षद या गणों में भी अतुलनीय शक्ति है फिर भी काहे लड़ते हो पगलों की तरह।

चुपचाप अपने इष्ट को भजो और उसी इष्ट के मूल तत्व (ॐ) को सभी रूपों में निहारो या सूक्ष्म भाव न हो तो अपने हाथ पैर वाले रूप को शेष सभी रूपों में निहारा करो।

प्रश्न 96

क्या द्विज को गायत्री मंत्र अनिवार्य है ?

द्विज को गायत्री मंत्र अनिवार्य है।

परम से भी परम अनिवार्य।

अधिक गहराई में न जाये 24 अक्षरी ही अनिवार्य है।

श्रीमद्देवीभागवत महापुराण में विनियोग तथा न्यास व ध्यान है।

वह दो काल या उत्तम रूप से त्रिकाल न जपे तो उसे वर्ण संकर समझकर कर्मकांड के लिए पात्र न समझें।

वर्ण संकर ही गायत्री में श्रृद्धा नहीं रखते।

अनेक ब्राह्मणयुक्त ग्रंथों में यह स्पष्ट घोषणा है कि आधुनिक ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य यदि यथार्थ में ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य के वीर्य से ही उत्पन्न हैं तो उनकी श्रृद्धा निश्चित ही गायत्री में होगी ही।

जो लोग चाहे शिव के भक्त हों चाहे हरि या शक्ति दुर्गा के उनको भी संध्या काल में गायत्री मंत्र की सेवा (इष्ट देव की प्रसन्नता के लिए अवश्य करना चाहिए)

प्रश्न 97

क्योंकि मुझे संभावना लग रही है मेरी फलानी रिस्तेदार नारी ने ने हम दोनों को अलग करने के लिए तंत्र क्रिया का प्रयोग किया है उन्होंने पहले भी ऐसा किया था।

उत्तर–

तंत्र प्रयोग है तो आप रवि पुष्य से हमारे ग्रंथ देवी रहस्य महाग्रंथ की एक विद्या (श्रीकाली महाविद्या की एक गुप्त विद्या) का पाठ आरंभ कर दें।

वह विद्या भक्त की रक्षा अवश्य करती है और शत्रु का भयंकर घात।

यदि आप उसकी चपेट से सूख गए या नष्ट भ्रष्ट हो गये तो भी महाविद्या काली आपको पुनः पुष्पित और पल्लवित कर सुख और ऐश्वर्य देती है ।

वह दुश्मन नष्ट हो जाता है।

पर आप अपनी रक्षा के लिए ही प्रार्थना करें देवी से।

शत्रु का क्या करना है देवी पर छोड़ दें।

शैव या शाक्त भक्त ही संपर्क करें कृपया ।

प्रश्न 98

प्रधान 108 रुद्रों के नाम बताइए कृपया?

उत्तर–

हर दिशा में 10–10 रुद्रों का निवासस्थान है। जिस रूप को ध्याना हो उसी रूप की दिशा की ओर देख कर ही प्रार्थना करें.।

✍पूर्व दिशामें विराजने वाले दस रुद्र–
१. कपाल, २. अज, ३. अहिर्बुध्न्य, ४. वज्रदेह, ५. प्रमर्दन, ६. विभूति, ७. अव्यय, ८. शास्ता, ९. पिनाकी, १०. त्रिदशाधिप

✍ये दस रुद्र अग्निकोणमें स्थित हैं जो बिन्दु 11 से 20 तक हैं।
११. अग्निभद्र, १२. हुताश, १३. पिङ्गल, १४. खादक, १५. हर, १६.ज्वलन, १७. दहन, १८. बभ्रु, १९. भस्मान्तक, २०. क्षपान्तक

✍नैऋत्यकोणमें स्थित–

२१. दम्य, २२. मृत्युहर, २३. धाता, २४. द्य विधाता, २५. कर्ता, २६. काल, २७. धर्म, २८. अधर्म, २९. संयोक्ता, ३०. वियोजक– ये दस रुद्र दक्षिण दिशामें शोभा पाते हैं।

✍नैऋत्यकोणमें स्थित–

३१. नैऋत्य, ३२. मारुत, ३३. हन्ता, ३४. क्रूरदृष्टि, ३५. भयानक, ३६. ऊर्ध्वकेश, ३७. विरूपाक्ष, ३८. धूम्र, ३९. लोहित, ४०. दंष्ट्री ये दस रुद्र हैं।

✍ये दस रुद्र वरुणदिशामें स्थित–

४१. बल, ४२. अतिबल, ४३. पाशहस्त, नम् ४४. महाबल, ४५. श्वेत, ४६. जयभद्र, ४७. दीर्घबाहु, ४८. जलान्तक, ४९. वडवास्य, ५०. भीम– ये दस रुद्र वरुणदिशामें स्थित बताये गये। हैं।

✍वायव्यकोणमें स्थित–

५१. शीघ्र, ५२. लघु, ५३. वायुवेग, ५४. सूक्ष्म, ५५. तीक्ष्ण, ५६. क्षमान्तक, ५७. पञ्चान्तक, ५८. पञ्चशिख, ५९. कपर्दी, ६०. मेघवाहन ये दस रुद्र वायव्यकोणमें स्थित हैं।

✍ये दस रुद्र उत्तर दिशामें स्थित–

६१. जटामुकुटधारी, ६२. नानारत्नधर, ६३. निधीश, ६४. रूपवान्, ६५. धन्य, ६६. सौम्यदेह, ६७. प्रसादकृत्, ६८. प्रकाम, ६९. लक्ष्मीवान्, ७०. कामरूप – ये दस रुद्र उत्तर दिशामें स्थित हैं।

✍ईशानकोण में स्थित रुद्र–

७१. विद्याधर, ७२. ज्ञानधर, ७३. सर्वज्ञ, ७४. वेदपारग, ७५. मातृवृत्त, ७६. पिङ्गाक्ष, ७७. भूतपाल, ७८. बलिप्रिय, ७९. सर्वविद्याविधाता, ८०. सुख दुःखकर – ये दस रुद्र ईशानकोणमें स्थित हैं।

✍पाताल लोक में स्थित रुद्र–

८१. अनन्त, ८२. पालक, ८३. धीर, ८४. पातालाधिपति, ८५. वृष, ८६. वृषधर, ८७. वीर, ८८. ग्रसन, ८९. सर्वतोमुख, ९०. लोहित इन दस रुद्रोंकी स्थिति नीचेकी दिशा पाताललोकमें समझनी चाहिये।

✍दस रुद्र ऊर्ध्व दिशामें विराजमान –

९१. शम्भु, ९२. विभु, ९३. गणाध्यक्ष, ९४. त्र्यक्ष, ९५. त्रिदशवन्दित, ९६. संवाह, ९७. विवाह, ९८. नभ, ९९. लिप्सु, १००. विचक्षण–ये दस रुद्र ऊर्ध्व दिशामें विराजमान हैं।

✍ब्रह्माण्ड कटाह के भीतर–

१०१. हुहुक,
१०२. **कालाग्निरुद्र,**
१०३. हाटक,
१०४. कूष्माण्ड,
१०५. सत्य,
१०६. ब्रह्मा,
१०७. विष्णु
तथा १०८. रुद्र–
ये आठ रुद्र ब्रह्माण्ड कटाह के भीतर स्थित हैं।

प्रश्न 99

मैं एक ब्राह्मण वर्ण की स्त्री हूँ पर ॐ नमः शिवाय ही जपती हूँ लेकिन शिव पुराण में नारी के लिए ॐ (सूक्ष्म प्रणव) की आज्ञा नहीं मैं क्या करूँ।

उत्तर–

ब्राह्मणों की पतिव्रता स्त्रियाँ हों या अन्य वर्ण की पतिव्रता या साधारण वे सभी शिवाय नमः जपें पर कोई ऋषि यदि उनको नमः शिवाय की आज्ञा दे दे तो वह नमः शिवाय से भी सिद्ध हो जाती है। परंतु प्रणव की आज्ञा गृहस्थ आश्रम की स्त्रियों को नहीं। संध्या को द्विप्रणव युक्त श्रीशंकर मंत्र मिला था उनके भाई वसिष्ठ द्वारा पर वे गृहस्थ नहीं थी उस समय । शिव चरित मानस में हमने संध्या के तप का कारण और पुनर्जन्म लेकर उनके अरुन्धती रूप में विवाह का प्रसंग हमने विस्तार से बताया है।

अतः आप सब हे नारी रूप वाली आत्माओं ! शिवाय नमः जपो।

शास्त्र की आज्ञा ही मानें कृपया।

जब तक शास्त्रों में सभी नारियों के लिए या विशेष नारी के लिए ॐ कार की आज्ञा न मिले तब तक उसे शिव पुराण की आज्ञा से ॐ कार नहीं लगाना चाहिए।

शिव पुराण विद्येश्वर संहिता अध्याय 11 में ब्राह्मण वर्ण की नारी को शिवाय नमः के साथ नमः शिवाय की बात भी कही गई है। उसमें यह स्पष्ट घोषणा नहीं कि हर ब्राह्मणी शिवाय नमः जपे। और उसमें ये भी बताया है कि वे यदि वेदपाठी

ब्राह्मण की पत्नी है तो नमः शिवाय भी जप सकती हैं (पर कोई ऋषि उनके लिए आज्ञा दे दे तो ही नमः शिवाय जप करे अन्यथा शिवाय नमः ही उत्तम है।)
(विप्रस्त्रीणां नमः पूर्वमिदमिच्छन्ति केचन)

प्रश्न 100

मंत्र संबंधित कुछ रहस्य बतायें
एक अक्षरी मंत्र (एकाक्षर मन्त्र) डैली
दस हजार (100 माला) जपने का महा विधान है तभी महा कल्याण होता है।
ॐ (शिव प्रणव)
या
ह्रीं (शक्ति प्रणव)
या
क्लीं
अथवा
क्रीं...
दशार्ण (10 अक्षरी) मन्त्र एक हजार (10 माला)
सौसे कम अक्षरवाले मन्त्र एक सौ (एक माला)
और उससे अधिक अक्षरवाले मन्त्र यथाशक्ति एकसे अधिक बार जपने चाहिये ।
– शिव पुराण विद्येश्वर संहिता अध्याय 11
श्लोक 48 का सार

प्रश्न 101–

मैं ब्राह्मण हूँ पर शिव लोक जाना चाहता हूँ क्या केवल गायत्री मंत्र से मुझे शिव लोक मिलेगा ? शिवलोक देखने की मेरी प्रबल इच्छा है।

उत्तर –

ब्राह्मणों का गायत्री जप भी उनको शिव लोक अवश्य देता है।

1008 (अष्टोत्तरशत नहीं अष्टोत्तरसहस्र) अर्थात एक हजार आठ बार गायत्री का नित्य जप भी उनको शिवका पद प्रदान करने वाला होते है ।

यह हम अक्षयरुद्र तुक्का नहीं अपितु यथार्थ कह रहे हैं।

– शिव पुराण विद्येश्वर संहिता अध्याय 11 श्लोक 46 में

प्रश्न 102

आपकी पोस्ट पढ़कर किसी ने सवाल किया यदि सब यह समझकर विवाह न करें तो हिन्दू की जनसंख्या कम हो जायेगी लगभग अल्पसंख्यक हो जायेगी धीरे धीरे ,

उत्तर–

संख्या या सृष्टि अथवा वंश के लिए आप 4 युवतियों से विवाह करके 40–50 संतानों को जन्म दो पर वासना का भाव न हो। पर पहले

उनका भरण पोषण करने का सामर्थ्य जुटाओ।

परोपकार के लिए हम स्वयं 2 विवाह करते पर शंकर जी ने ब्रह्मचर्य की आज्ञा दे दी।

अन्यथा हमसे बड़ा गृहस्थ और कौन होता जगत में

प्रश्न 103–

वराह पुराण के मात्र एक अध्याय के स्वाध्याय की महिमा क्या है?

उत्तर–इस अध्याय के मात्र एक बार स्वाध्याय से ही मानव 1000 गायों के दान का महानतम फल पा लेता है। –वराह पुराण अध्याय ६०, आप एक अध्याय सुनें–

अगस्त्यजी कहते हैं– राजन् ! अब तुम्हें' शान्ति व्रत' का उपदेश करता हूँ। इसके आचरणसे गृहस्थोंके घरमें सदा शान्ति–सन्मति बनी रहती है। सुव्रत ! कार्तिकमासके शुक्लपक्षकी पञ्चमी तिथिके दिनसे आरम्भकर एक वर्षपर्यन्त व्रतीको अत्यन्त उष्ण भोजनका त्याग करना चाहिये तथा प्रदोषकालमें शेषशायी श्रीहरिकी सम्यक् प्रकारसे पूजा करनी चाहिये। 'ॐ अनन्ताय नमः', 'ॐ वासुकये नमः', 'ॐ तक्षकाय नमः', 'ॐ कर्कोटकाय ', 'ॐ पद्माय नमः', 'ॐ महापद्माय नमः', नमः', 'ॐ शङ्खपालाय नमः', 'ॐ कुटिलाय नमः' – इन मन्त्रोंके द्वारा भगवान् विष्णुके शय्यास्वरूप शेषनागके क्रमशः दोनों चरण, कटिभाग, उदर, छाती, कण्ठ, दोनों भुजाएँ, मुख एवं सिरकी विधि पूर्वक पृथक्–पृथक् पूजा करनी चाहिये। फिर भगवान् विष्णुको लक्ष्यकर सभी अङ्गोंको दूधसे भी स्नान कराये। तत्पश्चात् श्रद्धालु साधकको भगवान्के सामने तिलमिश्रित दूधसे हवन करना चाहिये।इस प्रकार एक वर्ष पूराकर ब्राह्मणोंको भोजन कराये और सुवर्णमयी शेषनागकी प्रतिमा बनाकर ब्राह्मणको दान दे। राजन्! जो पुरुष इस प्रकार यह व्रत भक्तिपूर्वक करता है, उसे निश्चय ही शान्ति सुलभ हो जाती है, साथ ही उसे सर्पोंसे भी भय नहीं होता।

प्रश्न 104

जो लोग गुरु का दिया हुआ भगवान का नाम जपते है क्या उनको भी गायत्री मंत्र का जप करना चाहिए जबकि गुरु इसके अलावा किसी भी मंत्र के जप के लिए नहीं कहते है। –डॉ शिखर द्विवेदी

उत्तर–

100प्रतिशत धर्म शास्त्रों में द्विजों को गायत्री मंत्र अनिवार्य बताया है और यह तक कहा है कि जो गुरु अपने द्विज शिष्य के द्विजत्व की रक्षा करवाना चाहे वह अपने शिष्य को गायत्री की शिक्षा अनिवार्य दे और यदि नहीं देता तो वह गुरु बैल बनता है।

और शिष्य भी अपने गुरु से गायत्री मंत्र की विधियाँ और शिक्षा लें यदि गुरु न दे तो शिव पुराण कहती है कि ऐसे अज्ञानी और स्वधर्मी व मनमानी करने वाले गुरु को त्याग दे।

केवल ब्रह्मनिष्ठ शिष्य को गायत्री मंत्र या अन्य मंत्र अनिवार्य नहीं। इसी कारण जड़ भरत ने सभी मंत्रों का जप न करके गायत्री का भी उच्चारण नहीं किया। ब्रह्मनिष्ठ स्वयं गायत्री और वही स्वयं शिव व हरि होता है उसके लिए यजन भजन पूजन तीर्थवास व्रत–उपवास या हवन जनेऊ व शिखा आदि अनिवार्य नहीं।

हरि या शिवभक्त द्विज भी संध्या काल में गायत्री का लोप न करें अन्यथा उनका यज्ञोपवीत कोई काम का नहीं। उनकी शिखा की शक्ति भी गायत्री ही है।

अन्यथा अगले जन्म में ऐसे स्थान पर जन्म लोगे जहाँ गायत्री को चाहने पर भी अधिकार नहीं मिलेगा।

(अक्षयरुद्र का कार्य सत्य बताना है न मानना हो तो न मानों वैसे भी यह अक्षयरुद्र कुछ समय बाद एकान्तिक ही होने वाला है अतः जिसको मानना हो माने न मानना हो तो कोई बात नहीं)

प्रश्न 105

आदरणीय पूज्य शंकराचार्यांश जी क्या ब्राह्मण के अलावा कोई भी वर्ण या अन्य जाति का इन्सान गायत्री माता का जप नही कर सकता है बिना दीक्षा लिए (या किसी भी प्रकार से) क्योंकि आज कल के ब्राह्मण मैंने जितने भी देखे सब ठीक–ठाक है और अपनी मर्जी मुताबिक पूजा अर्चना करते हैं क्या दूसरे लोगों का गायत्री माता के मंत्रो पर कोई अधिकार नहीं है, आप के जवाब की प्रतीक्षा रहेगी, जय महादेव, जय माता भवानी, जय मा अंबे, जय गुरुदेव, हर हर महादेव। – अजय पटेल भावनगर

उत्तर–

ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य ये तीनों यज्ञोपवीत धारण के बाद बिना भय के जप सकते हैं गायत्री मंत्र।

और अब बचे सूत , वर्ण संकर, चाण्डाल , शूद्र तो इसके लिए आप उदास न हों इस रहस्य को श्रीमद्भागवत महापुराण 7/11/35 में स्पष्ट किया है कि क्षत्रिय और वैश्य अथवा अन्य भी यदि विशेष गुणधर्म वाले हैं (वहीं पढ़े सप्तम स्कन्ध के ग्यारहवें अध्याय के श्लोक 35 में) तो आधुनिक महा वर्ण के ब्राह्मण लोग उस गुणवान

धर्मपरायण और जितेन्द्रिय पुरुष या साधन चतुष्ट्य संपन्न को अपने ही वर्ण का अर्थात ब्राह्मण ही समझे।

अब विचार करें कि जब उपर्युक्त गुणों से युक्त आप हो (ईश्वर ही जानते हैं) तो आपको द्विजत्व भी मिलना चाहिए। और आप यथार्थ में साधन चतुष्ट्य से युक्त हो फिर भी यदि कोई ब्राह्मण आपको संस्कारित न करे तो आप बिना भय के गायत्री जपें।

साधन चतुष्ट्य क्या है ?

उत्तर–

- विवेक पहला साधन
- वैराग्य दूसरा साधन
- मुमुक्षुत्व तीसरा साधन
- षड् संपत्ति चौथा साधन

विस्तार–

■नित्य आत्मा है सांसारिक उपलब्धियाँ अनित्य है अतः मैं इन अनित्य में अब लिप्त नहीं होऊँगा यह है विवेक।

■ लौकिक और परलौकिक अतुलनीय सुख समृद्धि धन यश आदि की कामना न होना अर्थात इनसे राग न होना ही वैराग्य समझो।

■ संसार दुखालय है यह गीता में भी भगवान ने बोला है अतः मुझे अब जगत में पुनः शरीर धारण नहीं करना अब मैं सदा के लिए वैकुण्ठ या शिवलोक पाकर रहूँगा मुझे निश्चित ही हरि

या शिव की सामीप्यता (सामीप्य मुक्ति) या उनका रूप भी (सारूप्य मुक्ति) पाना है या तद्भावित ब्रह्मनिष्ठ होकर कैवल्य मुक्ति । इसको ही अक्षयरुद्र के अनुसार यथार्थ मुमुक्षा जानों।

■ षड् संपत्ति–

यह छः गुणधर्मों का नाम है।

(1) शम (मन का निग्रह; मन की चंचलता का नाश)
(2) दम (इन्द्रियों का निग्रह या इन पर नियंत्रण)
(3) तितिक्षा(आध्यात्मिक मार्ग के दुखों को चुपचाप सहन करना न कि यह कहना कि धर्म से दुख ही दुख होता है या सत्य , भक्ति और सेवा से सुख नहीं मिला मुझे तो दुख हो रहा है अतः यह सब कुछ दुख तकलीफ होकर भी लक्ष्य पर चट्टान की तरह आरूढ होना ही तितिक्षा है।)
(4) उपरति(संसार से उपराम अर्थात विरत)
(5) श्रृद्धा (वेद ,शास्त्र आदि में विश्वास)
(6) समाधान (परमात्मा के प्रति चित्त की एकाग्रता ही यथार्थ में समाधान है)

प्रश्न 106

नमः शिवाय पंचाक्षरमन्त्र की महिमा और प्रयोग बतायें ? –

समस्त व्रतोंमें देवदेव उमापतिकी पूजा करके विधिपूर्वक पंचाक्षरी विद्या (मन्त्र) – का जप अनिवार्य होता है।

ऐसे ही शक्ति या विष्णु जी के व्रत–उपवास पर उनके मंत्र का जप अनिवार्य है। जपसे ही विशेषकर व्रतोंकी पूर्णता होती है, अन्यथा नहीं; इसमें सन्देह नहीं है। अतः सोमवार या प्रदोष व्रत के दिन तो अनिवार्य रूप से उत्तम पंचाक्षरीविद्याका जप अवश्य करना चाहिये ।

16 सोमवार करने वाली नारी भी भस्म से त्रिपुण्ड्र व रुद्राक्ष धारण अवश्य करें (इसी प्रकार विष्णु जी की भक्तिमति तुलसी माला अवश्य धारण करें)

लिंग पुराण के पूर्व भाग के अनुसार ही हम बता रहे हैं क्योंकि माहात्म्य के लिए शास्त्र ही उत्तम प्रमाण है।

ऋषिगण बोले –" (हे सूतजी!) पंचाक्षरीविद्या क्या है और इसका प्रभाव कैसा होता है ? हे महाभाग ! क्रमसे इसकी विधि बताइये; इसे सुननेकी हमलोगों की (बड़ी) उत्सुकता है ।

सूतजी बोले–हे ऋषियो! पूर्वकालमें देवदेव रुद्र भगवान् शम्भुके द्वारा पार्वतीसे कहे गये इस पुण्यप्रद मन्त्र माहात्म्य को मैं संक्षेपमें बता रहा हूँ।

●●● श्रीशिव पार्वती संवाद ●●●●

(श्रीदेवी बोलीं– हे भगवन्! हे देवदेवेश ! हे सर्वलोक–महेश्वर ! मैं यथार्थरूपसे पंचाक्षरमन्त्रका माहात्म्य चाहती हूँ।)

तब

श्री शम्भु भगवान् बोले– हे देवि ! सौ करोड़ वर्षोंमें भी पंचाक्षरमन्त्रका माहात्म्य नहीं कहा जा सकता है; मैं सारे कार्य छोड़कर भी पंचाक्षरी का माहात्म्य सतत् बताऊँ तो भी करोड़ों वर्ष तक वह माहात्म्य पूर्ण रूप से नहीं कह सकूँगा ।अतः इसे संक्षेपमें सुनिये ।

हे देवि ! प्रलयके उपस्थित होनेपर जब समस्त

चराचर जगत्, देवता तथा असुर, नाग एवं राक्षस नष्ट हो जाते हैं और आपसहित सभी पदार्थ प्रकृतिमें लीन होकर प्रलयको प्राप्त हो जाते हैं, उस समय एकमात्र मैं रह जाता हूँ; दूसरा कुछ भी नहीं रह जाता है। उस समय सभी वेद तथा शास्त्र उसी पंचाक्षरमन्त्रमें स्थित रहते हैं; मेरी शक्तिसे अनुपालित होनेके कारण वे नष्ट नहीं होते हैं।

मैं शिव एक होता हुआ भी उस समय प्रकृति तथा आत्माके भेदसे दो रूपोंमें रहता हूँ।

●भगवान् नारायण मायामय शरीर धारणकर जलके मध्यमें योगरूपी पर्यंकपर शयन करते हैं। उनके नाभिकमलसे पाँच मुखवाले ब्रह्मा उत्पन्न हुए; तीनों लोकोंका सृजन करनेकी इच्छावाले उन ब्रह्माने (इस कार्यमें) असमर्थ तथा सहायकविहीन होनेके कारण प्रारम्भमें अमित तेजवाले दस मानस पुत्रोंको उत्पन्न किया। उनकी वृद्धिके लिये ब्रह्माने मुझसे कहा–' दृ 'हे महादेव ! हे महेश्वर ! मेरे पुत्रोंको शक्ति प्रदान कीजिये।' उनके ऐसा कहनेपर पाँच मुख धारण करनेवाले मैंने कमलयोनि (ब्रह्मा) – के लिये (अपने) पाँचमुखोंसे पाँच अक्षरोंका उच्चारण किया।

■अपने पाँच मुखोंसे उन (अक्षरों)–को ग्रहण करते हुए लोकपितामह ब्रह्माने वाच्यवाचक भावसे परमेश्वरको जान लिया। हे देवि! तीनों लोकोंमें पूजित शिव पंचाक्षरोंसे वाच्य हैं और (यह) परम पंचाक्षरमन्त्र

उनके वाचकके रूपमें स्थित है ।

■पाँच मुखवाले महात्मा ब्रह्माने विधिपूर्वक इसके प्रयोगको जानकर तथा सिद्धि प्राप्त करके जगत्के कल्याणके लिये अपने पुत्रोंको महान् अर्थवाले इस पंचाक्षरमन्त्रका उपदेश किया।

तदनन्तर साक्षात् लोकपितामहसे इस मन्त्ररत्नको प्राप्तकर वे उन परात्पर देव शिवकी आराधना करनेमें तत्पर हो गये । तब त्रिदेवोंमें श्रेष्ठ भगवान् शिव प्रसन्न हो गये और उन्होंने उन्हें सम्पूर्ण ज्ञान तथा अणिमा आदि आठ सिद्धियाँ प्रदान कीं ।

तत्पश्चात् (उन) वरोंको प्राप्तकर वे विप्र मेरी सतत् आराधनाकी आकांक्षा करने लगे।

■मेरुके रम्य शिखरपर मुंजवान नामक पर्वत है। शोभासम्पन्न यह पर्वत मुझे प्रिय है और मेरे भूतोंके द्वारा भलीभाँति रक्षित है। हे देवि! पूर्वकालमें उस (पर्वत) के समीप स्थित रहते हुए

लोकसृष्टिके इच्छुक उन ऋषियोंने मेरे अनुग्रहहेतु वायुके आहारपर रहकर हजार दिव्य वर्षोंतक कठोर तप किया । उनकी भक्ति देखकर मैं शीघ्र ही उनके समक्ष प्रकट हो गया और मैंने लोकोंके कल्याणकी इच्छासे उन महात्माओंको पंचाक्षरमन्त्र, उसके ऋषि, छन्द, देवता, शक्ति, बीजसहित षडंग न्यास, दिग्बन्ध तथा विनियोग पूर्ण रूपसे बता दिया ।

उस मन्त्रका माहात्म्य सुनकर उन तपोधन ऋषियोंने मन्त्रका विनियोग करके सभी अनुष्ठान पूर्ण किये। उसके बाद उन्होंने उस मन्त्रकी महिमासे लोकों, देवताओं, असुरों, मनुष्यों, वर्णों, वर्णविभागों तथा समस्त उत्तम धर्मोंको जो पूर्व कल्पमें उत्पन्न हुए थे– उन सबका श्रवण किया।

■पंचाक्षरमन्त्रके प्रभावसे ही लोक, वेद, महर्षिगण, शाश्वत धर्म, देवता तथा यह सम्पूर्ण जगत् स्थित है। अब मैं उसके विषयमें

सव कुछ बताऊँगा; सावधान होकर सुनिये –

●यह मन्त्र अल्प अक्षरोंवाला, महान् अर्थोंवाला,
वेदोंका सार, मुक्तिप्रद, आज्ञासिद्ध, असन्दिग्ध तथा शिवस्वरूप है ।

●यह मेरा मन्त्र अनेक सिद्धियोंसे युक्त,

●अलौकिक,

●लोगोंके चित्तको आनन्दित करनेवाला,

●सुनिश्चित अर्थोवाला, गम्भीर तथा परमेश्वरस्वरूप है।

●यह मन्त्र मुखसे सुखपूर्वक उच्चारणयोग्य, सम्पूर्ण प्रयोजनोंको सिद्ध करनेवाला, सभी विद्याओंका बीजस्वरूप,

●यही आद्य (सबसे पहला) मन्त्र, परम सुन्दर, अति सूक्ष्म एवं महान् अर्थोवाला है। इसे वटवृक्षके बीजकी भाँति समझना चाहिये।

●यह वेदस्वरूप, तीनों गुणोंसे परे, सर्वज्ञ, सब कुछ करनेवाला तथा सर्वसमर्थ है।

ॐ – यह एक अक्षरवाला मन्त्र है; सर्वव्यापीशिव इसमें स्थित रहते हैं। पाँच अक्षररूपी शरीरवाले शिव स्वभावसे ही सूक्ष्म षडक्षर (छः अक्षरोंवाले)– – मन्त्रमें वाच्य–वाचक भावसे विराजमान हैं। प्रमेयत्वके कारण शिव वाच्य हैं तथा मन्त्र उनका वाचक कहा गया है। यह वाच्य वाचक भाव (सम्बन्ध) उन दोनोंमें अनादि है। वेद अथवा शिवागममें षडक्षरमन्त्र स्थित हैः किंतु लोकमें पंचाक्षरमन्त्रको मुख्य माना गया है।

●हे शिवे! जिसके हृदयमें परमेश्वररूप यह मन्त्र (नमः शिवाय) स्थित है उसे बहुत मन्त्रों अथवा अतिविस्तृत शास्त्रोंसे क्या प्रयोजन!

●जो विद्वान् विधानपूर्वक इसका ज्ञान प्राप्तकर इसे ठीक–ठीक जपता है, उसने मानो वेदोंका अध्ययन कर लिया और सबकुछ अनुष्ठित कर लिया।

●मात्र यही शिवज्ञान है, यही परम पद है और यही ब्रह्मविद्या है; अतः विद्वान्को नित्य इसका जप करना चाहिये ।

प्रणव (ॐ)–सहित पाँच अक्षरोंसे युक्त यह मन्त्र (नमः शिवाय) मेरा हृदय है। यह गूढ़से भी गूढ़ है और साक्षात् सर्वोत्तम मोक्षज्ञान है।

●(हे देवि !) अब मैं इस मन्त्रके और प्रत्येक अक्षरके ऋषि, छन्द, देवता, बीज, शक्ति, स्वर, वर्ण तथा स्थानका वर्णन करूँगा।

इस मन्त्रके ऋषि वामदेव तथा छन्द पंक्ति कहा गया है। हे वरानने! इस मन्त्रका देवता (स्वयं) मैं शिव ही हूँ। पंचभूतस्वरूप 'न'कार आदि इसके बीज हैं। प्रणवको सर्वव्यापी तथा शाश्वत आत्मा समझो। हे सभी देवताओंसे नमस्कृत देवेशि! (स्वयं) तुम ही इसकी शक्ति हो। कुछ प्रणव तुम्हारा है और कुछ प्रणव हमारा है। हे देवि! तुम्हारा प्रणव सभी मन्त्रोंका शक्तिस्वरूप है; इसमें संशय नहीं हे देवि!

●●●●●●●●●●●

'अ','उ','म'मेरे प्रणवमें स्थित हैं।
क्रमसे 'उ', 'म', 'अ' तुम्हारे प्रणवके हैं;

●●●●●●●●●●●

तुम इस उत्तम प्रणवको प्लुत तीन मात्राओंवाला जानो। ओंकारका स्वर उदात्त है, इसके ऋषि ब्रह्मा हैं, इसका शरीर श्वेत है, छन्द देवी गायत्री हैं और इसके अधिदेवता परमात्मा हैं। इसका पहला, दूसरा तथा चौथा वर्ण उदात्त; पाँचवाँ वर्ण स्वरित और मध्यम वर्ण निषध (निषादस्वर) कहा गया है ।।

5 अक्षरों का ज्ञान –

(1) 'न' पीले रंगका है और स्थान पूर्वमुख (पूरबकी ओर मुखवाला) कहा गया है। इसके अधिदेवता इन्द्र हैं, इसका छन्द गायत्री है और इसके ऋषि गौतम हैं।
(2) 'म' कृष्ण वर्णवाला है, इसका स्थान दक्षिणमुख है, इसका छन्द अनुष्टुप् है, इसके ऋषि अत्रि हैं और इसके अधिदेवता रुद्र कहे जाते हैं।
(3). 'शि' धूम्र वर्णवाला है, इसका स्थान पश्चिममुख है, इसके ऋषि विश्वामित्र हैं, इसका छन्द त्रिष्टुप् है और इसके देवता विष्णु हैं।
(4) 'वा' हेम वर्णवाला है, इसका स्थान उत्तरमुख है, इसके अधिदेवता ब्रह्मा हैं, इसका छन्द बृहती है और इसके ऋषि अंगिरा हैं।
(5) 'य' लाल रंगवाला है, इसका स्थान ऊर्ध्वमुख है, इसका छन्द विराट् है, इसके ऋषि भरद्वाज हैं और इसके देवता स्कन्द कहे जाते हैं ।

(हे देवि!) अब मैं सभी सिद्धियाँ प्रदान करनेवाले, मंगलमय तथा समस्त पापोंका नाश करनेवाले इसके न्यासको बताऊँगा । न्यास तीन प्रकारका कहा जाता है। 1.उत्पत्ति,
2.स्थिति (पालन) तथा
3.संहार
इनके भेदसे यह तीन प्रकारका कहा गया है; यह क्रमशः ब्रह्मचारियों, गृहस्थों
तथा
यतियों के लिये होता है। उत्पत्ति न्यास ब्रह्मचारियोंका,स्थिति न्यास गृहस्थोंका
और
संहृति (संहार) न्यास यतियोंका होता है; अन्यथा सिद्धि नहीं प्राप्त हो सकती ।

अंगन्यास, करन्यास, देहन्यास – यह तीन प्रकारका न्यास होता है; हे वरानने! अब मैं उत्पत्ति आदि तीन भेदोंसे इन्हें भी आपको बताऊँगा। सबसे पहले करन्यास उसके बाद देहन्यास पुनः अंगन्यास मन्त्रके अक्षरोंके क्रमसे करना चाहिये। सिरसे प्रारम्भ होकर पैरोंतकका न्यास उत्पत्तिन्यास कहा जाता है। हे प्रिये ! पैरोंसे प्रारम्भ होकर सिरतकका न्यास संहारन्यास होता है। हृदय, मुख और कण्ठका न्यास स्थितिन्यास कहा गया है। हे शोभने ! यह न्यास (क्रमशः) ब्रह्मचारियों, गृहस्थों तथा यतियोंके लिये है ।

●●●●●●●●●●●

न्यास पूर्वक जपा गया मंगलमय पंचाक्षरी
मंत्र ही शीघ्र सिद्ध होकर तत्काल रक्षा करता है।

●●●●●●●●●●●

यह मन्त्र अल्प अक्षरोंवाला, महान् अर्थोंवाला,
वेदोंका सार, मुक्तिप्रद, आज्ञासिद्ध, असन्दिग्ध तथा
शिवस्वरूप है ।

यह मेरा मन्त्र अनेक सिद्धियोंसे युक्त, अलौकिक, लोगोंके चित्तको आनन्दित करनेवाला, सुनिश्चित अर्थोंवाला, गम्भीर तथा परमेश्वरस्वरूप है ।

✍✍✍✍✍✍✍✍✍

विनियोग न जाननेवालेका वह मन्त्र प्रभावहीन हो जाता है। जिसका जिस कार्यके साथ विशेष रूपसे संयोजन किया जाय, उसे विनियोग कहा गया है। यह इस लोकमें तथा परलोकमें फल प्रदान करता है। विनियोगसे आयु, आरोग्य, शरीरकी नित्यता, राज्य, ऐश्वर्य, उत्तम ज्ञान, स्वर्ग तथा मोक्ष– ये सब प्राप्त हो जाते हैं।

1.जो शुद्ध होकर पर्वतपर चढ़कर आलस्यरहित हो एक लाख बार मन्त्रका जप करता है। अथवा किसी महानदीके तटपर दो लाख बार जप करता है, वह दीर्घ आयु प्राप्त करता है 100

वर्ष तक निरोगी होकर वह उत्तम स्वास्थ्य पा लेता है। पर जो आलसी और अकर्मठ या भाग्य के भरोसे बैठे रहते हैं वे ही तीन तापों से ग्रस्त रहकर आजीवन दुख सहन करते हैं।

2 दूर्वांकुर, तिल, वाणी, गुरुच और घुटिका – इनका दस हजार होम आयुकी वृद्धि करनेवाला होता है।

3. पीपल वृक्ष सहित प्रयोग–

बुद्धिमान्को चाहिये कि पीपलके वृक्षका आश्रय लेकर दो लाख जप करे शनिवारको पीपल वृक्षका स्पर्श करके जप से वह मनुष्य दीर्घ आयु प्राप्त करता है।

बुद्धिमान्को शनैश्चरके दिन (अपने) दोनों हाथोंसे पीपलके वृक्षका स्पर्श करना चाहिये और एक सौ आठ बार (मन्त्रका) जप करना चाहिये; यह भी अकाल मृत्युको दूर करनेवाला होता है ।

4. सूर्यकी ओर मुख करके एकाग्रचित्त होकर एक लाख जप करना चाहिये; अर्ककी समिधाओंसे प्रतिदिन एक सौ आठ (108) होम करनेवाला (व्यक्ति) रोगसे मुक्त हो जाता है।

5. अति आवश्यक सूचना – मनुष्यको समस्त रोगोंके शमनके लिये पलाश (छोला= ब्रह्मा वृक्ष) की–समिधाओंसे होम करना चाहिये; इससे दस हजार होम करके मनुष्य रोगरहित हो जाता है।

6. प्रतिदिन एक सौ आठ बार जप करके सूर्यके समक्ष जल पीना चाहिये; ऐसा करनेवाला एक महीनेमें ही सभी उदर– सम्बन्धी रोगोंसे मुक्त हो जाता है।

7.ग्यारह बार इस (नमः शिवाय)मन्त्र से अभिमन्त्रित करके अन्न तथा अन्य भक्ष्य–पेय पदार्थ ग्रहण करना चाहिये; इससे (अभिमन्त्रित से)विष भी अमृत हो जाता है।

नमः शिवाय
नमः शिवाय
नमः शिवाय
नमः शिवाय
11 बार

8. प्रतिदिन पूर्वाह्नमें एक सौ आठ आहुति देकर तथा सूर्योपस्थान करके एक लाख जप करना चाहिये; ऐसा करनेवाला पूर्ण आरोग्य प्राप्त करता है।

9.नदी के जलसे भरे हुए सुन्दर व स्वच्छ घड़ेको स्पर्श करते हुए दस हजार (10,000 अर्थात् 100 माला) जप करनेसे वह जल महा अभिमन्त्रित हो जाता है तथा उस जलसे स्नान करनेसे सभी रोगोंकी चिकित्सा हो जाती है

10. अभिमन्त्रित न कर पाओ तो जप करके भी अन्न ग्रहण करें ।

पवित्र होकर प्रतिदिन अट्ठाईस बार (मन्त्रका) जप करके अन्न ग्रहण करना चाहिये और बादमें उतनी ही पलाश समिधाओंसे हवन करनेसे (व्यक्ति) आरोग्य प्राप्त करता है।

11. चन्द्रग्रहण तथा सूर्यग्रहणके अवसरपर पवित्र होकर विधिपूर्वक उपवास करके जबतक ग्रहणका मोक्ष हो, तबतक किसी समुद्रगामिनी नदी में खड़े होकर कंठ या नाभि तक पानी में खड़े होकर सतत् जप करना चाहिये ।

और ग्रहण समाप्त होने पर एक हजार आठ (1008)अर्थात दस माला मन्त्रका जप करके ब्राह्मीरसका पान करना चाहिये।

ऐसा करनेवाला सभी शास्त्रोंकी धारण करनेवाली कल्याणमयी लौकिक प्रतिभा प्राप्त करता है और उसकी वाणी अतिमानुषी होकर देवी सरस्वतीकी वाणीके तुल्य हो जाती है ।

12. ग्रह तथा नक्षत्रके कारण कष्ट होनेपर मनुष्य भक्तिपूर्वक दस हजार जप करके तथा आठ हजार आहुति देकर ग्रहपीड़ासे मुक्त हो जाता है।

13.दुःस्वप्न देखनेपर स्नान करके मनुष्यको दस हजार (10,000 अर्थात सौ माला ,रुद्राक्ष से) जप करना चाहिये; इसके बाद अग्नि में घृत की एक सौ आठ आहुति देनेसे उसे शीघ्र ही शान्ति प्राप्त होगी।

14. मनोकामना– चन्द्रग्रहण तथा सूर्यग्रहणके समय विधिपूर्वक लिङ्गका पूजन करके शुद्ध तथा एकाग्रचित्त होकर इन महादेवके समीप आदरपूर्वक दस हजार जप करना चाहिये; हे देवि ! वह मनुष्य जो कुछ भी माँगता है, उसकी सभी कामनाएँ पूर्ण होती है; इसमें सन्देह नहीं है ।

15. हाथियों, घोड़ों तथा विशेषकर गोजातिके पशुओंमें रोग उत्पन्न होनेपर शुद्ध होकर तथा भक्तियुक्त होकर विधिपूर्वक महीने भर मेरा पूजन करके समिधाकी दस हजार आहुति देनेसे मेरी कृपा से उन पशुओंके रोगकी शान्ति तथा उनकी वृद्धि होती है; इसमें सन्देह नहीं है ।

16.हे देवि ! उपद्रव तथा शत्रुबाधा उत्पन्न होनेपर जो (व्यक्ति) पवित्र होकर पलाशकी समिधाओं से दस हजार होम करता है; उसकी शान्ति होती है।

17.हे देवि ! आभिचारिक बाधामें भी ऐसा ही करना चाहिये; ऐसा करनेसे उसकी शक्ति प्रकट होती है और शत्रुको पीड़ा उत्पन्न होती है।

18. पाप नष्ट होने पर ही ज्ञान प्राप्त होता है , पापपुंज का समूह ही ज्ञान को दूर रखता है नित्य 10 माला एक वर्ष तक ब्रह्मचर्य पूर्वक नमः शिवाय से व्यक्ति निष्पाप हो जाता है निष्पापता के कारण उसका मन भी वश में हो जाता है और यह वश मे होने पर दसों दिशा से अमृत की वर्षा होती है।

19.हे शुभे ! विद्या तथा लक्ष्मीकी विशुद्धिके लिये अंजलिमें जल लेकर मेरा ध्यान करके ग्यारह बार शिव– मन्त्रका जप करके उस जलसे अभिषेक करना चाहिये।

20. पाप–शोधनके लिये एक सौ आठ बार मन्त्रका जप करके स्नान करना चाहिये; यह सभी तीर्थोंका फल देनेवाला, सभी पापोंको दूर करनेवाला तथा कल्याणकारक है।

21. सन्ध्योपासनके छूट जानेपर मनुष्यको एक सौ बार मन्त्रका जप करना चाहिये।

22.सुअर, चाण्डाल, दुर्जन तथा कुक्कुटका स्पर्श किया हुआ अन्न नहीं खाना चाहिये और किसी कारण वश खाना ही पड़ जाये तो खा लेनेपर एक सौ आठ बार मन्त्रका जप करना चाहिये ।
23 .जो शान्त होकर आत्मबोध करानेवाले, गोपनीय तथा शिवज्ञानको प्रकाशित करनेवाले इस मन्त्रका शिवालय में पाँच लाख जप करता है, वह साक्षात् मुझ शिव के समान ही हो जाता है और हे भद्रे ! वह मनुष्य सुखपूर्वक पाँचों वायु पर प्राप्त कर लेता है।
24. हे सुमुखि ! जो शुद्ध होकर इन्द्रियों को वश में करके (नेत्र से भी परायी नार को कटाक्ष न करते हुए, धर्म का पालन करते हुए, एक समय उपवास पूर्वक) पाँच लाख मन्त्र जप करता है, वह पाँचों ज्ञान इंद्रियों पर विजय प्राप्त कर लेता है।)
25. पुनः पाँच लाख विनियोग व न्यास सहित शिवालय में ब्रह्मचर्य पूर्वक जप से पाँच विषय पर विजय प्राप्त कर लेता है।
26.जो चौथी बार नमः शिवाय को 500000 बार शिवालय में जप लेता है (रुद्राक्ष धारण कर भस्म लगाकर और भूरे कंबल पर बैठकर) वह पृथ्वी आदि पंचभूतों पर विजय प्राप्त कर लेता है।

प्रश्न 107

साक्षात् शिव जी से गुरुदीक्षा लेने के लिए व शिवांश पुत्र की प्राप्ति के लिए सबसे सरल स्तोत्र कौन सा है?

उत्तर–

साक्षात् शिव जी से गुरुदीक्षा लेने के लिए व शिवांश पुत्र की प्राप्ति के लिए सबसे सरल स्तोत्र–

अस‍ितकृत है । इसी स्तोत्र के अनुष्ठान से ही असित मुनि ने महादेव से ही गुरुदीक्षा ली और देवल नामक शिवांश प्राप्त किया। जिसकी कथा हमने कुछ दिन पहले एक पोस्ट पर लिखी थी।

पर वह पुत्र नैष्ठिक ब्रह्मचारी हुआ।

शिवांश 90प्रतिशत ऐसे ही होते हैं।

असित जी ने

देवल नामक अंशभूत शिव तो पा लिया तब वह देवल नामक अंशभूत शिव ने राधा जी की भक्ति आरंभ कर दी और उसकी तपस्या को देखकर इंद्र को डर लगा तब तपनाश के लिए एक अप्सरा भेजी । वह मूर्ख अप्सरा अर्धनग्न होकर माँसपिण्डो के लोथड़ो से उनको लुभाने की चेष्टा करने लगी उस अप्सरा की काम पिपासा देवल ने पूरी नहीं की मना कर दिया ...तो उस अप्सरा ने अंशभूत शिव को शाप दे डाला कि – हे नैष्ठिक ब्रह्मचारी! हे

अंशभूत! तेरे अंग अपंग जैसे होकर 8 वक्र हो जायें और तप का नाश भी तब इन्होनें चिता तैयार की ..रास लीला के समय गोपियों को छोड़कर अचानक श्रीराधाकृष्ण इनको ही बचाने गये थे।

(जिस स्तोत्र से असित जी ने इन अंशभूत शिव को प्राप्त किया था वह स्तोत्र हमारी पुस्तक स्तोत्र निधिवन भाग एक पेज 111 पर है)

असित उवाच–

जगद्गुरो नमस्तुभ्यं शिवाय शिवदाय च।
योगीन्द्राणां च योगीन्द्र गुरूणां गुरवे नमः ।।1।।

मृत्योर्मृत्युस्वरूपेण मृत्युसंसारखंडन
मृत्योरीश मृत्युबीज मृत्युञ्जय नमोऽस्तु ते ।।2।।

कालरूपं कलयतां कालकालेश कारण।
कालादतीत कालस्य कालकाल नमोऽस्तु ते ।।3 ।।

गुणातीत गुणाधार गुणबीज गुणात्मक ।
गुणीश गुणिनां बीज गुणिनां गुरवे नमः ।। 4 ।।

ब्रह्मस्वरूप ब्रह्मज्ञ ब्रह्मभावनतत्पर ।
ब्रह्मबीज स्वरूपेण ब्रह्मबीज नमोऽस्तु ते ।।5

प्रश्न 108

महाराज जी! क्या किसी साधक को सिर्फ ब्रह्मण गुरु से ही साधना मन्त्र या उपदेश दीक्षा लेनी चाहिए

शिव प्रदत्त अन्य मार्गो जैसे तंत्र कौल अघोर नाथ अवधूत इत्यादि पंथो मे अन्य वर्ण के गुरुओ का जिक्र सुना है सुना है वे वर्णआश्रम को नहीं मानते और श्रुति स्मृति पुराणोंक्त परम्परा भी इन्हे स्वीकार नहीं करती पर शिवशक्ति की अन्य आचारो द्वारा ये साधना उपसना करते है

क्या ये भी सनातन के अंग है

क्या सिर्फ ब्रह्मण गुरु को ही मन्त्र आदि देने का अधिकार है उसी से लेना सही होता है हमारी जिज्ञासा है आप से प्रार्थना है मार्गदर्शन करें जिससे भ्रम का निवारण हो माँ आप पर सदा कृपालु हो जय माँ।

– एक भक्त

उत्तर–

धर्म का आधार वेद ,उपनिषदें और पुराण हैं । उनमें अवधूत उपनिषद के अनुसार आप अवधूत की परिभाषा समझें तो सारा अज्ञान तिरोहित हो जायेगा। अवधूत न तो शैव होता है न ही वैष्णव न ही किसी संप्रदाय विशेष से उसका कोई ताल्लुक है वह तो एक मात्र परब्रह्म ही होता है । वही ब्रह्मा और वही विष्णु व रुद्र है।

अब बात वर्ण या ज्ञान की ही करें तो
धर्म शास्त्रों में ब्राह्मण की अनेक परिभाषाएं दी गई हैं।

1. जन्मजात (भागवत 7/11/30)
2. धर्मपरायण , वीतरागी , सभी उत्तम गुणों से युक्त तथा गुरुमंत्र का पुरश्चरण कर्ता (वह भले ही क्षत्रिय हो उसे भी ब्राह्मण लोग अपने वर्ण का मान लें ऐसा वेदव्यास जी का कथन श्रीमद्भागवत महापुराण 7/11/35 में है। अतः ऐसे क्षत्रिय या वैश्य को यथार्थ में ब्राह्मण माना जाए।
3. अद्वैत से एकत्व पर (वज्रसूचिक उपनिषद)
4. अनन्य भक्त ही दीक्षा देने का अधिकारी है (चैतन्य चरितामृत)
5. ब्रह्मज्ञानी ही परम गुरु है वह चाहे ब्राह्मण वर्ण का हो अथवा क्षत्रिय या चाहे चाण्डाल अथवा वर्ण संकर पर ब्रह्मनिष्ठ हो। ऐसा एकाकार (अपरोक्ष ब्रह्मनिष्ठ) ही वज्रसूचिक उपनिषद के अनुसार एकमात्र ब्राह्मण है इस उपनिषद के अनुसार जाति या देह ब्राह्मण नहीं अपितु ब्रह्म से तद्भावित ही ब्राह्मण है। पर जो लोग वर्ण से ब्राह्मण हैं वे यदि समाज में कीर्ति चाहते हैं तो वे हमारे अनुसार ब्राह्मण समाज मे जन्में किसी अपरोक्ष ज्ञाननिष्ठ व जितेन्द्रिय से गुरुदीक्षा लें। पर यदि वे क्षत्रिय या वैश्य वर्ण के ब्रह्मनिष्ठ से दीक्षा लेंगे तो उनको मोक्ष तो मिल जायेगा पर समाज उनकी निन्दा कर सकता है।

वैसे शिव पुराण के अनुसार शिव जी ने कहा है कि उस ब्रह्मनिष्ठ को चारों वर्णों से परे साक्षात ब्रह्म स्वरूप समझना चाहिए। इस संदर्भ में हमारे अनुसार चाहे वह ब्राह्मण वर्ण का हो या क्षत्रिय (निकट जो भी हो) निश्चित ही उसी से दीक्षा ले लेना चाहिए।

प्रश्न 109

हे अक्षयरुद्र! **क्या ज्ञान अनिवार्य नहीं** ?

लोग–बाग आजकल ज्ञान को हेय की दृष्टि से समझते हैं और उद्धव व गोपियों के संदर्भ में ज्ञान को तुच्छ वस्तु समझते हैं ?

उत्तर –

यह हमने अक्षय आनन्द पुस्तक में ब्रह्मचर्य नामक अध्याय (4/आ) में 16 वर्ष पहले ही समझाने का प्रयास किया था पुनः सुनें – भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है कि –" जितेन्द्रिय होकर परम श्रृद्धा सहित (अनेक वर्षों तक) साधनापरायण होने से ही मनुष्य ज्ञान को प्राप्त होता है अर्थात ब्रह्मचर्य, श्रृद्धा और साधना इन तीनों (त्रिवेणी) का जो फल है वही ज्ञान है। अब जिन मूर्ख लोगों ने गीता पढ़ी ही नहीं उनको कौन समझा सकता है। वे तो बस हर रात सौन्दर्य व संभोग के प्रहरिक क्षणभंगुर दैहिक सुख में मस्त हैं वे औपचारिक रूप से 5–10 माला जप लेते हैं और हर रात कपड़े निकालकर स्त्री के तन से स्रावित अपशिष्ट गंदगी के रस को ही अमृत समझकर अपने गले की नाल से निगल लेते हैं जो उनके पेट में पहुंच कर 90 दिन तक मन को विकारी बना देती है कुलटा के तन से संसर्ग करने पर 6 माह तक मनुष्य विकारी व तमोगुणी हो जाता है। तथा वैश्या के तन की गंदगी व उसके सांसो की वायु के स्पर्श करने से मनुष्य एक वर्ष तक विकारग्रस्त बना रहता है। और अपनी ही पत्नी से अतिभोग करने पर भी लोग ज्ञान को उपलब्ध नहीं हो पाते। गृहस्थ जीवन को धर्म शास्त्र में संयम करने पर (प्राजापत्य व्रत से या कुछ संतान के बाद अखंड ब्रह्मचर्य से) तपोवन कहा है पर ये लोग उसे भोगवन या रतिवन बना डालते हैं। कुछ कुछ बेचारी पत्नी संयम का कहे तो वे मूर्खानन्द मानते भी नहीं और इस विवाह को ही बलात्कार का लाईसेंस समझ बैठते हैं ऐसे योनीलम्पट लोग संयम का महत्व भटा की पूंछ के बराबर भी नहीं समझते। ज्ञान कोई साधारण वस्तु नहीं न ही कद्दू या लौकी। श्रीमद् भगवद् व ईश्वर गीता कहती है कि ज्ञान के समान पवित्र करने वाला कुछ भी नहीं मरने से पहले जो ज्ञान को प्राप्त नही होता उसका जीवन निरर्थक ही मानो।

अतः जिनको ज्ञान नहीं चाहिए वे खूब और महाखूब रतिरंग में डूबे रहें अक्षयरुद्र कुछ नहीं कहेगा।

पर परम ज्ञान रूपी अमृत (पराविज्ञान) योनीलम्पटों के भाग्य में नहीं होता। उनके भाग्य में बस स्त्री होती है जो संयम मांगती भी हो तो वे पति नहीं मानते ।

उनको संयम , ब्रह्मचर्य या जितेन्द्रिय शब्द हजम ही नहीं होता तो वे गीता की इस त्रिवेणी (जितेन्द्रिय, श्रृद्धा और पुरश्चरण रूपी महासाधना) को कहाँ समझ पायेंगे।

शम दम युक्त साधनापरायण को ज्ञान अपने आप सहज में ही प्राप्त होता है। और उस ज्ञान से वे स्थितप्रज्ञ (ब्राह्मी स्थिति) हो जाते हैं।

प्रश्न 110

श्रीराधे नाम की अद्वितीय महिमा बताएं संक्षिप्त में

उत्तर–परमात्मा श्रीकृष्ण की आत्मा राधा व बुद्धि दुर्गा कही गई हैं यह ब्रह्म वैवर्त पुराण में कहा है अतः सत्य ही माना जाए। श्री परमात्मा श्रीकृष्ण ने हमें प्रेरणा देने के लिये ही पराशक्ति स्वरूपा के संदर्भ में अग्र लिखित वाक्य कहे हैं अतः कल्याण के इच्छुक जनों को यह आत्मसात कर लेना चाहिये।

श्रीकृष्ण उवाच – हे राधे! जो व्यक्ति तुम्हारा एक क्षण भी ध्यान करके तुम्हारे नाम का पहला अक्षर **रा का उच्चारण** कर लेता है उस मनुष्य को मैं भयभीत सा होकर उत्तम पराभक्ति प्रदान करता हूँ और जो **धा का भी उच्चारण** कर लेता है तो मैं उसके पीछे पीछे डोलता फिरता हूँ, हे राधा !जो लोग 100वर्ष तक मेरी नित्य 16 उपचारों से पूजा करता है मैं उस भक्त से भी परम प्रसन्न नहीं होता पर जो प्रीति मुझे मात्र एक बार राधा शब्द के उच्चारण से होती है वह मेरी पूजा, मेरे विविध स्तोत्रों के जप से और मेरे ध्यान करने वालों के प्रति भी नहीं होती।
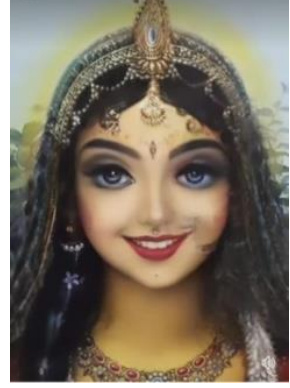
हे राधा! और भी रहस्य की बात सुनों कहता हूँ –मुझे तुम जितनी प्रिय हो उससे भी अधिक प्रिय मुझे तुम्हारा नाम लेने वाला है। राधा नाम का उच्चारण करने वाला मुझे जितना अधिक प्रिय है उतना ब्रह्मा, अनन्त, धर्म, गणेश, कार्तिकेय, कपिल, नारायण ऋषि आदि भी नहीं । मैं लक्ष्मी, सरस्वती, पार्वती, सावित्री तथा गंगा षष्ठी मनसा से भी प्रसन्न रहता हूँ परंतु जितनी प्रसन्नता मुझे उस भक्त से होती है उतनी इन देवियों से भी नहीं। यदि राधा का उच्चारण करने वाले की इच्छा किसी ब्रह्माण्ड में रुद्र, विष्णु और ब्रह्मा भी बनने की हो तो मैं उसे सहज ही बना देता हूँ, **हे राधा! तुम मेरे लिए क्या हो ये मैं स्वयं भी नहीं बता सकता।**

सभी देवी और देवताओं को मैने अलग अलग पात्रता के अनुसार अलग अलग स्थान पर नियुक्त किया है पर तुम तो साक्षात् मेरे वक्षः स्थल में ही सदा विराजमान रहती हो और जो भक्त मेरी प्रसन्नता के लिए मेरा भी सुमिरण न करके मात्र तुम्हारा नाम(राधा)का एक बार भी उच्चारण कर लेता है मैं उसको पूर्ण रूप से प्राप्त हो जाता हूँ पर जो तुम्हारा ध्यान और जप छोड़कर मेरे नाम का स्मरण करता है उसको 100जन्मों में मैं गोलोक देता हूँ पर तुम्हारा नाम जपने वाले को इसी जन्म में ही भवरोग से मुक्त करके गोलोक दे देता हूँ।

यद्यपि मैं ही तुम और सभी रूपों में हूँ पर मुझे केवल तुम्हारा नाम ही अधिक प्रिय है। ब्राह्मणों से अधिक मुझे शंकर प्यारे हैं पर शंकर से भी अधिक मैं उसको चाहता हूँ जो राधा राधा का सदा ही उच्चारण करता है। भगवान् नारायण कहते हैं– नारद! सुनो, यह वेदवर्णित

रहस्य तुम्हें बताता हूँ। यह सर्वोत्तम एवं परात्पर सार–रहस्य **जिस किसीके सम्मुख नहीं कहना चाहिये** ।

इस रहस्यको सुनकर दूसरोंसे कहना उचित नहीं है क्योंकि यह अत्यन्त गुह्य रहस्य है। मूलप्रकृतिस्वरूपिणी भगवती भुवनेश्वरीके सकाशसे जगत्की उत्पत्तिके समय दो शक्तियाँ प्रकट हुईं। श्रीराधा भगवान् श्रीकृष्णके प्राणोंकी अधिष्ठात्री देवी हैं और श्रीदुर्गा उनकी बुद्धिकी अधिष्ठात्री । ये ही **दोनों देवियाँ** सम्पूर्ण जगत्को नियन्त्रणमें रखती और प्रेरणा प्रदान करती हैं। विराट् आदि चराचरसहित सम्पूर्ण जगत् इन्हींके अधीन है। अतः इन भगवती श्रीराधा और दुर्गाको प्रसन्न करनेके लिये निरन्तर उनकी उपासना करनी चाहिये।

महामंत्ररहस्य–

श्रीराधावांछाचिन्तामणि मन्त्र– इस श्रेष्ठ मन्त्रका ब्रह्मा, विष्णु आदि देवताओंने सदा सेवन किया है। 'श्रीराधा' इस शब्दके अन्तमें चतुर्थी विभक्ति लगाकर उसके आगे वह्निजाया अर्थात् 'स्वाहा' शब्द जोड़ देना चाहिये।

श्रीराधावांछाचिन्तामणि मन्त्र – **(श्रीराधायै स्वाहा)**

यह भगवती श्रीराधाका षडक्षर मन्त्र धर्म और अर्थका प्रकाशक है। इसीके आदिमें मायाबीज (ह्रीं) का प्रयोग करे तो यह भगवती श्रीराधावांछाचिन्तामणि मन्त्र कहा जाता है।

मन्त्र इस प्रकार है–

ह्रीं श्रीराधायै स्वाहा

असंख्य मुख और जिह्वावाले भी इस मन्त्रके माहात्म्यका वर्णन नहीं कर सकते। सर्वप्रथम भगवान् श्रीकृष्णने भक्तिपूर्वक इस मन्त्रका जप किया था। इसे किसी भी संत से श्रवण कर जपने से परम मंगल होता है व सभी कार्य सिद्ध होने लगते है पुरश्चरण से साक्षात् श्रीराधे के दर्शन भी संभव है।

प्रश्न– उपद्रव तथा शत्रुबाधा उत्पन्न होनेपर क्या करें?

उत्तर–

उपद्रव तथा शत्रुबाधा उत्पन्न होनेपर जो (व्यक्ति) पवित्र होकर पलाशकी समिधाओं से दस हजार बार पंचाक्षरी से होम करता है; उसकी शान्ति होती है।

हमारी 18वीं पुस्तक देवी रहस्य में श्री काली महाविद्या की एक गुप्त विद्या हैं उसके पाठ से भी उपद्रव तथा शत्रुबाधा दूर हो जाते हैं।

प्रश्न 111

ऐसा उपाय बताएं जिससे सर्प भय और विष भय सदा के लिए नष्ट हो जाये ।

उत्तर–
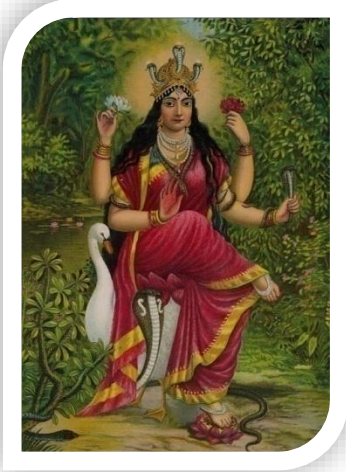
10,00000 बार जो मनुष्य देवी जरत्कारू के 12 नाम जप लेता है वह भी विष्णुजी और शंकर जी की तरह नाग और सर्प की शय्या पर सो भी सकता है और सर्प या नागों को आभूषण भी बनाकर अपनी देह पर सजावट की तरह सजा सकता है। वह नाग, अजगर आदि की सवारी भी कर सकता है। वह आलू टमाटर की तरह विष का भोजन भी कर सकता है। पर देवी जरत्कारू का ध्यान (स्तोत्र निधिवन भाग प्रथम पेज 84 पर भी वर्णित) करके उनकी पूजा करके ही जप करे । अखंड ब्रह्मचर्य पूर्वक। ये जरत्कारू आस्तिक मुनि की माता है और नागों की बहन। इनका एक नाम मनसादेवी भी है।

अथवा पेज 84 पर ही वर्णित कल्पतरू मंत्र को अपने गुरु या किसी संत से लेकर मात्र 500000 जप से भी सब कुछ प्राप्त हो जाता हैं। श्रीमद्देवीभागवत में से भी प्राप्त कर सकते हैं।

विष भय नाश के लिए देवी नर्मदा का स्मरण भी कर सकते हैं या दोनों का भी।

प्रश्न 112

काशी निवास का फल कैसे मिले घर बैठे ही।

उत्तर–

<u>श्री दण्डपाण्यष्टक स्तुति से– सुनें</u>

स्कन्दजी कहते हैं–महामते दण्डपाणे! यक्ष पूर्णभद्र धन्य हैं, माता कनककुण्डला भी धन्य हैं, जिनके उदर से आपका प्रादुर्भाव हुआ। यक्षपते! आपकी जय हो। पीले नेत्रों वाले धीरशिरोमणे! आपकी जय हो, पीले रंग की जटा धारण करने वाले देव! आपकी जय हो।

दण्डरूप महान आयुध धारण करने वाले वीर! तुम्हारी जय हो। अविमुक्त नामक महाक्षेत्र के सूत्रधार तीव्र तपस्वी दण्डनायक भयंकर मुख! विश्वनाथ प्रिय! तुम्हारी जय हो।

सौम्य स्वभाव वाले संतों के लिए तुम सौम्य मुख हो और दूसरों को भय पहुँचाने वाले पापियों के लिये भयंकर हो। काशी क्षेत्र में पापपूर्ण विचार रखने वाले मनुष्यों के लिये काल हो। भगवान महाकाल के परम प्रिय सबके प्राणदाता यक्षराज! तुम्हारी जय हो।

तुम्हीं काशीवास, काशीनिवासियों को आनन्द तथा मोक्ष प्रदान करने वाले हो, तुम्हारी जय हो।

तुम्हारा शरीर बड़े–बड़े रत्नों की जगमगाती हुई ज्योति से प्रकाशमान है। तुम अभक्तों को महान सम्भ्रम और उद्भ्रम देने वाले हो और भक्तों के सम्भ्रम तथा उद्भ्रम का निवारण करने वाले हो। प्राणियों के अन्तकालीन श्रृंगार करने में परम चतुर तथा ज्ञान की निधि प्रदान करने वाले दण्डपाणे! तुम्हारी जय हो।

गौरीचरणारविन्दों के भ्रमर तथा मोक्ष का साक्षात्कार कराने में कुशल शिवभक्त शिरोमणी यक्षराज! तुम्हारी जय हो।

जो बुद्धिमान अनन्य शिवभक्त, देवीभक्त, या हरि भक्त श्रद्धा पूर्वक दण्डपाण्यष्टक का पाठ करता है वह कभी विघ्नों से तिरस्कृत नहीं होता और काशी निवास का फल (बिना प्रयत्न के) पाता है तथा संपूर्ण कामनाओं को प्राप्त कर लेता है।...........

यक्षराजाष्टकम्

रत्नभद्राङ्गजोद्भूत। पूर्णभद्रसुतोत्तम ॥
निर्विघ्नं कुरु मे यक्ष काशीवासंशिवाप्तये ॥ 1 ॥

धन्योयक्षःपूर्णभद्रो धन्याकाञ्चनकुण्डला
ययोर्जठरपीठेऽभूर्दण्डपाणे। महामते 2 ॥

जययक्षपते। धीर जयपिङ्गल–लोचन
जयिपङ्ग जटाभार जयदण्ड महायुध । ॥ 3 ॥

अविमुक्तमहाक्षेत्र सूत्रधारोग्रतापस ॥
दण्डनायक भीमास्य जयविश्वेश्वरप्रिय ॥ 4 ॥

सौम्यानां सौम्यवदन भीषणानां भयानक
क्षेत्रपापिधियां काल महाकालमहाप्रिय ! 5

जय प्राणद! यक्षेन्द्र काशीवासाच्च्मोक्षद।
महारत्न स्फुरद्रश्मिचयचर्चित विग्रह ! ॥ 6 ॥

महासम्भ्रान्तिजनक महोद्भ्रांति प्रदायक!
अभक्तानां च भक्तानां सम्भ्रान्त्युद्भ्रान्तिनाशकः ॥ 7 ॥

प्रान्त्यनेपश्यचतुर जयज्ञान निधिप्रद
जय गौरीप्रियतम मोक्षेक्षण विचक्षण ॥ 8 ॥

यक्षराजाष्टकं पुण्यमिदं नित्यं त्रिकालतः ।
जपानि मैत्रावरूणौ वाराणस्याप्तिकारणम्............

प्रश्न 113 –तीन अमोघ उपाय बतायें ?

उत्तर–

गया में 45 दिन रहने मात्र से 7 पीढ़ियों का उद्धार हो जाता है। पर वहाँ रहकर पाप न करें । (दान या सेवा आदि भले ही न हो)

– अग्नि पुराण से

प्रयाग में तीन दिन धर्मनिष्ठ होकर निवास से 10000000 गायों को पात्र पुरुष को दान करने के फल मिलता है।

पद्म पुराण की एक जलाशय वाली कथा पढ़ने से भी एक करोड़ गौ दान का फल मिल जाता है।

आजीवन महाबलेश्वर शिव कथा सुनने से 21 पीढ़ियों को मोक्ष मिलता है।

– स्कन्द पुराण

प्रश्न 114

मनुष्य नारियों के पीछे ही क्यों भागता है

उत्तर–

यह उत्तर नारियाँ न पढ़े कृपया।

पद्मपुराण और मार्कण्डेय पुराण की कुछ कटु सच्चाई है जो पुरुष के संदर्भ में है । तथा पुरुष की अतिभोग बुद्धि का परिचय देती है।

उत्तर –

समय की बर्बादी के अनेक कारण है।

जिसमें एक कारण है – बीती बातों को याद करना ।

समय बहुत कीमती है जो मर गया या जो चला गया अथवा जिसने धोखा दे दिया .... उसका बार बार स्मरण करके दुखी होना अनुचित है।

यह पोस्ट मात्र गृहस्थ जनों के लिए है।

नोट – वह यदि सच्चा व विशुद्ध प्रेमी या प्रेमिका रही हो तो उसके कल्याण के लिए कुछ जप तप फिर भी ठीक है पर जप तप न करके बार,बार उसी की याद में रोना या दुखी होना अनुचित है।

उत्तम होगा कि –

अपना ध्यान इष्ट पर फोकस करो। किसी शरीर का मोह पुनर्जन्म का कारक बन सकता है। और इष्ट पर ध्यान केंद्रित करोगे तो परलोक (इष्ट लोक) में भी आपका वही जोड़ा आपको मिल जायेगा (ऐसा पद्मपुराण में एक जगह पढ़ने को मिला है) पर वहाँ मिल भी जाये तो सोचो आपका भजन नहीं छूटेगा क्या ?

लोगों का यह मोह (स्त्रियों का पुरुष से मोह और पुरुषों का नारियों से मोह) भयंकर घातक समझो।

पर कुछ लोग हमने ऐसे भी देखे हैं कि जब तक उनकी प्रेम पिपासा शान्त न हो तब तक या जब तक वो पत्नी न बन जाए तब तक उनका चित्त शान्त नहीं होता। ऐसे अति मोहित नर नारियों के लिए हम इतना ही कहेंगे कि वे मिलन के लिए सकाम अनुष्ठान करें अथवा वैराग्य के लिए अनुष्ठान। इनको यह दो कामों में से एक काम अवश्य कर लेना चाहिए।

अन्यथा यह खाली पीली और लाल नीली यादें भवरोग का शिकार बना देंगी। राग नाश करने के लिए हमने शिव चरित मानस में एक हनुमत् साधना बताई भी है जो आप वहाँ से देख सकते हो।

परम उचित तो यह है कि आप उस प्रेमी या प्रेमिका के पूर्व जन्मों को जान लें । बस सारा प्रेम तिरोहित हो जायेगा। वह हर जन्म में एक ही शरीर धारण नहीं करता कभी नर बनता है कभी नारी कभी पशु तो कभी कीट। कभी कुत्ता बिल्ली तो कभी लोमड़ी या शेर शेरनी। कभी हाथी तो कभी गिलहरी यह सब उसके पाप पुण्य का फल समझो। वह एक जीव मात्र है उस पर सौन्दर्य सागर नारी का ही थप्पा (मोहर) नहीं लगा। जो तुम उसे पाने के लिए मरे जा रहे हो और 30–35 की आयु में मिल भी गई तो 30 साल बाद चिता में भी

आपको ही जलाना पड़ेगा और उसके माँस पिण्डो में गंभीर रोग हो गया तो आपका प्रेम 50 तिरोहित हो जायेगा यह भी हमने लोगों को देखा है जब तक उसका सुन्दर शरीर आपको भोग सुख देता रहता है तभी तक वह देह आपको प्रेम और अमृत दाता नजर आता है पर जैसे ही उस शरीर में दुर्गंध बड़ती है या उसके स्तनों में कैंसर या अन्य योनी रोग तो वही जिस्म आपको दुखदायी नजर आने लगता है ।

और वह यदि आपके अथाह पुण्य से निरोगी रहे तो भी वह पाप पुण्य का पुतला मात्र समझने के योग्य है वह न तो दुर्गा जैसी वीतरागी है न ही राधा जैसी तद्‌भावित,न ही लक्ष्मी जैसी विशुद्ध ब्रह्मज्ञानी जिसके पीछे आप हाथ धोके पड़े हो और रात में बिस्तर पर उसके वियोग में टसक टसक कर रो रहे हो। और यदि आप यह कहो कि – वह मेरा प्यार है .... तो उस लव को देख लो उसे 4 वर्ष तक अकेला छोड़ दो उसके चित्त का हाल (आप या अन्य) पता चल जायेगा। या उसके पास करोड़पति को भेज दो 2 करोड़ का लोभ दिखाकर....तो उसके प्रेम की धज्जियाँ उड़ जायेंगी और वह उसी के साथ हमबिस्तर हो जायेगी। 100 में से 99 प्रेमिकाओं को महत्वाकांक्षी समझो।

अतः उस एक भटकते हुये जीव का बार बार स्मरण घोर आश्चर्य है।

अतः उस जीवात्मा के उद्धार के लिए सोचना ही यथार्थ सोचना है ऐसा किया जाये तो सर्वोत्तम होगा।

सब कुछ एक ही समान आत्माएं हैं यह चोला ,आवरण , बाह्य रूप मात्र उसके कर्मों का फल मात्र है।

प्रश्न 115 नारी देवी स्वरूपा है उससे ही पुरुष पूर्ण होता है क्या यह सच है ?

उत्तर– आत्मा अपने आपमें परिपूर्णतम है। यह अपने अक्षय आनन्द के लिए किसी पर निर्भर नहीं करता। वह पराविज्ञान पाकर स्वयं ही शिव हो जाता है। पर नारी पाकर शिव नहीं होता। अपरोक्ष ज्ञाननिष्ठता पर ही वह शिव होता है। आत्मा कभी नर देह धारण करके पुरुष कहलाता है कभी नारी देह के कारण नारी। यह चक्र पाप पुण्य के कारण चलता है।पुरंजन पहले पुरुष था पर अति कामुकता से या अति मोह से वह अगले जन्म में नारि बन गया तो क्या उसे दुर्गा रूप मान सकते हैं ?नारद स्वयं एक बार नारि योनी पा चुके हैं और एक नर से वे विवाहित भी , तो क्या वह नारद दुर्गा का रूप हो गए। यह सब नर नारी कर्म फल का रिजल्ट है और कुछ नहीं। मरणासन्न काल में चित्त की स्थिति का कारण है। और शरीर से शक्ति या शिव को आंका जाए तो हर पुरुष सदाशिव का रूप और हर नारी शिवा का रूप है। पर 1 लाख में से 99,999 लोग मात्र चमड़ी के उपभोग के लिए नारी को चाहते हैं यही 100 प्रतिशत सत्य है। वंश , भावना , प्रेम , कसमें वादे यह सब वासना का खेल है। यदि नारी रूप से पोस्ट के अनुसार उसके अंगो को हटा दिया जाए तो उससे (अंगहीन नारी , जिनके कारण एक

आत्मा युवा नारी कहलाती है) कौन प्रेम करेगा। यह पुरुष वर्ग वासना के कारण ही नारी को चाहता है वंश के कारण चाहने वाले जितेन्द्रिय पुरुष विरले हैं।

●●●●●●●●●●●●●●

और एक अति महत्वपूर्ण बात जो पद्म पुराण पाताल खंड का एक मोहनाशक सत्य मात्र है – आप पुरुष हो तो नारी से प्रेम होना एक वासना मात्र है और कुछ भी नहीं यह उस पुराण ने सिद्ध भी की है ।

● आप सुन्दर रूप देखकर ही उसे चाहने लगते हो कुरुप या एसिड से जले चेहरे को देखकर आप तत्काल प्ह्दवतम कर देते हो।

● एक बात ऐसी कड़वी है पर पद्म पुराण व "मार्कण्डेय पुराण के मदालसा" के अनुसार तथा श्रीमद्देवीभागवत महापुराण में तुलसी वचन के रूप में जानी जाती है वह यह कि – हे पुरुष ! तू स्त्री से ही प्रेम भरी बाते क्यों करता है इसका एक कारण है यदि उस स्त्री के पास "कुच" न हो ; पुरुष के समान उसकी छाती हो तथा उस स्त्री के पास उसका गुप्तांग नारी जैसा न हो अर्थात पुरुष की भाँति हो तो भी क्या दूसरे पुरुष उसे चाहेगें ;;;; नहीं बिल्कुल भी नहीं.. ..... पुरुष केवल मधुर बातों से ही प्रेम नहीं करता अपितु तन को भी भोगना चाहता है ।
(मैं मदालसा तुझसे यह सच कहती हूँ बेटा कि जिस कुच मर्दन (वक्षःस्थल और स्तन) के लिए पुरुष मरा जा रहा है वह माँस का लोथड़ा घने मांस की ग्रंथि मात्र है और कुछ भी नहीं तथा वह उस तन में न हो तो पुरुष भला क्यों ??????? उसे चाहेगा ? पुरुष क्यों ? उसी के समान छाती वाले तन के पास जायेगा और क्यों किसी पुरुष से ही प्रेम नहीं करता इसका कारण उसके तन का भोग मात्र है और कुछ भी नहीं।
अतः हे पुत्र! तू तन की माया में मत उलझ ।

यह विपरीत तन का ही आकर्षण है इसके अतिरिक्त और कुछ भी नहीं। और तू मात्र हरि का भजन कर। पद्म पुराण पाताल खंड कहता है कि पुरुष का प्रेम यथार्थ में योनी प्रेम है न कि अन्य । यदि वह स्त्री वक्षःस्थल तथा योनीहीन हो तो भला कौन पुरुष उस तन को चाहेगा।

यह तो बहुत कम लिखा हमने पद्म पुराण में वेदव्यास जी ने और भी बहुत भयंकर लिखा है।

कि हे नर तू हरि का दास बन न कि योनी व वक्षःस्थल का।

और बात वंश की ही है तो वंश के लिए नारी तन अनिवार्य है यह ठीक है पर मोह, वासना और आसक्ति बंधन ही है।

●

और नारी भी विपरीत सेक्स के चक्कर में अपना जीवन नष्ट न करें । देवी मनसा, तुलसी व पार्वती की तरह भक्ति करें।

प्रश्न 116

हे अक्षयरुद्र! अतिशीघ्र महा कल्याण का उपाय चाहिए जो अद्वितीय हो कृपया बतायें।

उत्तर– देखिए भगवान वेदव्यास जी ने सब कुछ लिखा है बहुत कुछ लिखा है कल्याण के लिए उन उपायों में से एक उपाय हम बता रहे हैं।

1000 बार अश्वमेध यज्ञ करने से , 100 बार वाजपेय यज्ञ तथा 100000 बार समूची धरती की परिक्रमा करने से जो फल प्राप्त होता है वह फल प्रयाग में कुंभ के समय मात्र एक बार स्नान से मिल जाता है वह मनुष्य परम से भी परम सौभाग्यशाली है जो मनुष्य योनी पाकर इस प्रयाग में कुंभ स्नान कर चुका अथवा करेगा। वैशाख में एक करोड़ बार नर्मदा में स्नान और कार्तिक के माह में 1000 बार गंगा स्नान और माघ में 100 बार गंगा या नर्मदा में विधिवत स्नान से भी अधिक फल मात्र प्रयागक्षेत्र के कुंभ पर्व का एक बार स्नान ही देने में समर्थ है।

●●●●●●

प्रश्न 117

क्या एक समय देवी के दो भिन्न स्वरुपों की अलग अलग साधनाएं की जा सकती हैं जैसे एक साधना सुबह और दूसरी शाम को?

(–ममता त्रेहान)

उत्तर– अपना जो इष्ट है उसकी खुशी के लिए अथवा निष्काम भाव से या जनकल्याण के लिए आप दो रूप तो क्या 20 रूपों की सेवा पूजा कर सकती हो।

अथवा एक रूप से एक मनोकामना और दूसरे रूप से दूसरी कामना के लिए भी दोनो की साधना कर सकते हैं।

पर उचित तो यह है कि एक कालखण्ड में (लगातार 21 दिन या लगातार 90 दिन) एक ही रूप को सरेंडर हो जाओ इससे वह रूप आपके चारों तरफ महान रक्षात्मक आवरण बना देता है। और उन 21 या 90 दिनों में आप एक के ही मंत्र या एक ही स्तोत्र की संख्या बड़ा कर शीघ्र सिद्धि पा सकते हो।

इसी कारण मीरा ने एक समय कृष्ण को ही भजा। ध्रुव ने एक समय एक को ही भजा। प्रह्लाद ने हरि के अलावा शिव जी की भी तपस्या की थी पर कुछ वर्ष हरि की तथा कुछ वर्ष शिव जी की।

सुबह और शाम अलग अलग रूपों के 11 –11 पाठ करने की अपेक्षाकृत किसी एक के लिए 21 पाठ अधिक श्रेष्ठ हैं। सभी में समानता है मात्र चोलों (ब्जेपकम संलमत) में भेद है यथार्थ पराविज्ञान से किसी में भी 0.001 प्रतिशत भी भेद नहीं।

तीर्थ फल हेतु क्या करें ?

उत्तर–

संसार के सभी तीर्थों में स्नान करने से भी वह फल नहीं मिलता जो फल किसी ब्रह्मनिष्ठ (परमगुरु)के चरणोदक से मिल जाता है। पत्नि के लिए यह फल पति चरणोदक का है। और सभी मूर्तियों (रूप) के दर्शन का फल उन ब्रह्मनिष्ठ गुरु के दर्शन का है।

●●●●●●

प्रश्न 118

स्वामी जी नमः शिवाय, स्वामी जी शिव शिवा की कृपा से समय पर खाना, रहने को मकान, पहनने को कपड़े मिल रहे हैं। ईश्वर की कृपा भी है। ईश्वर का नाम जप भी कर रहा हूँ। श्री विद्या साधक हूँ। ऐसे में ईश्वर से क्या मांगू ये नही जानता। गुरु महाराज भी कहते हैं कि तुम चाहते क्या हो। ये ही नही जानता की मुझे क्या मांगना चाहिए।

परम गति/ मुक्ति की बात कभी कभी मन में आती है लेकिन दुविधा ये है कि जब सब कुछ शिव ही हैं मै भी शिव हूँ तो परम गति/मुक्ति क्या है ?

– कृष्ण कुमार त्यागी

उत्तर–

शिवोऽहम् में स्थित होकर स्वच्छंद रमण करो।

पर जब भी गुरुदेव के दर्शन हों तो अक्षयरुद्र की एक ही आज्ञा है कि उस समय अद्वैत का भाव त्याग कर उन पराविज्ञान दाता गुरु की तन मन और धन से सेवा करो। इससे आपका कैवल्या भाव दृढ़ होगा। और जब भी गुरु का देह दूर जाये (वह उनके स्थान पर पहुंच जाये तब)

आप तत्काल शुद्ध अहं भाव (सोऽहम् महावाक्य का आत्मसात) से ब्रह्म से तद्भावित अर्थात एकाकार हो जायें।

●●●●●●●

प्रश्न 119

क्या केवल गुरु मंत्र जप से ही शिष्य की सभी इच्छाएं पूरी हो जाएंगी।
उधम एन सिंह

उत्तर– नहीं।
गुरुमंत्र के भी कुछ अंग होते हैं उन अंगों की प्राप्ति से ही वह मंत्र सिद्ध होता है।
पटल और पद्यति का ज्ञान अनिवार्य है।

●●●●●●●

प्रश्न 120

द्वैत और अद्वैत पर काम विकार का नाश कैसे हो ?

कामभाव या काम विकार लक्ष्य का स्मरण करने से तत्काल दूर हो जाता है।

और अद्वैतवादी तो कामविकार से कभी भी ग्रस्त नहीं होता। वह यदि गृहस्थ हो तो स्वरूप बोध से तो संसर्गित पुरुष भी तत्काल समाधिस्थ हो जाता है।

●●●●●●●

प्रश्न 121 : दक्षिणा का क्या महत्व है और दक्षिणा हरण का पाप फल क्या है ?

— आजाद यादव

अध्याय 41 पेज नम्बर 203
हमारी 18 वीं पुस्तक देवी रहस्य महाग्रंथ भाग प्रथम में इस प्रश्न का उत्तर देखें।

●●●●●●●

प्रश्न 122

भगवन,,, छोटीसी जिज्ञासा हैं, आप ब्लड बैंक तो जानते ही होंगे, (रक्त संग्रहालय) मैंने देखा हैं जहाँ रक्त मरीज को चढ़ाया जाता हैं वह रक्त ब्राह्मण के शरीर में क्षत्रिय का, क्षत्रिय में वैश्य या शूद्र का रक्त चढ़ जाता हैं, ऐसी स्थिति में क्या यह भी किसी स्तर की वर्णसंकरता हो जाती हैं ??

सूक्ष्म दृष्टी सें विचार करने पर हम इसे क्या समझे ?? और हमारे शास्त्रों का भी इसपर क्या मत हैं ??

(भीमराज राज पुरोहित)

उत्तर– वर्ण संकर की परिभाषा शास्त्रों में ही दी गई है उसका संबंध मात्र वीर्य से है न कि रक्त के ट्रांसफर से।

पर हाँ खून जिसका भी है उसके गुणों का संचरण अवश्य होता है।

●●●●●●●●●●

प्रश्न 123– मेरा प्रश्न यह है कि में हल्का तुतलाता हूं। केवल " र " अक्षर पर तुतलाता हूं जिस कारण मंत्र आदि का अशुद्ध उच्चारण होता है तो क्या इसका पाप लगेगा क्योंकि मुझे तो शुद्ध ही सुनाई देता है बाकी लोग को अशुद्ध तो आप कृपा करके इस तोतलाने की समस्या का कोई उपाय बताइए। मैं आपकी शरण में आया हूं शरणागत पर कृपा करें ।प्रणाम

– पारस शर्मा महोबा यू.पी.

उत्तर–
ऐं बीज का उच्चारण व जप

●●●●●●●●●●●●●●

प्रश्न– 124

क्या पाप या पुण्य ईश्वर कराते है ?

–किशोर भागवत सतारा

उत्तर–

ईश्वर मात्र कर्मफल देते हैं। न कि जबरदस्ती कर्म कराते हैं।

पाप और पुण्य स्वतंत्र हैं मनुष्य जैसा करता है वैसा ही भविष्य (धनवान, बुद्धिमान पदवान , पुत्रवान , भूस्वामी या भिकारी , विधवा , विदुर , दुर्घटनाग्रस्त , सर्प व बिजली आदि से मृत्यु) बनता है। जो इस जन्म में दान पूजा आदि करेगा वह अगले जन्म में सुखी होगा ही । सिखाने वाले को ही अधिक पाप और अधिक पुण्य मिलता है।

पर बच्चा 18से बड़ा हो जाये तो वह उचित अनुचित सब कुछ समझने लगता है अतः वह धर्म अधर्म को समझकर पाप कर्म छोड़ दे अन्यथा वह भी दण्ड पायेगा

●●●●●●●●●●●

प्रश्न– 125

मैं नाम जप करती हूँ यह तो सतत् चलता है। पर जब व्रत रहती हूँ तो पति मेरा व्रत खंडित कर देते हैं क्या मुझे पाप लगेगा क्या पति को पाप लगेगा इससे ?

उत्तर–

व्रत की रात में पति पत्नि शुद्ध रहें। तभी व्रत सफल होगा। इसी कारण पत्नी का कर्तव्य है कि पहले पति से आज्ञा ले ताकि शुचिता पूर्वक व्रत–उपवास हो अन्यथा पाप लगता है पति को।

यदि पति आज्ञा न दे तो व्रत–उपवास न करें पत्नि। मात्र नाम जप करें।

प्रश्न– 126

चण्डी कवच व शिव कवच में से कौन सा पढे? –राधेश्याम सुथार

कोटि कोटि नमन चरणों में !!!!!!!!!

शिवस्तोत्ररत्नाकर में शिव कवच है उसको करना चाहिये या नहीं कोई और शिवस्तोत्ररतनाकर में किस स्तोत्र का पाठ सभी तरह के लाभ के लिये उत्तम होगा ?कौनसा करना चाहिए । पर मैं देवी का भी भजन करता हूँ।

इसके साथ दुर्गा सप्तशती के पाठ दुर्गा सप्तश्लोकी और दुर्गा अष्टोतर और दुर्गा कवच और अथार्गलास्तोत्रम् करता हूँ पहले से ही तो कोई नुकसान तो नहीं हैं जी

और दुर्गा सप्तशती का पाठ करता हूँ तो फिर कुलदेवी का चालीसा करना चाहिए या कोई जरूरी नहीं है कृपा मार्गदर्शन करने की कृपा करे जी और कोई मार्गदर्शन लायक बात हो तो जरूर बताएं जी।

उत्तर–

कोई सा भी शिव स्तोत्र सिद्ध होने पर आपको रुद्र स्वरूप बना देता है पर यम नियम से करते रहो और कवच तो हर इष्ट की सेवा में अनिवार्य है। पर देवी के साधक या शाक्त भक्त अपनी सुरक्षा के लिए चण्डी कवच या अन्य देवी कवच ही जपें और शिव जी के कवच की चाह भी हो तो उस कवच का पाठ इस ब्रह्माण्ड के सभी भक्तों, संतों, ज्ञानियों, पितरों, पूर्वजों, गौ, माता पिता, गुरु, पत्नी, संतान, राष्ट्र, तीर्थ, महानदियों, बंधु बांधवों, शुभचिंतकों, आदि के निमित्त जपें पर शिव कवच के लिए त्रिपुण्ड्र रुद्राक्ष धारण अनिवार्य है तथा पहले बटुक पूजन भी और यदि आप मात्र शिव जी के अनन्य भक्त हो तो अपनी रक्षा के लिए चण्डीपति (शिवापति) के कवच का पाठ करें और यदि चण्डी कवच नहीं छोड़ सकते उस कवच से देवताओं व संतादि की रक्षा हेतु कहें न कि स्वयं की रक्षा। वैसे एक ही कवच का विधान है।

नमः शिवाय